1

2

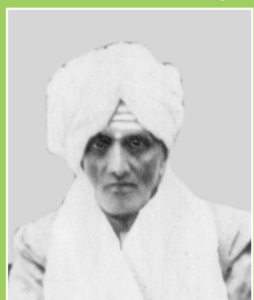

3

4

5

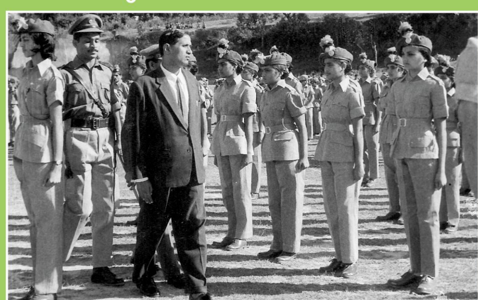

6

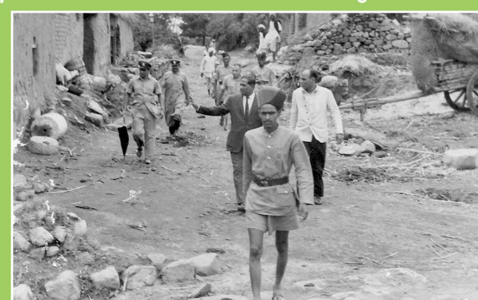

7

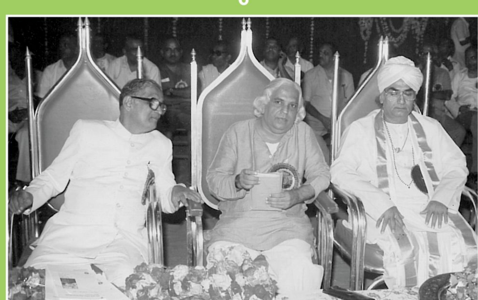

8

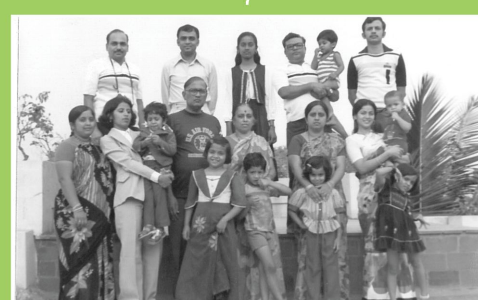

9

डॉ. सिद्धय्या पुराणिक 'काव्यानंद' का

समग्र बाल साहित्य

हिन्दी अनुवाद : डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'

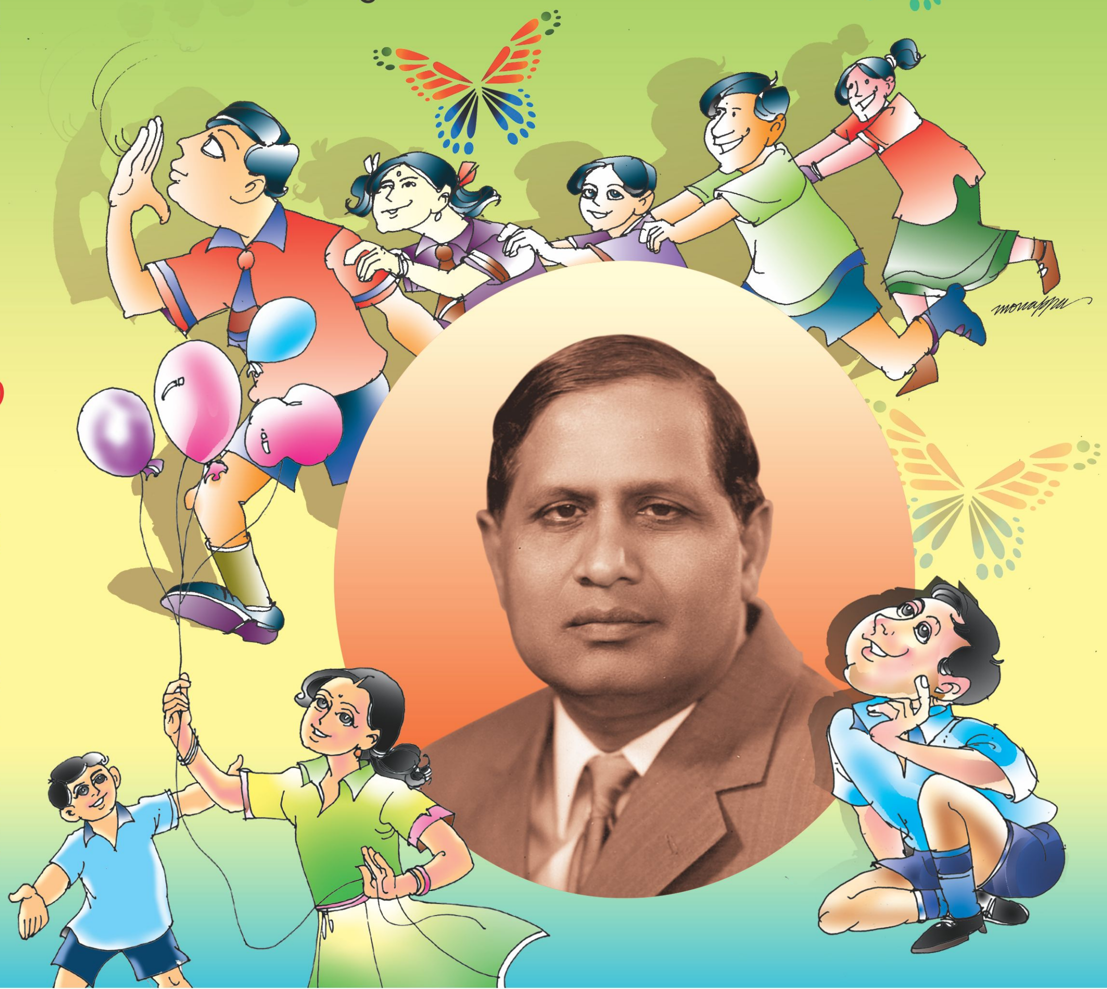

डॉ. सिद्धय्या पुराणिक 'काव्यानंद' का समग्र बाल साहित्य हिन्दी अनुवाद : डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'

डॉ. सिद्धय्या पुराणिक ‘काव्यानंद’ का

समग्र बाल साहित्य

हिन्दी अनुवाद

डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर ‘प्रेमी’

श्रीगिरि प्रकाशन
‘श्रीगिरि’, 4/5, ‘ए’, आली आस्कर रोड़
बेंगलूरू–560 052

'Samagra Bala Sahitya' by Dr. Siddayya Puranik 'Kavyanand' translated into Hindi by Dr. T.G. Prabhashankar 'Premi', 391, VI Main, III Block, III Stage, Basaveshwaranagar, Bangalore-560 079. Mob : 9880781278
Pub : Srigiri Prakashan, 'Srigiri', 4/5, 'A' , Ali Askar Road, Bangalore-560052. Ph : 080-22264361

समग्र बाल साहित्य	:	डॉ. सिद्धय्या पुराणिक 'काव्यानंद' (बाल काव्य, नाटक, यात्रा भाग)
अनुवादक	:	डॉ. टी. जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी'
प्रकाशक	:	श्रीगिरि प्रकाशन, 'श्रीगिरि', 4/5, 'ए' आली आस्कर रोड़, बेंगलूरु-560 052 Ph : 080-22264361

© प्रसन्न कुमार पुराणिक

प्रथम संस्करण	:	2016
पृष्ठ	:	**VI + 192 = 198**
कागज	:	80 GSM Maplitho क्रौन '¼' दो कलर
मूल्य	:	**Rs. 200=00**
शब्द संयोजक	:	योगसदन प्रेस, शंकरपुरम, बेंगलूरु-4
आवरण सज्जा और चित्र	:	श्री एच. एस. मोनप्पा
पृष्ठों का विन्यास	:	श्री कृष्णमूर्ति. इ. एम.
मुद्रक	:	स्नेह प्रिंटर्स, बेंगलूर

अनुक्रमणिका

1.	प्रकाशक की बात	iv
2.	घी रोटी ले लो	1–22
3.	छम छमाता झुनझुना	25–40
4.	घूमो घूमो झूला	43–58
5.	रंग रंग की होली	61–84
6.	झंडा एक ही भारत का	87–112
7.	न्याय निर्णय	115–144
8.	बच्चों का लोक विहार	147–172
9.	सर्वजन कवि सर्वज्ञ	175–184
10.	परिशिष्ट	185–190
11.	डॉ. सिद्धय्या पुराणिक की कृतियाँ	191
12.	डॉ. सिद्धय्या पुराणिक – जीवन परिचय	192

प्रकाशक की बात

मेरे पूज्य पिता डॉ. सिद्धय्या पुराणिक 'काव्यानंद' कर्नाटक के प्रमुख लेखकों में गिने जाते हैं। उन्होंने अपने 55 साल की साहित्य-सेवा की अवधि में काव्य, वचन-रचना, गद्य, नाटक, बाल साहित्य और उपन्यास विधा में कृतियाँ रची हैं। आप भारतीय प्रशासन सेवा में कर्नाटक राज्य में उच्च पदों में रहकर जनता की सेवा कर उनके प्रीत्यादर के पात्र बने हैं। दि. 05.9.1994 को आपका देहावसान हुआ।

हमने अपने ही 'श्रीगिरि प्रकाशन' से पुराणिक जी की कृतियों का पुनः प्रकाशन करना शुरू किया है। इत:पूर्व हमने 'वचनोद्यान' (वचन संकलन) का दूसरा संस्करण 2000 में, तीसरा संस्करण 2011 में और 'वचन नंदन' (वचन संकलन) का दूसरा संस्करण 2000 में निकाला है।

डॉ. सिद्धय्या पुराणिक जी का नब्बेवाँ वर्षगाँठ 2008 में मनाया गया। उस संदर्भ में हमने निर्णय लिया कि पुराणिक जी की सभी कृतियों का समग्र रूप में प्रकाशन करना चाहिए। तदनुसार 2008 में 'समग्र काव्य', 2009 में 'समग्र वचन' और 2010 में समग्र नाटक प्रकाशित हुए।

बाल साहित्य पुराणिक जी का अत्यंत प्रिय साहित्य है। हमने उनके समग्र बाल साहित्य के प्रकाशन का कार्य 2011 में डॉ. एस. विद्याशंकर के मार्गदर्शन में शुरू किया। मेरी बहन श्रीमती भारती मुत्युंजयप्पा ने 'तुप्प रोट्टी गे गे गे' (घी रोटी ले लो) पुस्तक देकर मदद की। वैसे ही मेरी दीदी श्रीमती विजया नंदीश्वर ने भी प्रोत्साहन दिया।

हमने चाहा कि पुराणिक जी का 'समग्र बाल साहित्य' हिन्दी में अनुवादित हो। अत: हमने ख्यात हिन्दी और कन्नड़ के लेखक तथा अनुवादक डॉ. टी.जी. प्रभाशंकर 'प्रेमी' जी से प्रार्थना की। उन्होंने हमारी प्रार्थना स्वीकार कर अनुवाद कार्य संपन्न किया। इस अनुवाद कार्य का परिशीलन करनेवाले डॉ. दिविक रमेशजी का भी हम आभार मानते हैं। इस 'बाल-साहित्य' कृति के लिए प्रसिद्ध कलाकार श्री एच. मोनप्पा जी ने सुंदर चित्र और आवरण सज्जा दिये हैं। हम श्री मोनप्पा जी का हृदयपूर्वक आभार प्रकट करते हैं। इसके डी.टी.पी. कार्य करनेवाले योगसदन प्रेस के श्री एल. पी. बालचंद्र, भीतरी पन्नों के विन्यास करनेवाले श्री एम. कृष्णमूर्ति तथा मुद्रक स्नेह प्रिंटर्स के प्रति भी आभारी हैं।

इस कार्य में मेरे साथ निरंतर सहयोग दे रही है मेरी पत्नी श्रीमती लता पुराणिक। हमारे इस प्रामाणिक प्रयत्न से बच्चों को एक अच्छी कृति उपलब्ध हो रही है इससे बड़ा आनंद और क्या हो सकता है!

प्रसन्न कुमार पुराणिक

मेरा घोड़ा

दादा की लाठी मेरा घोड़ा
कदम कदम पर नाचे घोड़ा।

बिना पैर के चलता घोड़ा
बिना खाये भी जीता घोड़ा
बिना नाल खुर, बिना झूल ओढे
लालन पालन न चाहे घोड़ा
दादा की लाठी मेरा घोड़ा।।

चंद्रप्पा का हिरन ही घोड़ा
महादेव का नंदी ही घोड़ा
रामचन्द्र का हनुम ही घोड़ा
पेटू गणप का मूषक घोड़ा
दादा की लाठी मेरा घोड़ा।।

रुके तो रूकता अच्छा घोड़ा
दौड़े तो दौड़ता मेरा घोड़ा
न माँगता न सताता दयालू घोड़ा
दादा की लाठी मेरा घोड़ा।।

अरब देश में भी न मिलता घोड़ा
काठेवाड में भी न दिखता घोड़ा
राजकुँवरों को भी न मिलता घोड़ा
मुझे मिला बस मेरा घोड़ा
दादा की लाठी मेरा घोड़ा।।

श्रृंखला (सींकचा)

चिड़िया, चिड़िया तुम
कैसी चिड़िया ?
लिए चोंच में ऐसी चिड़िया
कैसी चोंच ?
टेढ़ी चोंच
कैसी टेढ़ी ?
जैसा केला वैसी टेढ़ी
कैसा केला ?
रस रसीला ऐसा केला
कैसा रस ?
वीररस
कैसा वीर ?
भारत वीर।

एक बालक की चाह

गगारिन ने रक्षा की
मर्द के सम्मान की
वेलेंटीना ने
औरत के सम्मान की
मैं भी करूँगा रक्षा
बालकों के सम्मान की।
दिलाओ मुझे भी प्रशिक्षण
मैं बनूँगा घर घर की बात।

जाने क्या हो, कैसे हो
ऐसा मत कहो
शक न हो मन में
मीन-मेष मत देखो
तुरंत दिलाओ प्रशिक्षण
मैं भी बनूँगा घर घर की बात।

मैं भी चढ़ूँगा रॉकेट पर
पृथ्वी का चक्कर काटूँगा
बच्चों का झंड़ा उठाऊँगा
बिना रोके दिलाओ प्रशिक्षण
मैं बनूँगा घर घर की बात।

दूर उड़ते
तुम्हारे साथ करुँगा बात
तुम्हारी कसम
भेजूँगा चाँद की तस्वीर ही
अभी दिलाओ मुझे प्रशिक्षण
मैं भी बनूँगा घर घर की बात।

दूसरे बालक भी
जा सकते हैं
प्रथम मानव
बन सकते हैं
बाद में जायेंगे तो
पूछनेवाले कौन ?
अभी दिलाओ मुझे प्रशिक्षण
मैं भी बनूँगा घर घर की बात।

अ आ इ ई गीत

दादी जब कहने लगती है कहानी
खेल की याद भी नहीं रह जाती
इंद्रजाल ही उतर आता है
ईश्वर ही नर रूप धरकर
खानेवाला जंगम बन जायेगा
खाने बच्चों को बुलायेगा
जाने कहाँ से, कौन, क्यों
जाने क्या क्या प्राणी पक्षियाँ
ऐरावत कामधेनु को
ले आयेंगे खुशी खुशी से
एकाएक पँखवाले घोड़े
भाग आते हैं आसमान से
ओंठ काटते दैत्य आते
डर जाते हैं हम सब बच्चे
आः आः दादी बस कहानी
खतम हुई अ आ इ ई गीत।

सिद्दिद्दि बाबा

भालू को नचाते आओ
सिद्दिद्दि बाबा बच्चों का बाबा
बाबा बाबा बालों का बाबा
भालू को नचाते आओ
गाँव के बच्चों का हर्ष बढ़ाकर
फूलाकर, उड़ाकर आओ
आओ बाबा बच्चों के प्राण
भालू के गले में कौंड़ी कंठाहार
पैरों की पायल झनझनाते आओ
दो ही पैरों पर खड़ाकर चलाते
हमें हँसाने बाबा
बाबा बाबा बच्चों के प्राण
नाक के ऊपर पैर रखकर
सलाम कराते बाबा
तन के बाल झाड़ते
हमें हँसाने बाबा
आओ बाबा बच्चों के प्राण
डम डम डमरू बजाते बाबा
गाँव का गाँव जगाकर आओ
साल में एकबार भालू को नचाते
हमें बहलाने आओ
आओ बाबा बच्चों के प्राण
भालू को नचाते आओ बाबा।

बंदरपन

बंदरपन छोड़ो कह पिता चेताते हैं
शाला में जो सिखाते वह अलग ही है
'मानव का परदादा बन्दर' कहते हैं मास्टर
उनका चेहरा ही इसका सबूत हो सकता है।।
'उस सागर को ही लाँघे हनुम का जन्मस्थान?'
गाते ही पाठ-प्रवचन शुरू करते हैं।
हनुम के इस देश में बंदरपन नहीं चाहिए क्या?
चाहिए कह बंदरपन दिखा रहे हैं।।
सांझ होते ही तेल बाती लेकर
माँ नहीं जाती क्या मारुति मंदिर?
खेत से लौटते बैलों को खड़ाकर
पिताजी नवाते नहीं क्या हनुम के चरण?
ऐसे हनुम का गुण सीखे तो क्यों खींचते
पिता अकेले ही भौंवे तानकर?
किसी का गुस्सा किसी पर उतारते
बंदरपन को कोसा करते क्यों माँ?

बालक की विनती

चंद्रलोक में अब घर बनानेवाले हैं
एक जो चंद्र है उसे भी कुरूप कर देते क्या ?
'चंदमामा' कह किसको पुकारे माँ ?
बालकों के आनंद को दाग देंगे क्या ?
यह लोक इन लोगों को काफ़ी नहीं है क्या ?
क्यों चाँद के पीछे पड़े हैं लोग माँ ?
यहाँ जो खरे नहीं वे लोग वहाँ खरे होंगे क्या ?
इतना भी ये लोग समझते नहीं क्या माँ ?
चाँद ही धुँधला बन छा जाता है अंधेरा
चाँदनी का प्रकाश सपना है माँ!
पूर्णिमा का आनंद, चाँदनी में भोजन ही
हमें न रह जाता है। है न माँ ?
इसे न समझेंगे क्या ये हमारे मूढ़ जन ?
तुम भी तो इन्हें समझाओ माँ!
इनके पागलपन का चांद शिकार न हो
ऐसा कोई उपाय कर बचाओ माँ ?

हाथ में तलवार दो

हाथ में तलवार दो माँ
हाथ में बंदूक दो माँ!
दिखलाऊँगा अपना हाथ
उस चौ-एन-लै को
हाथ में तलवार दो माँ!

क्या अभिमन्यु अब नहीं ?
क्या वह भारत अब नहीं ?
क्या लव-कुश अब नहीं ?
मैं हूँ न माँ, देखो!
दो आदेश सीमा युद्ध से
मैं विजयी होकर लौटूँ माँ
हाथ में तलवार दो माँ!

हिमगिरी पर हूणों की सेना
नहीं सह सकता मैं!
चीनियों का बिन दम्भ तोड़े
नहीं सो सकता मैं!
उस पीले कुत्ते को माँ
मैं पाठ सिखाऊँगा
हाथ में तलवार दो माँ!

मेक मोहन सीमा है मेरी
हिमगिरि है मेरा।
वह गीदड़ चीनी बोलो
इस गिरि को हड़पेगा क्या ?
अब निकला मैं बिजली बनके
पीकिंग के मुँह पर
हाथ में तलवार दो माँ !
दूध पिलाये हाथ को
काटे पीले साँप को
चीरूँगा दफनाऊँगा
कौन रोकेगा मुझको माँ ?
गरुड़ का बच्चा क्या डरेगा
चूहा खाते साँप से ?
हाथ में तलवार दो माँ!

दूध पिलाया था तूने माँ
तेरा ऋण चुकाऊँगा माँ।
सीमा पर जीत का झंड़ा
जाकर फहराऊँगा माँ!
बिन मिटाये द्वेष यह बेटा
नहीं लौट के आएगा माँ।
बिजली कडक रही है तन में
हाथ में तलवार दो माँ!

आओ खेले

आओ खेले आओ
पढ़ाई समाप्त कर आओ।।
खो खो गेंद लट्टू गुल्ली खेलें, आओ
हवा में उड़ाने को, डोरी पतंग लाओ
हार हो या जीत आनंद लो, गिरकर चोट खाओ
खेलो खेल के लिए, स्पर्धा के लिए नहीं आओ।।
आओ खेलें, आओ।।
छाया-प्रकाश का खेल खेलें, आओ
जीवन छाया-प्रकाश का खेल आओ खेलें
पीयेंगे चाँदनी आओ, धूप का फल खाएँ
खेल कूद में पढ़ाई में एक-सा प्रेम दिखाएँ
आओ खेलें, आओ।।
लंगड़ाने का खेल खेलना है तो तुरंत रेखा सींचो
खो खो खेलें? बैठो खेल चुके? ठीक है।
गोली खेलना है क्या? छोटा-सा गड्ढा बनाओ
ऐसे भी हाथ से न जाय ऐसा खेल खेलें खुशी से
आओ खेलें, आओ।।
गौफन जैसा छोड़ें, बाण-सा दौड़ो
पेड़ की डाली पर लटकते वानर खेल खेलो।
बाँस के धनुष खींचते झूठा युद्ध लड़ो
भारत ध्रुव के बंधु हम कह खुशी से गाओ
आओ खेलें, आओ।।
उछलते कूदते आओ, घुसते, लाँघते आओ।
गुल्ली खेलते आओ, गेंद उछालते आओ
हँसते बजाते ताली, उछलते कूदते आओ
आगामी खेलों में अपनी शाला को विजय की खुशी दिलाओ।
आओ खेलें, आओ
पढ़ाई समाप्त कर आओ।

चंदामामा चंदामामा

चंदमामा चंदामामा।
फल भरा थाल।

चंदामामा चंदामामा मोहक
हिरन पर सवार हो आयेगा
पूरन पूरी लायेगा
आटा फेंकते आयेगा
दूध बहाते आयेगा
कहीं भी जाय आयेगा
हमारे साथ ही आयेगा
चंदामामा चंदामामा
फल भरा थाल।

चंदा मक्खन की गोली
आऊँगा तेरे पास
आऊँगा एक ही क्षण में
बुला लो अपने पास
लाऊँगा घी-पूरन पूरी।
चंदामामा-चंदामामा
फल भरा थाल।

प्रथम चंदा बढ़े
चांदी-सा चमके
लोगों का ताप हरे
मन का पाप मिटाये
ऊपर चढ़े उतरे
पुनः न डूबे।
चंदामामा चंदामामा
फल भरा थाल।

घी रोटी ले लो

पेड़ की डाली पर बैठे दोस्तो
घी रोटी ले लो।।

पेड़ से पेड़ उछलनेवाले
उछलते दाँत निपोरनेवाले
निपोरते तन खुजलानेवाले
लाल मुख के कामण्णा
घी रोटी ले लो।।

पेड़ से फल काटनेवाले
नारियल का पानी पीनेवाले
अंट संट बकनेवाले
घी रोटी ले लो।।

उछल कूदते आनेवाले
हाथ का खाना छीननेवाले
दिखाकर उसे छेड़नेवाले
बचे को मुँह पर फेंकनेवाले
घी-रोटी ले लो।।

दोसा

दोसा दोसा
खाने की इच्छा।।

तीन आने का सादा दोसा
चार आने का मसाल दोसा
पाँचाने का मक्खन दोसा
दोसा दोसा - खाने की इच्छा।।

सुबह नाश्ते में चावल-दोसा
दोपहर को सूजी-दोसा
शाम को मूँग दाल का दोसा
दोसा दोसा - खाने की इच्छा।।

नारियल चटनी का अच्छा दोसा
मटर भाजी का गरम दोसा
चटनी भाजी का स्वादिष्ट दोसा
दोसा दोसा - खाने की इच्छा।।

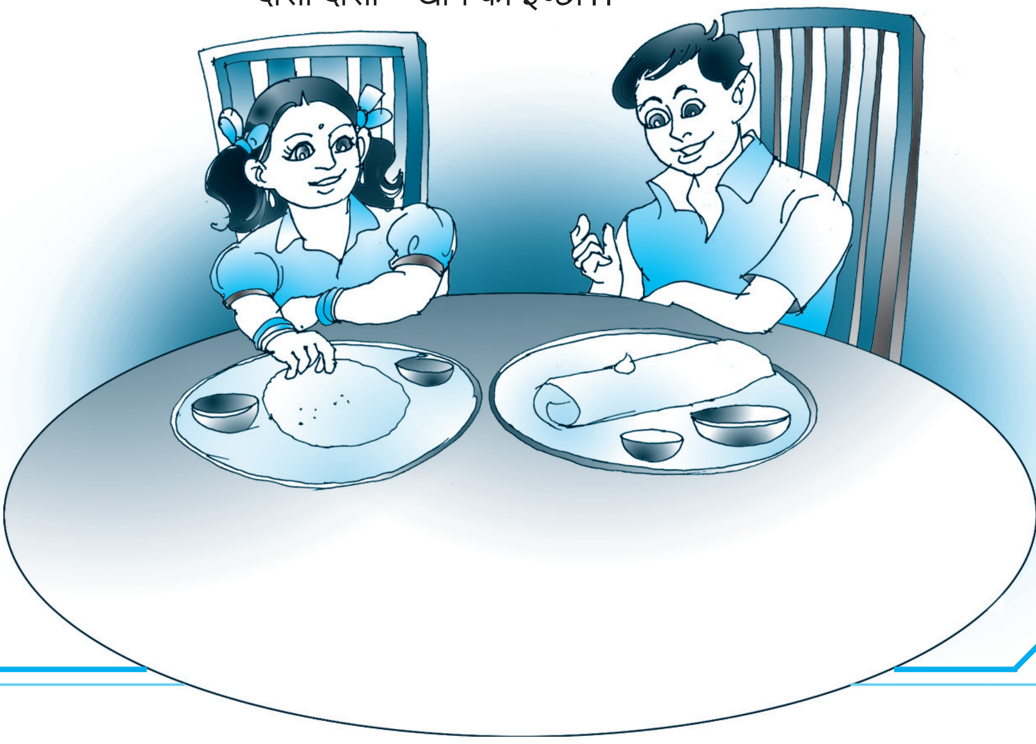

रेल-गीत

धुआँ छोड़ती
देती आवाज़
पहाड़ चढ़ती
घाटी उतरती
नदी करते पार
नगर नगर पहुँचाते
लक्ष्य की ओर मुखकर
जाने कितनों को ढ़ोकर
आयी हो इस क्षण।

ये गरीब
वे अमीर
ये भिखमंगे
वे मास्टर
ये व्यापारी
वे नाचनेवाले
सभी को बिठाकर
सब को ढ़ोकर
आयी हो इस क्षण।
बारातवाले
अनाथ भोली
हँसते चेहरे
रोनी सूरत
औरत
पुरुष
सब को बिठाकर
सब को ढ़ोकर
आयी हो इस क्षण।

इनको छोड़कर ये कौन?

इनको छोड़कर, इनको छोड़कर ये कौन ?
ऊपर गली की मातंगी क्या ?
नीचे गली का बसलिंगी क्या ?
बीच गली की शिवगंगी क्या ?
इनको छोड़कर, इनको छोड़कर ये कौन ?
किनारे घर का मूगप्पा क्या ?
ऊपर घर का नागप्पा क्या ?
गच्ची घर का भोगप्पा क्या
जगती घर का जोगप्पा क्या ?
इनको छोड़कर, इनको छोड़कर ये कौन ?
डींग मारने वाला मानप्पा क्या ?
बातूनी मौनप्पा क्या ?
बुद्धि वैरी ग्यानप्पा क्या ?
गुस्सेला सीनप्पा क्या ?
इनको छोड़कर, इनको छोड़कर ये कौन ?
जाओ बसलिंगी, आओ बड़े साब
जाओ मदरंगी, आओ हेजीब
जाओ हनुमा, आओ अलीबाबा
बोलो ये कौन, न बोलो तो मूर्ख
इनको छोड़कर, इनको छोड़कर ये कौन ?

प्रश्न

सूर्य उदय पर जगानेवाला बाप
सूर्य डूबने पर सोने को क्यों कहते ?
नखरा करने पर कान निचोड़नेवाले
भलापन दिखाने पर शब्बाश क्यों न कहते ?

न झगड़ने का उपदेश देकर
खुद माँ के साथ झगड़ते क्यों ?
खेल खेलते समय 'जाओ, पढ़ो' कहकर
खुद दोस्तों के साथ गप उड़ाते क्यों ?

सब्जीवाले का गीत

नंजनगूड़ का रसदार केला
लाया हूँ कूर्ग से संतरा
बीदर जिला अमरूद
बेंगलूर का सेब
खरीदिये, आनंद देते हैं
मिश्री का स्वाद भुलाते हैं।
लीजिए मधुगिरि का अनार
बेळवल मैदान की मीठी नींबू
बेलगाँव का मीठा सफोटा
देवनहळ्ळी का चक्कोता
जिह्वा की इच्छा करते पूरन
देह का बल करते वर्धन
गंजाम अंजीर तुमकूर कटहल
धारवाड का अपूस
मलेनाड का अनानस
लीजिए भूल मिठाई
स्वाद लीजिए फलों का
कन्नड़ भू के विविध फलों का।

डुगडुगी

देव देव का
देव का बेटा
देवलोक का
डुगडुगी हूँ मैं
मुझे रोटी दे दो बहन
तुम्हें अच्छा वर
मिलेगा।
देवलोक का
डुगडुगी हूँ मैं।
बताऊँगा तुम्हारी पूर्व जन्म की कथा
बताऊँगा तुम्हारी आज की कथा
बताऊँगा तुम्हारी भविष्य की कथा
मुझे रोटी दे तो बहन
तुम्हें पैदा होगा अच्छा बेटा।
जो बीत गया उसपर चिंता न करो
जो आज है उसपर दु:खी न हो
आगे क्या हो उसकी चिंता न हो
मुझे कपड़ा दे दो बहन
तुम्हें अच्छी बहू मिलेगी।
जो मिलता है उसे न नकारो
जो नहीं मिलता उसे न चाहो
दान धर्म से संतुष्ट न हो
मुझे एक थाली दो बहन
तुम्हें आच्छा पोता मिलेगा।

क्षणिकाएँ

पिता कहते रीति-मार्ग
मास्टर सिखाते नीति
मुझे सिर्फ
चाहिए माँ –
की ममतामयी प्रीति।

* * *

पानी बरसा खूब
भीग गया पूरा
घर आने पर
साँत्वना के बदले
पड़ी पिता की मार

* * *

दीदी को चाहिए चेक
भैया को चाहिए पैसे
बहन को चाहिए
मुझे भी चाहिए
फूलों का संग

* * *

जगा, पिता की पुकार पर
खुली नहीं थी नींद
जब उठकर
बढ़ा आगे
ऊँघते हुए गिर पड़ा।

* * *

पानी में मछली
पकड़ने जाकर मैं
ले आया क्या ?
बताऊँ–
छींक ठंड़, जुकाम।

* * *

'पढ़ो' कहे तो परेशान
'लिखो' कहे तो उदास
खेलो, कूदो
नाचो गाओ
कहे तो दूध केसर।

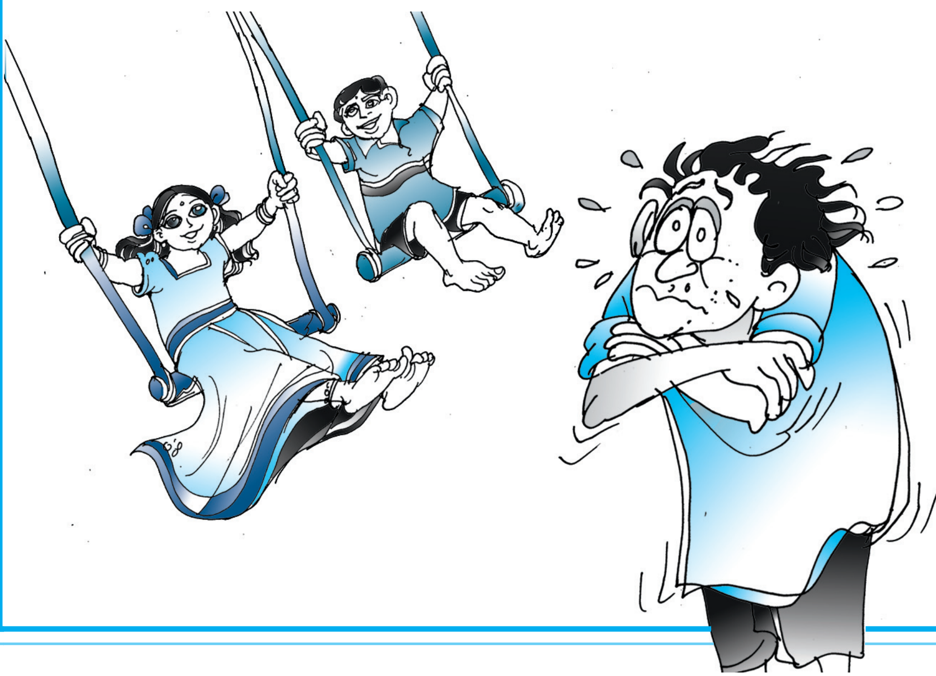

गधे का दंभ ......

एक गाँव में था एक
नमक बेचनेवाला
गधा पालकर उसपर
था लादता नमक।
रास्ते में खाई पार कर
दूसरे गाँव जाकर
नमक बेच लौटता था
लेकर दाल रागी।

एक दिन सर तक
आने पर अधिक पानी
भीग गया लादा नमक
हो गया हल्का बोझ।

इसे जानकर गधे ने फिर
दिखाया नखरा
सर तक आते पानी में
डूबकर उठता था।

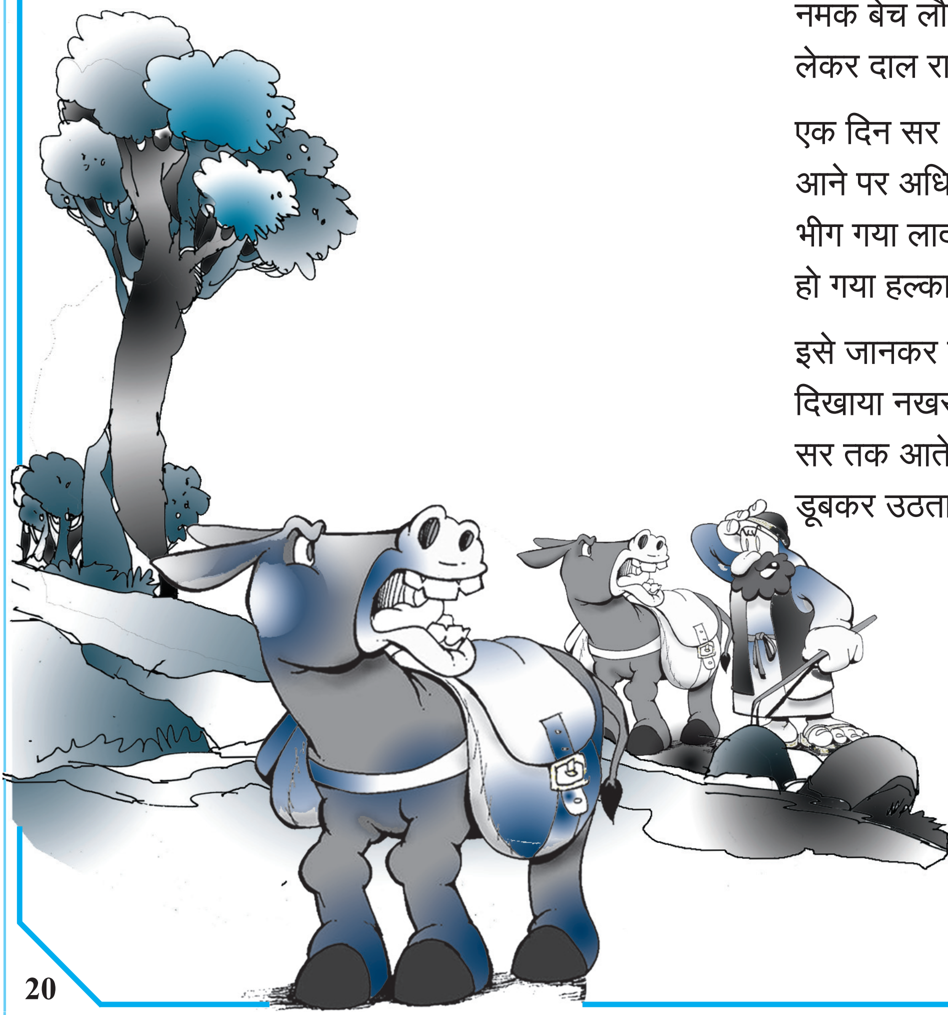

नमक पिघलकर बोझ
हल्का हो जाता था
इससे नमकवाले को घाटा
पड़ता था रोज़ रोज़।

यह देखकर नमकवाले ने
एक बार नमक के बदले
बोझ लादा चूने का
भट्ठी में जलाकर

पहले जैसा आज भी
डूबा गधा पानी में
चूना उबलने लगा तो
फिर पानी में डूबा

चूना जो था पीठ पर
लगा उबलने
गधा लगा उछलने कूदने
क्या कहें क्या बीती उसपर!

नमकवाले को दया आयी
लाठी से बोझ को
गिरा दिया, गधे के साथ
गाँव चला गया।

उस दिन से गधे ने
अपना दंभ छोड़ा
समझ आयी थी उसको
दंभ से विपत्ति।

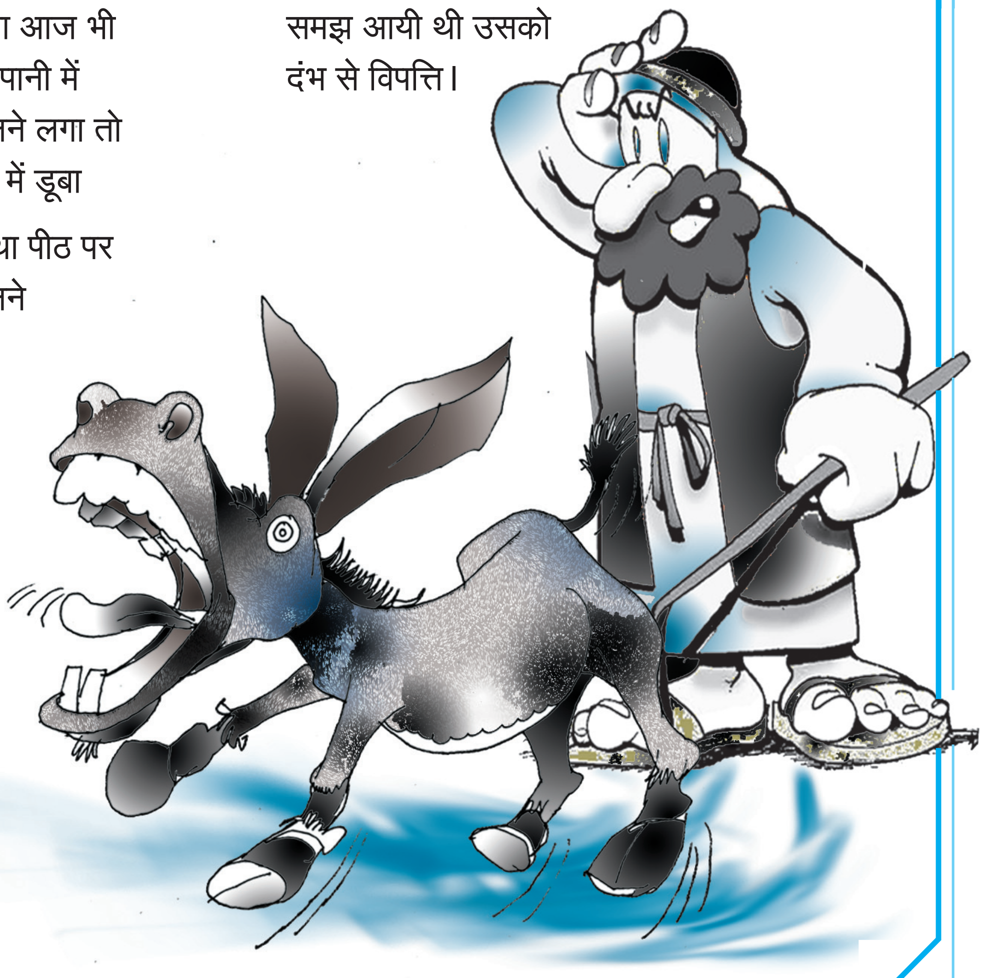

शाला का बगीचा

हमारी शाला के बगीचे में
लगाया है मैंने एक पौधा
सींचता हूँ मैं ही हर दिन
क्या बताऊँ उससे
दिन-ब-दिन बढ़ता जाता
हर दिन निकले अंकुर
बस दो हफ्ते में
मेरे क़द तक बढ़ेगा ।
कहते गुरूजी, बच्चे उगाते पौधे हैं
शाला ही बना बगीचा है।
शाला के चारों ओर बगीचा
बच्चे बढ़ाये खुशी से
न करते अपने में झगड़े।
बढ़े बाहर वन शाला का
न सूखे एक भी पत्ता पौधे का
फूल खिले तो ईश पर
चढ़ाकर माँगते विद्या बुद्धि
फल निकले तो खाकर सभी
खुशी खुशी से नाचे सभी।

छम छमाता झुनझुना

छम छम छम छम
छम छमाता झुनझुना
आओ दूँगा मुन्ना
आजा आगे तो
मान भी जा
मिल जायेगी रोटी
छम छम छम छम
छम छमाता झुनझुना
आओ दूँगा मुन्ना

ताड़ पात से
है गुँथा
मूँगे का कण
लगा हुआ
बनी है मूठी
रंग रंगीली
बढ़िया सुंदर झुनझुना
छम छम छम छम
छम छमाता झुनझुना
आओ दूँगा मुन्ना

तुम भी हँसो हँसाओ जग को

तुम भी हँसो हँसाओ जग को
हँसो कि चेहरा खिल उठे
मुँह फुलवाने की यह बेटे
लत तुम्हारी दूर, हटे।

अगर हँसो तो संग तुम्हारे
अजी हँसेंगे सब दुलारे
और अगर रोए तो समझो
कोई न रोए संग तुम्हारे।

इस दुनिया में देखो दोस्त
रहते सभी हँसते हँसते
फूल पंछी चाँद सितारे
दोस्त सभी जो रहते हँसते ।

हँसते गाते नाच नाचते
मोद-अमोद से जीना
सीखो दोस्त सीखें सब ही
कष्ट नष्ट को सहना।

हँसता फूल न मुरझाये
खिले रहे मेरे वीर
हँसमुख ही बढ़ाए जग में
आदर सुन लो मेरे वीर।

रंग–बिरंगा पंख

रंग–बिरंगा पंख
मिला मिट्टी में
भैया को - देखो माँ।
छोटों-मोटों का
नयन मनोहर
रंग रंगे हैं कितने - देखो माँ।
चमकते दमकते
तार-तार पंखों के
रंग झलकते देखो माँ।
सुंदर चंवर
प्यारा पंख यह
सुंदरता का फव्वारा है, देखो माँ।
बीच में बिंदु
अंत में चोटी
सब ओर झालर - देखो माँ।
सिर पर मोर मुकुट
लेकर हाथ में बाँसुरी
मैं भी कान्ह बनूँगा माँ।
गोपी से न माँगूँ
किसी को न सताऊँ
मैं भी नंदकिशोर बनूँगा माँ।
न बनता माखन चोर
न मारता मामा को
ऐसा मुरली मोहन बनूँगा माँ।
रंग-बिरंगा पंख
मिला मिट्टी में
भैया को - देखो माँ।

दोस्तों को खाने बुलाऊँगा माँ

दोस्तों को खाने बुलाऊँगा माँ
विविध खाद्य बनाओ माँ
एक रुचि नहीं दूसरे की रहती
जो भी माँगे परोसो माँ।
उत्तर कर्नाटक के दोस्तों को
पूरन पूरी गुझिया
तिल लेपित बाजरे की रोटी
तेल पका बैंगन प्यारा।
मैं भी भाजी ककडी टमाटर
मूली की भाजी
नारियल की चटनी मलाईदार दही
सफेद ज्वार की खिचड़ी।
दक्षिण कर्नाटक के दोस्तों को
फेणी चिरोटी खीर
इड़ली सांबार मसाल दोसा
राटीगोला अन्न रसम।
पुळियोगर दालभात गरम
केसरीभात क्षीरान्न

नारियल मिश्रित कचूमर
खट्टी चटनी दालभात।
जिसको जो प्यारा लगता
उसे उसीको परसो माँ।
सभी खा पीकर धोकर हाथ
नाचेंगे तुम्हारे घेरे में
खूब करेंगे तारीफ
गा गाकर तुम्हारी
मेरी मैया सबकी मैया
बन खिलायेगी कल
छोटे छोटे दोस्त बने हैं हम
भाई-भाई बनेंगे कल।

मज़ा करो मज़ा

आज है छुट्टी शाला को
लिखना पढ़ना बंद
मज़ा करेंगे मज़ा।

चलो मैदान
खेलेंगे
गिल्ली डंड़ा
खेलेंगे
झगड़ा करते
फिर मिल जाते
बच्चों के गीत
गायेंगे
आज है छुट्टी शाला को
लिखना पढ़ना बंद
मज़ा करेंगे मज़ा।

ताल कुआँ जायेंगे
तैरते हंस बन जायेंगे
नाक पकड़कर डूबेंगे
उठकर घर को जायेंगे
आज है छुट्टी शाला को
लिखना पढ़ना बंद
मज़ा करेंगे मज़ा।

बाग में खाने जायेंगे
खाकर खुशी मनायेंगे
डाली पकड़कर झूलेंगे
बाल हनुमान बन जायेंगे
आज है छुट्टी शाला को
लिखना पढ़ना बंद
मज़ा करेंगे मज़ा।

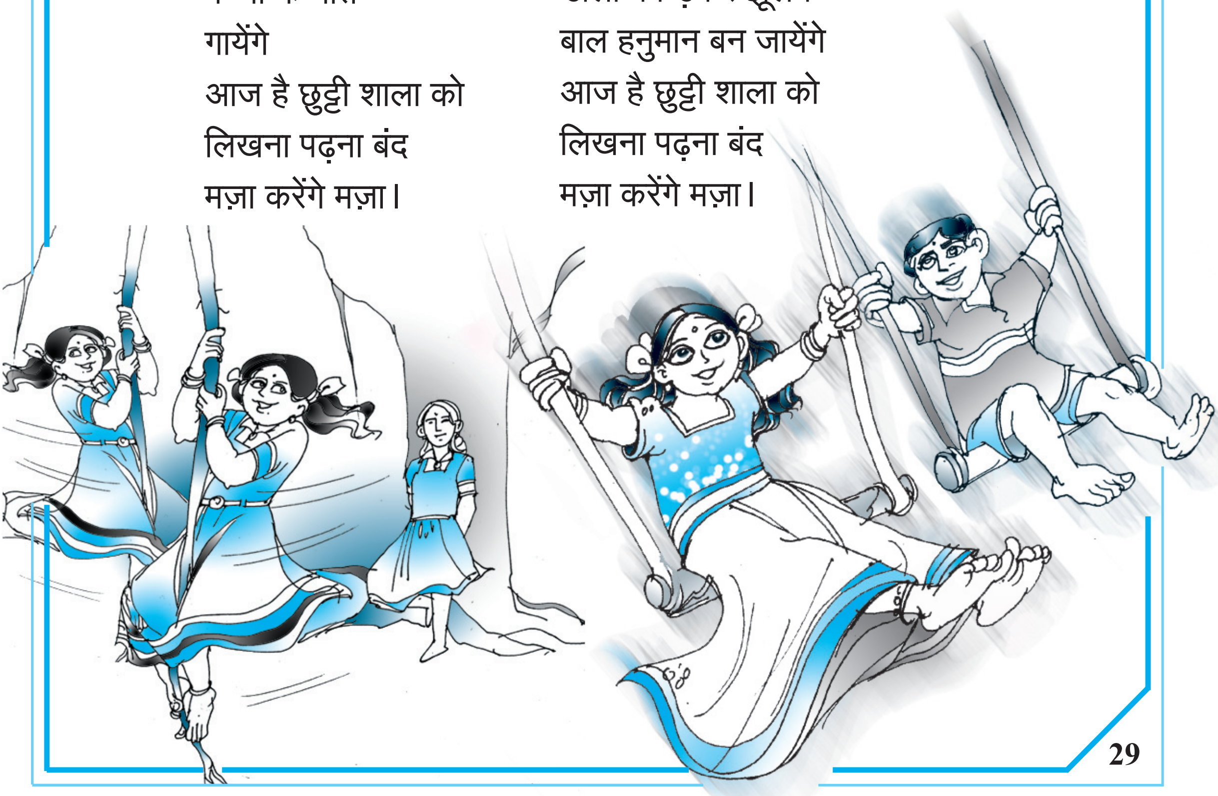

आओ बादल दौड़े आओ

आओ बादल दौड़े आओ
आओ गाँव हमारे आओ

आओ बादल आओ
हमारे संग आओ खेलो
हमारे संग आओ गाओ
आओ बादल ....

तुम बनो रथ हमारा
नव खण्डों को दिखलाओ
हमारे गाँव आ जाओ
आओ बादल ....

तुम बनो हमारी नौका
ले जाओ सागर के तट
फिर ले आओ गाँव।
आओ बादल ....

तुम बन जाओ रॉकेट
ग्रह से ग्रह ले जाओ
फिर ले आओ गाँव हमारे
आओ बादल ....

बरसो पानी बरसो

बरसो पानी बरसो
तुरतहि आओ बरसो
गरजते आओ बरसो।

सूख गये हैं खेत हमारे
सूख गये हैं धानों के खेत
तुरतहि आओ बरसो।

सूख गये हैं बाग-बगीचे
सूख गये हैं जंगल सारे
तुरतहि आओ बरसो।

न पीने पानी न खाने घास
दुबले बने हैं पशु सारे।
बिना फूल के फल के बिना
सूख गये हैं पौधे पेड़।

स्नान करने, कपड़े धोने
गाँव में नहीं है पानी
मंदिर की मूर्ति को नहाये कैसे
हनुमदेव रहे बिना नहाये।

आओ पानी बरसो
प्रकृति छटा का मूल
बच्चों की न सुनोगी बात
हानि तुम्हारी ही मत भूलो।

किसी की बात न सुनो सही
परंतु बच्चों की तो बात सुनो
साथ लेंगे खेलने तुम्हें
सुनो हमारी बात सुनो।

मेमना चाहिए मेमना

मेमना चाहिए मेमना ?
दिखे तो छोड़ता नहीं मेमना

होशियार मेमना प्यारा मेमना
छोटा मेमना निडर मेमना
मेमना चाहिए मेमना ?

कूलू घाटी का मेमना
बन्नर बंदूर का मेमना
मरीनो कारिड़ेल से बढ़कर वंश में
पैदा हुआ यह नाज़ हमारा मेमना
काली मेमना चाहिए काली मेमना ?

घास न खाता मेमना यह
ब्या ब्या न कहता मेमना यह
बस बुलाओ तो पीठ पर चढ़ता
नटखट है यह मेमना
मेमना चाहिए मेमना ?

खेलता गाता मेमना
सताता माँगता मेमना
न भेड़ से डरता
न गड़रिये से डरता
मेमना चाहिए मेमना
होशियार मेमना प्यारा मेमना

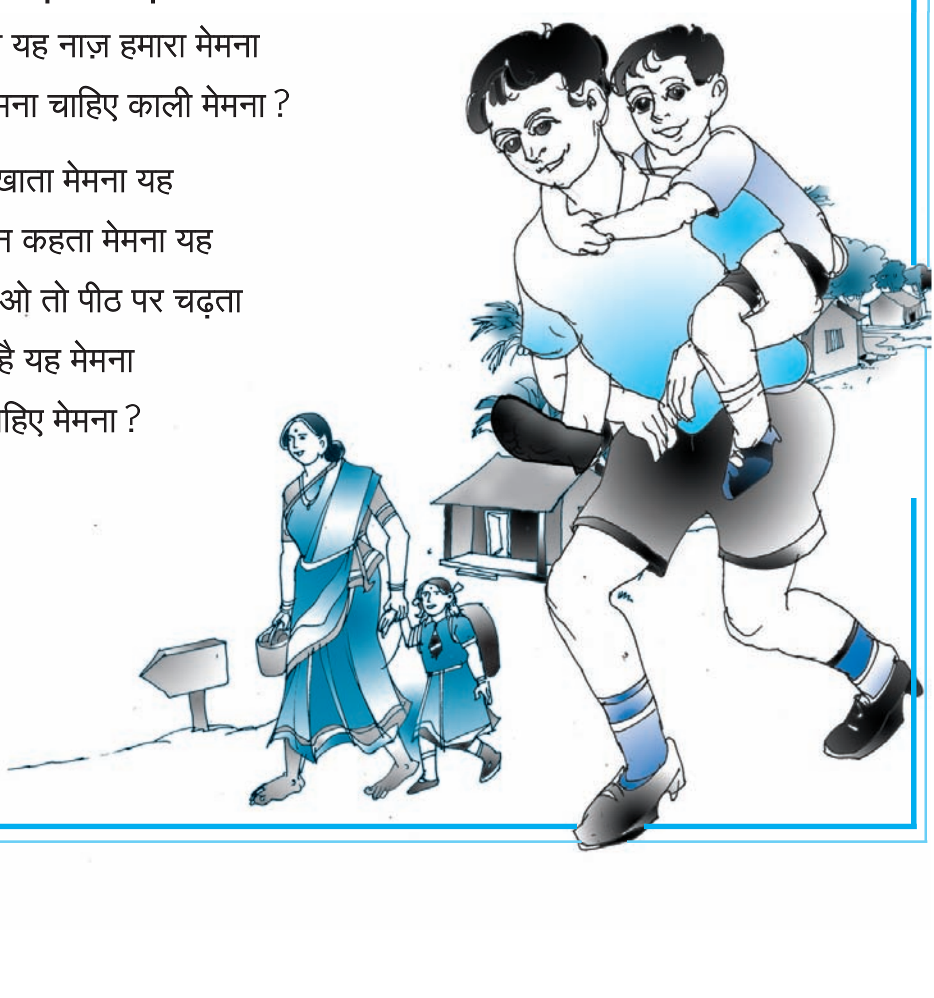

मिठाई ले लो बच्चो

मिठाई ले लो बच्चो
मिठाई ले लो
फिर न मिलेंगे ले लो अभी
दाम भी ज्यादा है नहीं।
मिठाई ले लो बच्चो
मिठाई ले लो अभी
धारवाड का पेड़ा
राजधानी का पेप्परमेंट
बेलगाव का कुंदा
हैदराबाद का कलाकंद
मुँह में पानी लाते हैं
पैसे खर्च कराते हैं
मिठाई ले लो बच्चो
मिठाई ले लो।
फिर न मिलेंगे ले लो अभी
दाम भी ज्यादा नहीं
मैसूर पाक ताजा है देखो
उत्तर की है बर्फी ले लो
चौपाटी की कुल्फी
मिठाई ले लो बच्चो
मिठाई ले लो
फिर न मिलेंगे ले लो अभी
दाम भी ज्यादा है नहीं।

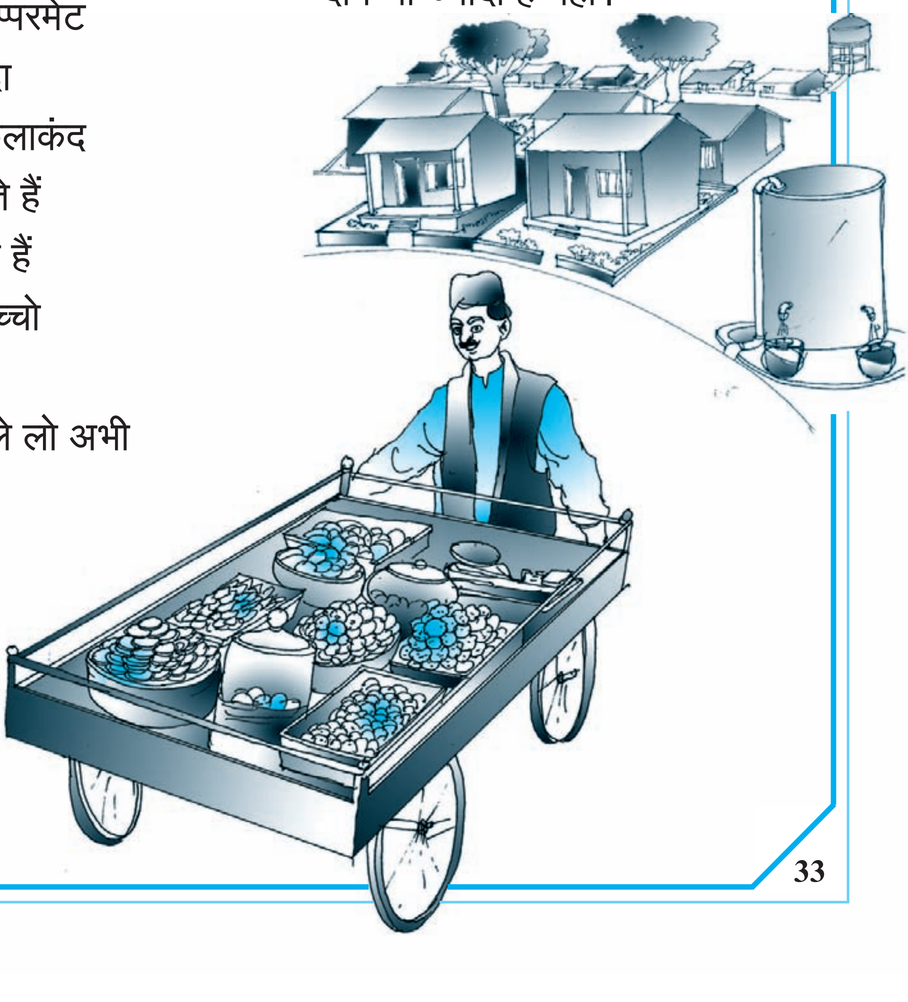

कपास के खेत में

कपास के खेत में श्वेत ज्वार की बाली
झुककर बुलाते हैं
दूध भरी नन्हीं बाली लो
कहते बुलाते हैं।
सूखे ज्वार के डंठ्ल शक्कर के ढले
भोजन देते हैं।
छाल निकालने से ईख मीठा कह
डंठल गाता है।
छाल के पत्ते हमें चाहिए कह
बैल छलांगता है।
बचा शक्कर हमें चाहिए कह
चींटे चढ़ रहे हैं।

यह सब सुनकर किसान की छाती
आनंद से फूलती है
एक कमाते तो पाते अनेक
कहते न झुकते
खुशी से फूलते हैं।

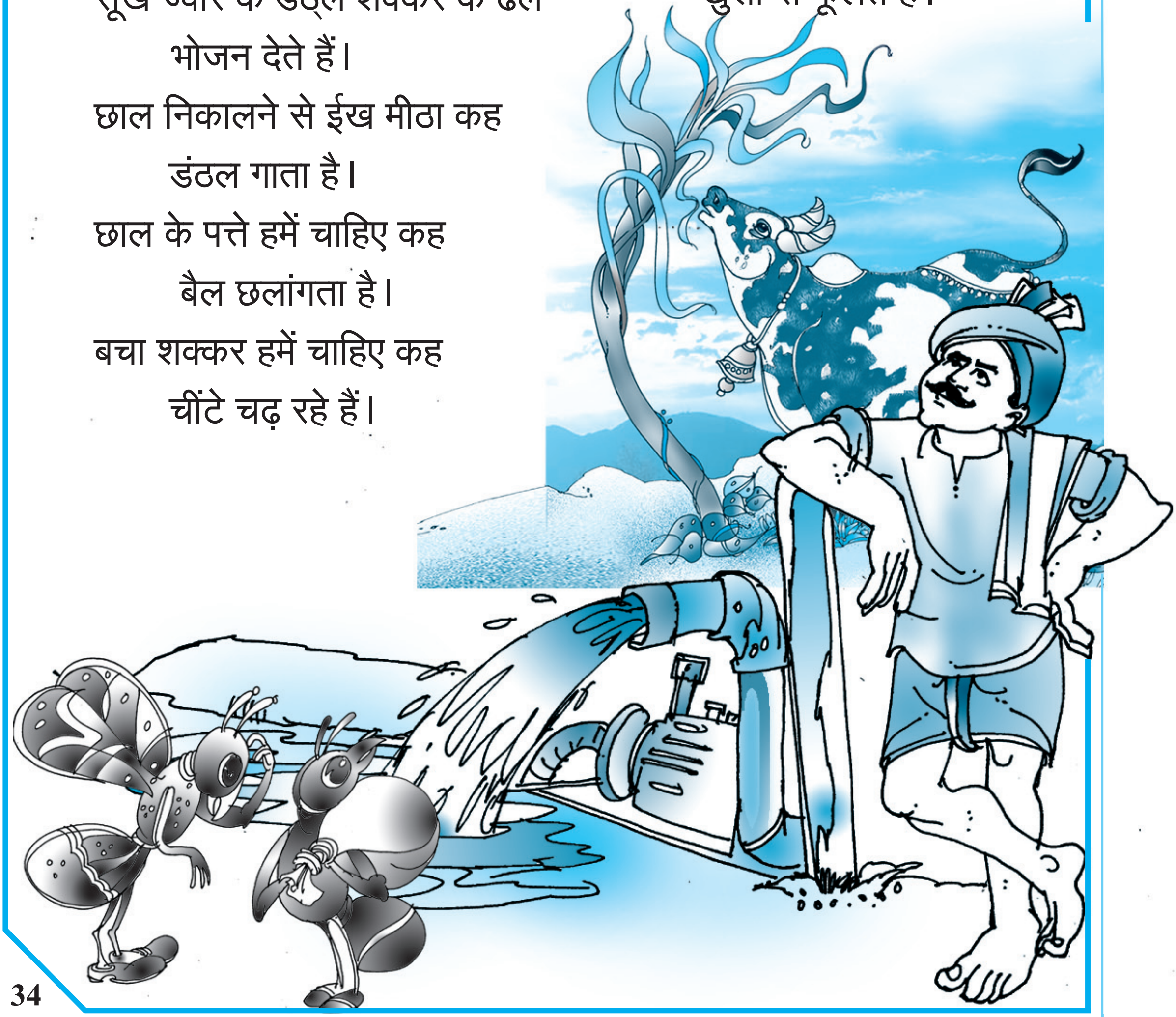

मालिक के क्रोध पर, मार पड़ी बिल्ली पर

एक गाँव में एक घर में
एक था रहता
बात बात पर क्रोध
वह था दिखाता
एक बार अपनी पत्नी पर
कुपित हुआ
मनमाने देते गाली
चला गया
पत्नी खीज कर बेटी पर
कुपित हुई
बिना कारण मार पीटकर
चली गयी
बेटी दाँत कटकटाते
सोच रही थी
अपना क्रोध दिखावे
किस पर ?

नौकरानी दादी आयी
झाड़ू करने
ले ली हाथ में झाड़ू
मौके पर मिल गयी
समझ
टूट पड़ी दादी पर
बौछार करने लगी गाली की
क्या दादी मनुज नहीं ?
उसे भी आया क्रोध
क्रोध किस पर करे
देख रही थी चारों ओर
उसी समय पर
बिल्ली आयी पकड़ने

चूहे तो दौड़े
दादी ने मार दिया उसे
उठाकर झाड़ू
मालिक के क्रोध पर
बेचारी बिल्ली पर
पड़ी मार
बलवान के क्रोध पर
दुर्बल को
लक्ष्य होना पड़ा क्या
दण्ड का ?

उठो मुन्ना उठो

उठो उठो नन्हें मुन्ने
बस उठो देखो आया सूरज।
सुवर्ण बालरवि देखो आया
सजाये रथपर चढ़ आया
उठो शीघ्र तुम्हें - मंगल की
शुभकामना करने रवि आया।
उठो उठो........
गाते विहगों संग आया
वन फूलों को धरकर आया
मेघ गृह कर पार दौड़कर आया
खेलते बच्चों के पास आया
उठो उठो........
जग को ही जगाकर आया
प्रकाश फैलाकर दंभ से आया
कलियों को जगाकर झुलाते आया
लतिकाओं को जगाकर आया
उठो उठो........
नयी खुशी फैलाते आया
सुवर्ण चूर्ण छिटकाते आया
लोक को आलोकित करते आया
सारा दर्द मिटाते आया
उठो उठो नन्हें मुन्ने
बस, उठो देखो सूरज आया।

जो चाहे चुन लो

है यहाँ कविता
कथाएँ रसीली
जो चाहे चुन लो।
यहाँ है विद्या
वहाँ है निद्रा
जो चाहे चुन लो।
यहाँ है मोती
वहाँ है सूर्य
जो चाहे चुन लो।
यहाँ है गुण
वहाँ है धन
जो चाहे चुन लो।
यहाँ है कुल
वहाँ है प्यार
जो चाहे चुन लो।

समझदारी का जीवन
भूल जाने की पीड़ा-
जो चाहे चुन लो।

कन्नड़ भाषी बन बढेंगे आगे

कन्नड़ भाषी बन बढेंगे
कन्नड़ भाषी रहेंगे
कन्नड़ तेज़ से चमकेंगे
कन्नड़ रथ खींचेंगे।
चाहे हम जन्में हो किसी भी कुल में
कन्नड़ कुल अपनायेंगे
कन्नड़ देश में रहनेवाले सब
कन्नड़ वाले मानेंगे।

वेष अलग हो भूषा अलग हो
भाषा एक ही कन्नड़ है
सपने में हो या मन में हो
या सच में हो कन्नड़ हो।
घर में, मठ में, मसजिद या ग़िरिजाघर में
कन्नड़ भाषी बन जीयेंगे
हर उत्सव में लेते भाग सभी
हर्ष से मिलकर मनायेंगे।
कन्नड़ एकता तोड़नेवालों पर
न कर भरोसा हम अपने पर करें भरोसा
कन्नड़ न सिखानेवाले विद्यालय,
कन्नड़ में व्यवहार न करती सरकार
कन्नड़ निर्णय न देनेवाले अदालत
यह धिक्कार हमारा।
कन्नड़ भक्त कोई भी हो
उन्हें सदा सत्कार हमारा
कन्नड़ प्रेमी कहीं भी हो
उन्हें सदा नमस्कार हमारा।

हम बालक हैं

सीखते समय एकलव्य
समर में अभिमन्यु वीर
तप करते ध्रुव-बनें हम
हम बालक हैं।
कृषि पंडित खेतों में
श्रमवीर खानों यंत्रों में
प्रयोगशाला में भाभा हम
हम बालक हैं।

गिरि पर चढ़े तो तेनसिंह
रॉकेट पर आर्मस्ट्रांग
खेल में अर्जुन अवार्ड
हम बालक हैं।
देश की नाड़ी का लहू हम
वाणी की लता में हम ही फूल
कल के सपने का अर्थ है हम
हम बालक हैं।

कौन काम है हम न करेंगे?
अंत कहाँ हमारे साहस का?
सारा जहाँ ही हमारा घर हैं
हम बालक हैं।

कुछ न कुछ दिला दो बापू

1
बापू बापू
कुछ न कुछ
दिला दो बापू

2
पूरन पूरी
घी छोड़कर
क्या चाहिए
मुझे बताओ

3
एक चाहिए
दोसा हो तो
इडली हो तो
दो

4
वड़ा तीन
कचौडी चार
बिस्कुट हो तो
पाँच चाहिए

5
पेप्परमेंट हो तो
छ: ही
चाकलेट हो तो
सात ही

6
जेम्स आठ
काजू नौ
मूगफली तो
रहे - दस

7
ज्यादा मैं
न माँगूगा
माँगे तो भी
दिलाओगे क्या!

घूमो घूमो झूला

घूमो घूमो
झूला
खेलते तुम भी
....
बैठा हूँ मैं
घोड़े पर
बहन शारदा
मोर पर
छोटे भाई दोनों
पालने में
घूमो घूमो
झूला
खेलते तुम भी
....
साथी सभी
मिले हैं
विभिन्न वाहन
चढ़े हैं
देखते आनंद से
चारों ओर
घूमो घूमो
झूला
खेलते तुम भी

......

पहने हैं सभी
रंगीन कपड़े
इंद्रधनुष की
कल्पना कर
घूमो घूमो
मन माने
घूमो घूमो
खेलते तुम भी

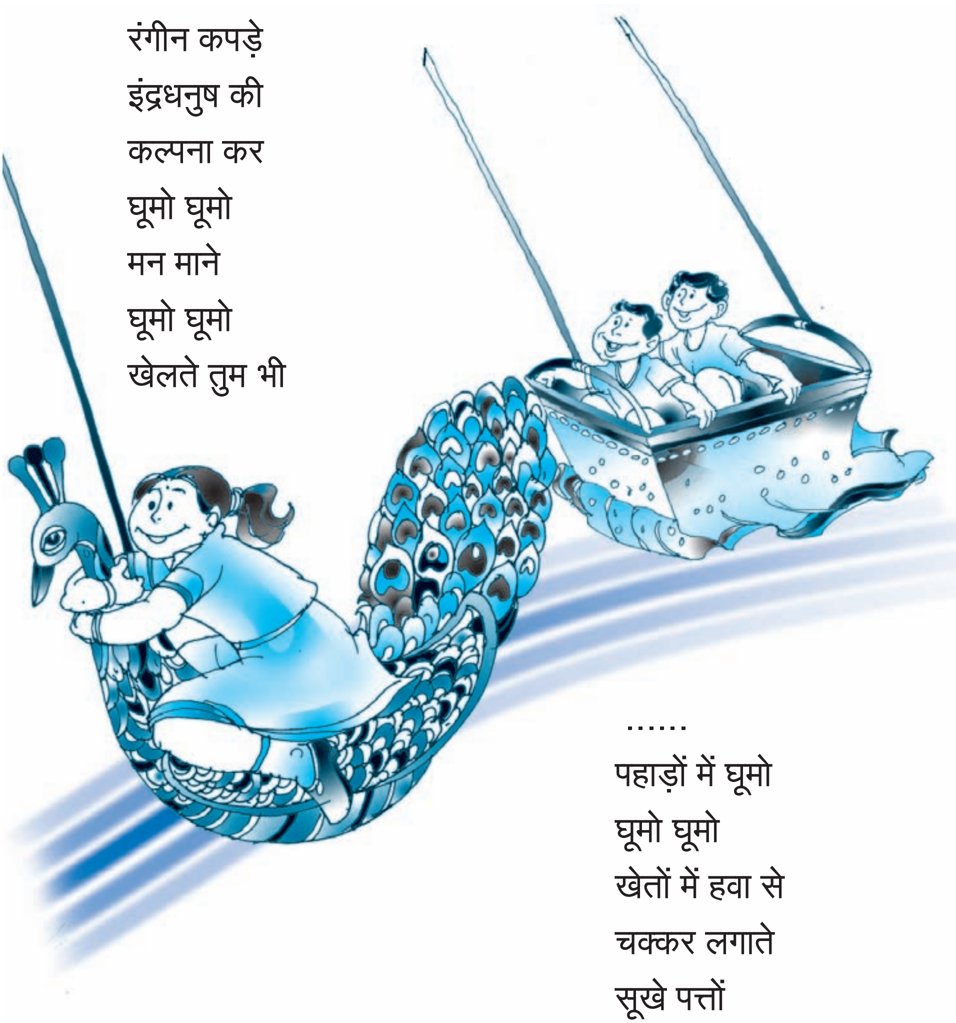

......

पहाड़ों में घूमो
घूमो घूमो
खेतों में हवा से
चक्कर लगाते
सूखे पत्तों
घूमो घूमो
खेलते तुम भी

....

सिखाये कन्नड़

सिखाने से पहले अ आ इ ई
सिखाते हैं ए बी सी डी
मैया बापू कहने से पहले
मम्मी डेडी कहते हैं।

लाज न आती क्या अम्मा
अंग्रेजी की सनक सवार जन को ?
क्यों विष यूँ फैलाते इन
कन्नड़ बच्चों के कन्नड़पन में

कन्नड़ को ही जो सीख न पाते
और क्या सीख सकते हैं माँ ?
अपनी माँ का दूध न पीकर
अन्यों के अन्न खाते हैं!

सिखाये कन्नड़ पढ़ाये कन्नड़
इसे, उसे सबके लिए मोद से
कन्नड़ से सुवर्णमय हो जाय
कन्नड़ भू का जन-मन-जीवन।

?

गाँव गाँव में है शाला
शाला हमारी पसंद नहीं क्या हमें ?
गाँव गाँव में मंदिर हैं तो क्या ?
मंदिर हमारा पसंद नहीं क्या हमें ?
गाँव गाँव में घर हैं तो क्या ?
घर हमारा बढ़िया नहीं क्या हमें ?
घर घर में शिशु हैं तो क्या ?
नन्हा हमारा प्यारा नहीं क्या हमें ?

जंगल का दीप

मनुज के
दीप ढूँढने के पहले ही
जंगल के दीप ने लिया था जन्म।
जंगल की गहराई में
छायी अंधियारी को
चमकता प्रकाश दिया दीप ने
न चाहता तेल
न सताता बाती को
न हाथ जलाता दीप यह।
आप ही जलता
आप ही बुझता
सब जगह उड़नेवाला दीप यह।
बाँसों पर
बिजली की लीला
घास पर चमकती आँखें।
पेड़-पेड़ पर कितने ही
छोटे-छोटे दीप
प्रकाश लिखते कलम है
कीडा ही दीप
यह क्या रूप
नाम ही जुगनू सुंदर
छोटा दीप
बड़ा.... दिल
देता है स्वयं का प्रकाश
अंजली में लेकर
उड़ना छोड़कर
देखिए उसका प्रकाश
अंदर का प्रकाश
आप ही बढ़ाइए
पाइए अपना विकास।

माँ

अर्जुन तो है बहुत बड़ा
विश्वरूप को देख चुका
मैं तो छोटा हूँ भगवान को
माँ के रूप में देखूँगा।
न दीखता देव किसने देखा
दीखता देव स्वयं माँ है
पत्थर का भगवान क्या देता
सब कुछ देती मेरी माँ है।
जनम देती ममता देती
देती है अमृत वक्ष से
लालन पालन लाली
हर दिन देती हर्ष से।

बाहों के पलने में झुलाती
गोद के पलंग पे सुलाती
रंग-रंग के पहनाकर कपड़े
दृष्टि दोष वह भगाती ।
सुंदर सुंदर दे खिलौने
हमें खेल सिखाती है
धीरे धीरे पग धरकर
हँसते कूदते लुभाती है।
अक्षर सिखाती पहली गुरु है
चाल चलन सुधारने में सहायक
बालपन के कोमल दूधदाँत में
मनुज का चित्र खींचता चितेरा।
वैसे ही मैं हूँ, माँ ही देव
छूटा नहीं यह विश्वास
बुरे बच्चे हुए होंगे पैदा
बुरी माँ जन्मी न कभी।

जब हो तुम आगे हार नहीं

हमारी शाला के वार्षिकोत्सव में
बड़े बड़े मेहमान आयेंगे

अध्यक्ष उद्‌घाटक बन
शाला की ख्याति बढ़ायेंगे ।

मैंने भी भाग लिया है माँ
खेल कूद में, भाग-दौड़ में

चर्चा-भाषण, वेष-भूषा में
आशुकविता, नाटक में

सभी स्पर्धा में जीतूँ माँ
तुम्हारी आशिश से इस बार

घर भर दूँगा प्रशंसाओं से
पदक फलक पुस्तकों से ।

तुम भी देखने आओ माँ
प्रशंसा पाते मुझको

देखूँगा मैं भी सब के बीच
तुम्हारे खिले चेहरे को।

नाटक में मैं ही भीम
मार गिराऊँगा कीचक को

बैठे हुए सब न रहेंगे किये बिना प्रशंसा
स्त्री के लाज-रक्षक को!

गेयगीतों को गाऊँगा माँ
फसल की नाच नाचूँगा

योगासन करते हड्डियाँ
न हो ऐसे झुँकूगा माँ ।

बाण छोड़ूँगा अचूक
तलवार चलाना दिखाऊँगा

और भी कुछ सरप्राइज़ है
उन्हें दिखाकर चकित करूँगा ।

यदि तुम हो आगे तो फिर हार नहीं
अपने बेटे की जय देखोगी

देखोगी मेरा नाम रोशन होते
सभी जगह इस युग में।

समय नहीं

खेलने को समय है
खाने को समय है
पढ़ने को नहीं
क्यों ?
पता नहीं।
घूमने को समय है
विनोद को समय है
पढ़ने को नहीं
क्यों ?
पता नहीं।
झगड़ने को समय है
गप्पने को समय है
पढ़ने को नहीं
क्यों ?
पता नहीं।
आमोद को समय है
जुआ खेलने को समय है
लिखने को नहीं
क्यों ?
पता नहीं।

सब को है
उतना ही समय
तुमको भी यह मालूम।
समझदार लोग
बिना चूक उपयोग कर
पाये हैं संपत्ति
समय का मूल्य
न मालूम हो तो
जीवन जाता उजड़।
समय ही मोती
समय ही रतन
समझकर जीतो करो राज!

भारत भूमि करुनाडु

भारत भूमि के बिना
करुनाडु है नहीं
कर्नाटक के बिना
भारत है नहीं।
हमारी माता की माता
भारतमाता
भारती की शोभा
कन्नड़माता
छोटा-सा ब्रह्माण्ड
भारत भूमि
छोटा-सा भारत
कन्नड़ भूमि

क्या है, क्या नहीं
कन्नड़ भू में?
हुए हैं श्रेष्ठ जन
कन्नड़ कुल में
सारी भू को प्रकाश
भारत की भू से
सार्थकता भारत को
करुनाडु से
जय हो भारत की
कर्नाटक की
यह दोनों शुभकर हैं
सारे विश्व को।

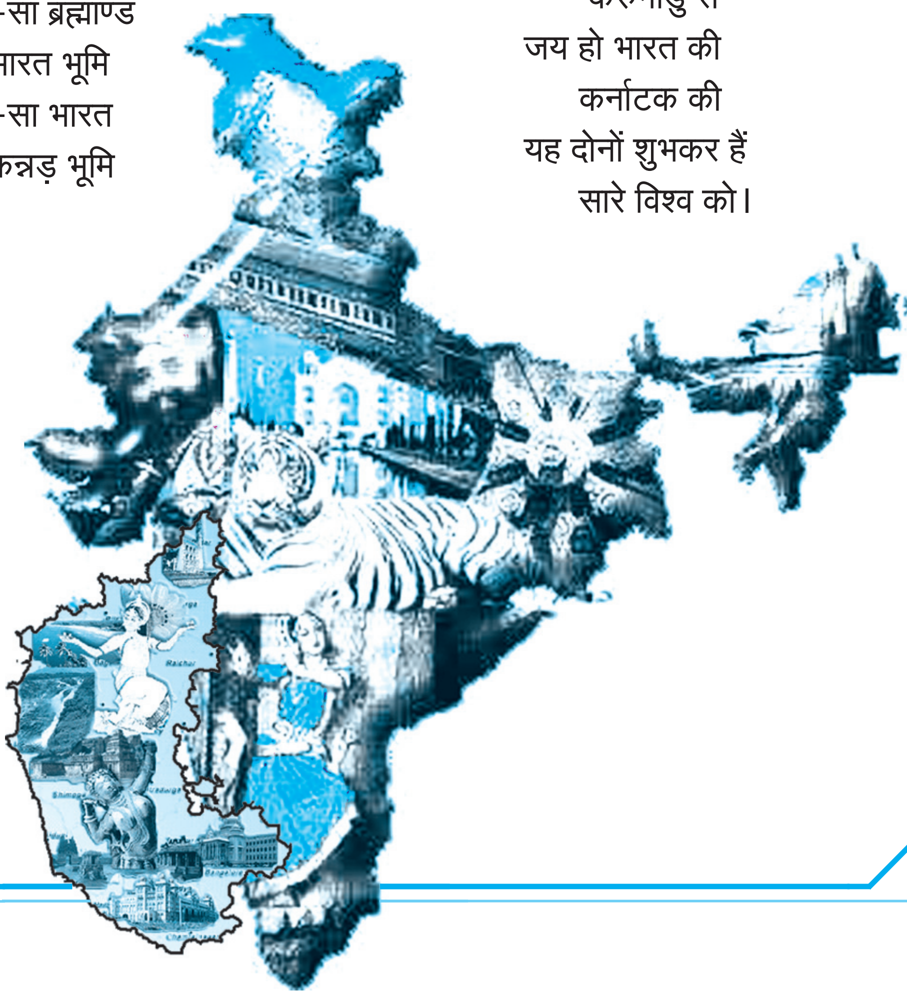

हमारे भगवान

हे मेरे स्वामी
दो विद्या
दो बुद्धि
दो शुद्धि
दो सिद्धि
हे मेरे स्वामी।

हे स्वामी हनुमान्
पेटू बेनक
ईश्वर पिनाकी
केशव जिनेश
विद्या दो
बुद्धि दो
हे मेरे स्वामी।

स्वामी वीर
जोकुमार
ईसा पीर
बसव भैरव
विद्या दो
बुद्धि दो
हे मेरे स्वामी।

कुत्ता पाला मैंने

कुत्ता पाला मैंने
दीदी ने पाली बिल्ली
इस ओर भौ भौ
उस ओर मियाव मियाव
बीच छोटे भैया का टींव, टींव।

चिड़िया पाली मैंने
तोता पाला दीदी ने
इस ओर कलरव
उस ओर कलकल
बीच छोटे भैया का कोलाहल।

मुर्गी पाली मैंने
मोर पाला दीदी ने
इस ओर कू कू
उस ओर के के
बीच छोटे भैया की, की की की।

मेरा भण्डार

मेरा भण्डार
मेरे मनके अंदर
भरा नहीं उसमें
सोना चाँदी, भैया।

मोती रतनों से क्या
आगे सिर्फ कचरा
ऐसी संपत्ति
अब है मेरे वश में।

कनक रतनों से भी
अमूल्य है उसमें
उसके बराबर की
संपत्ति है नहीं कहीं भी।

मन में क्या है
क्या नहीं, बताओ
उसमें छिपा है
सातों लोक, भैया।

सबकुछ उसी में है
सर्वेश वहीं पर
इसे पानेवाले मुझ में
है कहाँ गरीबी बताओ ?

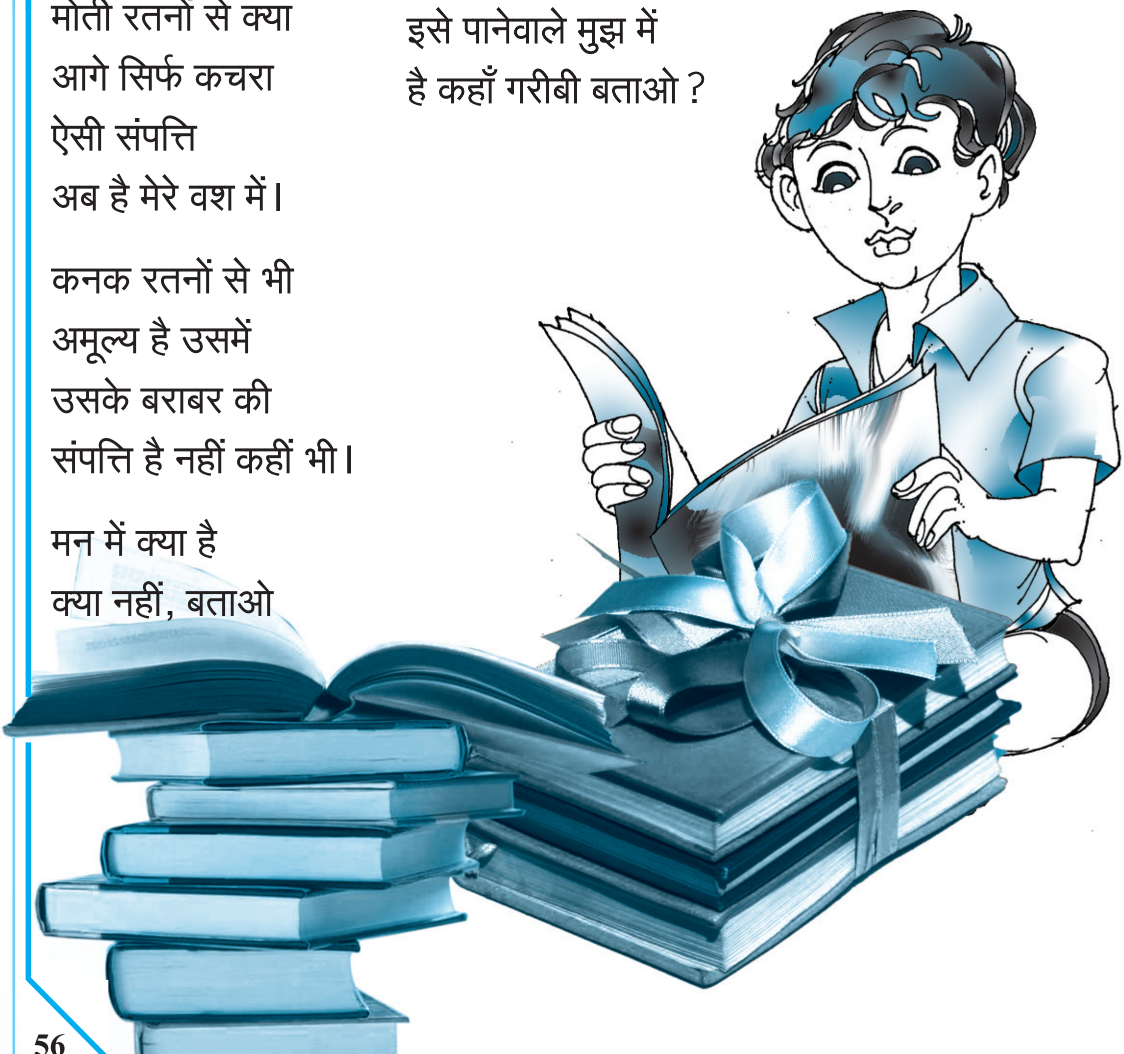

साथी बनो

पंख खोलो पंख खोलो
पंख खोलो मोर
कुहू कुहू कुहू कुहू
बोलो कोयलिया
मीठा बोलो मीठा बोलो
मीठा बोलो तोता
गुंजन करो गुंजन करो
गुंजन करो भौरा

कलरव करो कलरव करो
कलरव करो पंछी
खुशी से आओ खुशी से आओ
खुशी से आओ बिल्ली
साथी बनो
तुम सभी
साथ हो तो तुम सभी
नीम भी गुड़ है।

मुन्ना

कहता लो गोद में
फिर उतरता
चारों ओर घूमता मुन्ना।
कमीज खींचता
बाल खींचता
बेचैनी दूर करता मुन्ना
बुलाने पर दौड़ता
नखरा करता
माखन माँगता मुन्ना।
कागज़ फाड़ता
पेन्सिल तोड़ता
फूल तोड़ता मुन्ना।
रोते रोते
फिर हँस देता
हँसते हँसते
फिर रो पड़ता मुन्ना।
रोना भी सुंदर उसका
हँसना भी सुंदर उसका
हमारा प्यारा मुन्ना।
पीठ पर चढ़ता
बाहों में आता
गोंद में कूदता मुन्ना।
यों ही चिल्लाता
तन खरोचता
हाथ मरोड़ता मुन्ना।
रोते रोते
हँसता मुन्ना
हँसते हँसते
रोता मुन्ना
रोते भी सुंदर
हँसते भी सुंदर
हमारा प्यारा मुन्ना।

बच्चों का अधिकार

सबका प्यार
प्यार का शक्कर
ये बच्चों का है अधिकार।
सबमें उमंग
सबका मुहताज
ये बच्चों का है अधिकार।
विशेष सुरक्षा
विशेष पोषण
ये बच्चों का है अधिकार।
अच्छा खाना
पौष्ठिक खाना
ये बच्चों का है अधिकार।
अच्छा पहनावा
अच्छी पोशाक
ये बच्चों का है अधिकार।
अच्छा विकास
अच्छी जानकारी
ये बच्चों का है अधिकार।
अच्छी विद्या
बच्चों का वाङ्मय
ये बच्चों का है अधिकार।
अच्छा परिवेश
अच्छी सुविधा
ये बच्चों का है अधिकार।
खेलना पढ़ना
देखना मिलना
ये बच्चों का है अधिकार।

प्रेम का कवच
नीति का कमंडल
ये बच्चों का है अधिकार।
योजनाओं में
प्रथम आसक्ति
ये बच्चों का है अधिकार।
सर्वत्र
प्रथम पंक्ति
ये बच्चों का है अधिकार।
बुजुर्गों सुनो
भूले यदि आप
ये बच्चों का है अधिकार
होकर निस्तेज
आपका जीवन
खा जाता है जंग।

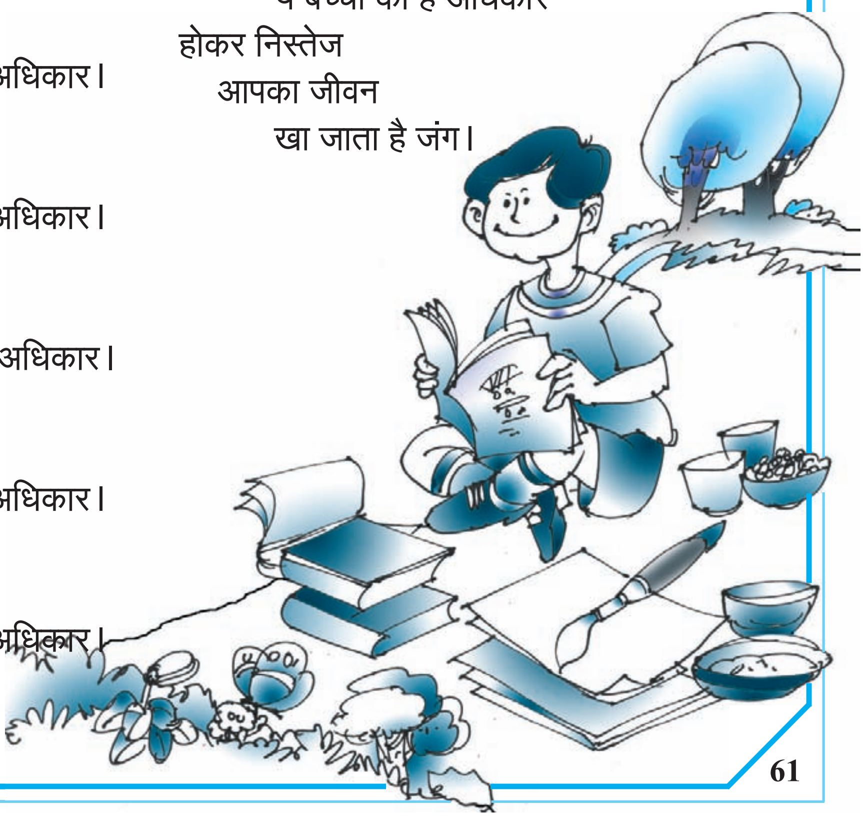

ऋतु गान

बच्चों का गाना – 1

चैत्र शुद्ध प्रतिपद
वसंत ऋतु आया है।
वैशाख-संग
समाप्त ऋतु
तरुलताएँ–
कोंपल - ऋतु
हर्षोल्लास
बहार ऋतु
शादी-मेला
मौसम ऋतु
बसंत की पूजा कीजिए
फसल का गीत गाइए।

बच्चों का गाना - 2

जेठ आषाढ़
ग्रीष्म ऋतु
गर्मी लाया है
चामर लाया है
ठंड़े पानी का
ठंड़ी छाया का
प्यास बनकर रुका है

मिट्टी ढ़ोया कीजिए
मैदान में मिलिए
खेलिए गाइए।

बच्चों का गाना - 1

श्रावण भादो
वर्षाऋतु
पंचमी–
झूला लाया
वर्षा आयी

रंग देता हूँ
आओ वर्षा
खेत में विध विध

फसल उगे
सर्वत्र संतोष
संभ्रम लाये
बरसो बरसो
वरुण देव
गणपति गणपति
महाराज।

बच्चों का गाना – 2

आश्विन कार्तिक
शरद् ऋतु
शम्मी त्योहार
आ गया
शम्मी देकर
मिल जायेंगे
पुरानी शत्रुता
भूल जायेंगे
पूनम को
लिखेंगे

वन भोज का
आनंद पायेंगे।

बच्चों का गाना – 1

मार्गशिर पुष्य्
हेमंत लास्य!
नया तिल लायेंगे
मित्रता की महिमा गायेंगे
तिल गुड़ बाँटेंगे

बच्चों का गाना – 2

माघ फाल्गुण
शिशिर ऋतु
वसंत पंचमी को
लाया
मंदिर की पूनम
बुलाओ देव
मंदिर का देव
सभी लोकों का
मालिक देव
होली पूनम
मेले में जाओ
रथ खींचो
दुःख को भूल
खुशी मनाओ।

सभी

ऋतु गान तान नि तान
फैले सर्वत्र, छूए अंबर!

सीखिए!

वीणा बजाना सीखिए
बाँसुरी बजाना सीखिए
उसके सुर में
सुर मिलाकर
गीत गाना सीखिए
गाकर नाचना सीखिए
नाचकर हर्षाना सीखिए
नाच नाचते
देह भंगिमा से
कमाकर बढ़ना सीखिए
अभिनय कर नाटक सीखिए
पढ़कर विद्या सीखिए
आने पर
जितनी भी संपत्ति
सच बोलना सीखिए
साथ चलना सीखिए
साथ कमाना सीखिए

साथ जीवन
की गाड़ी चलाते
मिलकर पाना सीखिए
माँ की बोली सीखिए
मातृभूमि को प्यार कीजिए
मातृभूमि को
स्वर्ग बनाने का
चमत्कार सीखिए।

बच्चे की चाह

शराब की दुकान नष्ट होकर
दूध की दुकान आये, माँ
तले को ही बेचते हैं
फल फलिया बेचे, माँ
जुआ खेलते झगड़ना बंदकर
खेलना, पढ़ना सीखें, माँ।
खून, डकैती मिटाकर
फसल लाये, माँ।
भाषण देने की लत छोड़कर
देशोद्धार करें, माँ।

छीन-झगड़कर खाना बंदकर
बाँटकर खाना सीखें, माँ।
'मैं' का अहं मिटकर
'हम' का भाव आये, माँ।
अलग अलग रहने के बदले
मिलकर रहना आये, माँ।
बच्चों पर तिरस्कार छोड़कर
प्यार दुलारे आये, माँ।
बाल नाटक, बाल सिनेमा
बाल गीत विकसे, माँ।
बच्चे की चाह न अनसुनाकर
बच्चों का युग आये, माँ।
देश के आसमान में सितारों की तरह
बच्चों का चमकना आये, माँ।

विकसित होने का हठ

विकसित होने का हठ
जीवन का बल
जन्म का यही फल
निश्चल हठ
शुभमंगल
वही जीवन की सफलता
मिट्टी में ही
पकने का
बीज का हठ है
तुम्हारा हो
पंख फैलाये
सत्व समुज्ज्वल।
ताकत जहाँ
यश जहाँ
जीवन हो सुदृढ़।
हर साँस पर
नया हो
जीवन का सौंदर्य
नर नर में
संचरित हो
नये जन्म का प्यार

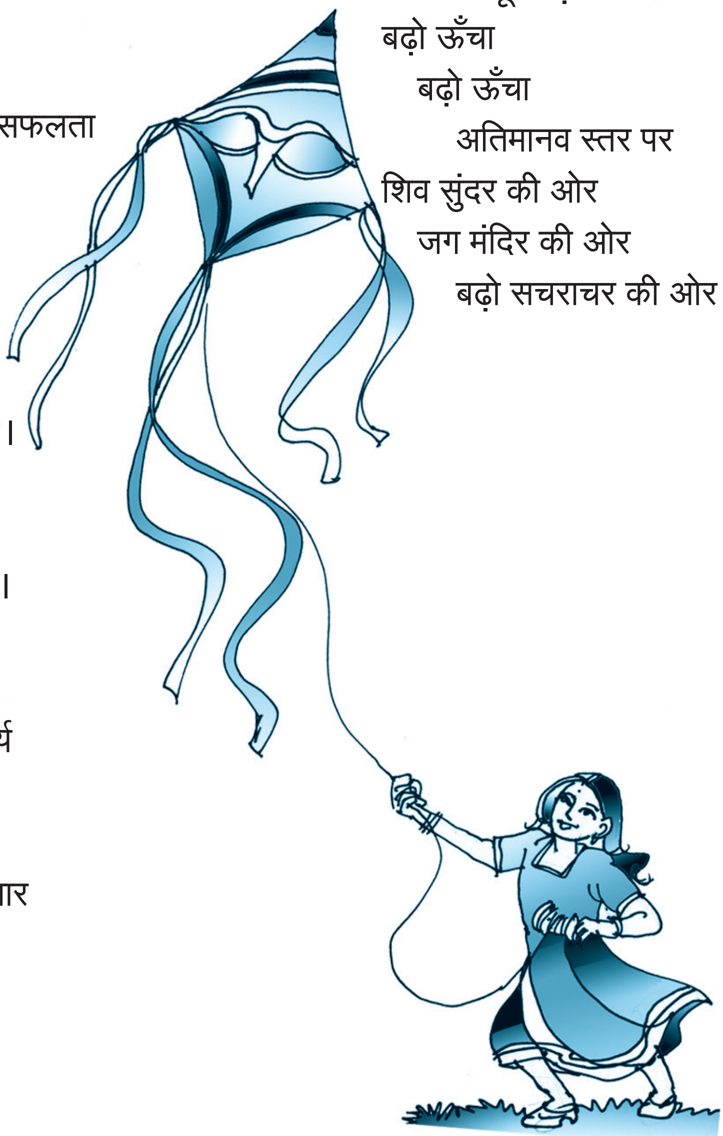

बड़ा हो
बड़ा हो
भरपूर बढ़ने का हठ
बढ़ो ऊँचा
बढ़ो ऊँचा
अतिमानव स्तर पर
शिव सुंदर की ओर
जग मंदिर की ओर
बढ़ो सचराचर की ओर।

इच्छा यान की

भूमिपर
सुबह का नाश्ता
चंद्रलोक में
दिन का भोजन
मंगल लोक में
रात का भोजन
पुनः भूमि की ओर
वापसी दौड़।
अंतर को कर
छूमंतर!
भूमि और
आकाश के बीच
करा देंगे
रिश्ता
तारों के चावल के
दाने डालकर
करते मौज़ में
रॉकेट सवारी
जहाँ चाहिए
वहाँ उड़कर
दूध मार्ग की
सीमा कर पार
आयेंगे भू पर
खुशी खुशी से
बाह्याकाश है
अपरंपार
क्वासार पल्सार
का परिवार
इच्चा यान से
तारक पुंज
घूम आयेंगे
नमस्कार।

ऊँट

ऊँट आया
ऊँट आया
ऊँट आया गाँव को!
काम-काज
पाठ पढना
अब किसको चाहिए?

दौड़ते आइए
देखने आइए
मरुभूमि के जहाज को
वक्र ग्रीवा
झुका कूबड़
भयंकर प्राणी।

पेट क्या
शहर है या
कन्नंबाडी-बाँध है
पूँछ, मुँह
नाक, कान-सब
कचरा अंडा।

इसे बनाने
शिव को
क्या जल्दबाजी थी
मिलाकर मिट्टी
रौंधकर
बना दिया जल्दी जल्दी!

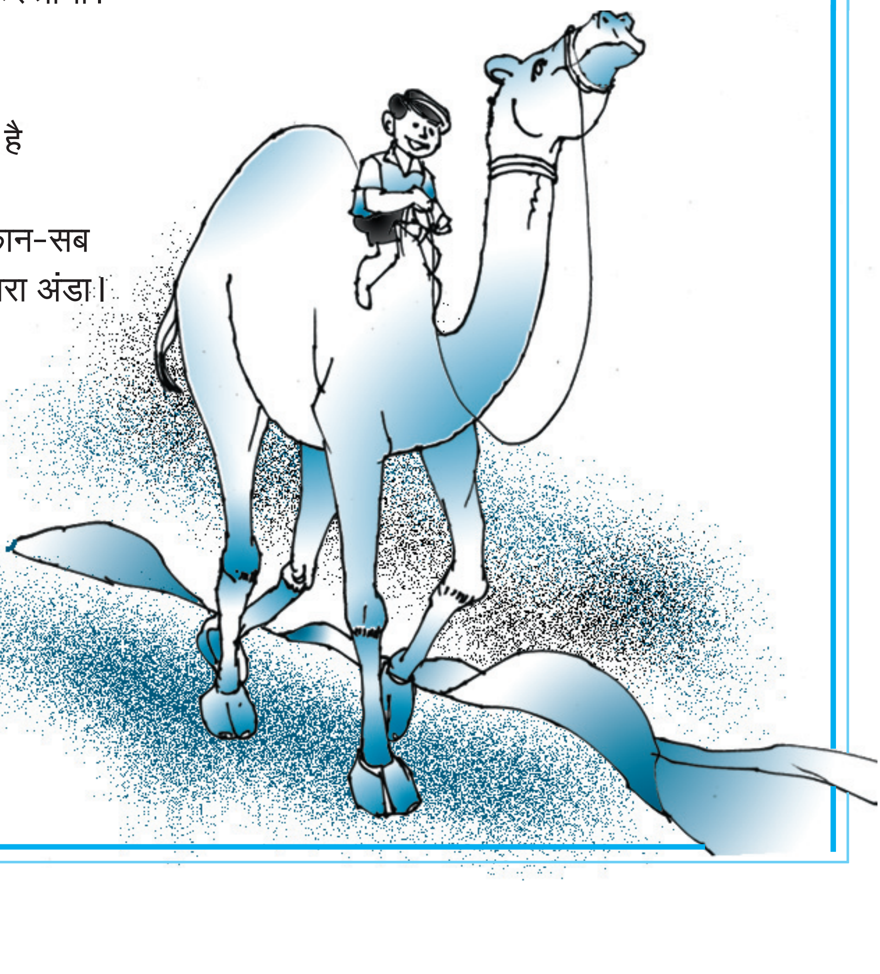

असुंदर
होते हुए भी
इसका आकार
ऊँट बहुत
अच्छा जानवर
सेवा की साकार मूर्ति!

बच्चे चढ़कर
बैठे हैं
उसकी पीठ पर
ट ठ ड ढ ण
पढ़ रहे हैं
ऊँट कूबड़ शाला!

बड़े इसपर
बैठकर जायें
दूर देश
गाँव की
आवश्यक
राशन लायें!

भला ऊँट
अच्छा ऊँट
हमारा सेवक ऊँट
भेजेंगे
तुम्हें बाँधकर
हमारे गाँव का घंटा।

बंदर और बकरे की कथा

एक था आदमी
थी उसकी संपत्ति
बंदर एक और
एक बकरा!
गाँव में आते ही
''मारो छलांग
बंदर का बच्चा
बकरे की पीठपर''
कह-खेल दिखाकर
''खाना दीजिए दया दिखाकर''
पूछते लोगों से
वह पाया था बख्शीश
बाग में जाकर
खाना खाकर
चल देता आगे।
एक बार
ऐसे ही खेल दिखाकर
पाया खाने को कुछ
खाने के लिए
पुर के आगे के
कुँए को देख
वहाँ थाती में
अन्न को रखकर
कुँए में उतरा
तल के पानी
लाने की इच्छा से
समय ताकते
बंदर ने
खोली थाती
मालिक को भी
खाने को रहे
वह भी भूलकर
सारा अन्न
खा डाला और
अपनी गलती छिपाने

बकरे की दाढ़ी में
अन्न का दाना लेपा
ऊपर आकर
मालिक ने सोचा
देर क्यों खाने
खाना खाकर
कर थोड़ा आराम
चल दे अगले खेल को
ऐसा सोचते
उठाया जब थाती
तो जूठन दाना
देख हँसा
खीजकर ढूँढा तो
देखा बकरे की दाढ़ी में
जूठन दाना
समझ बकरे ने खाया
मारा बकरे को
खाया बंदर बच
निकला!
अपराध करके
युक्ति से
पार हो जाते ये लोग
बिना अपराध के
पकड़े जाकर
पीड़ित होते वे लोग।

मुक्तक

1. बच्चे का रोना सुंदर
बहन का हँसना सुंदर
बच्चे जो भी करें
माँ-बाप को लगता सुंदर।

2. दूरदर्शन आने पर
दूर हो गये दोस्त
प्रणय दृश्य देख देख
रोमियो बन गये बच्चे।

3. आँखों को माँ का वदन ही सुखकर
गालों पर माँ का चुंबन सुखकर
खेलकूद से थक आनेपर
माँ की ममता भरी गोद ही सुखकर

4. चिड़िया का चहकना सुंदर
तारे का चमकना सुंदर
मेले में जाने पर पिता का दिया
पैसा लाया बड़ी खुशी।

5. फूल चाहिए छोटी बहन को
फल चाहिए छोटे भैया को
मुझे चाहिए गीत-गल्प
पढ़ने को आनंद से।

6. बिल्ली ने सपने में चूहे को देख
निंदियारी आँखों में ही छलांग लगायी थी
बिल्ली के लगने से गुज्जिया गिरने पर
चूहे ने उसी को खाया मज़े से।

7. गणपति आया, गणपति
टोकरी भर गुज्जिया खायी
चढ़ा चूहे पर गिरा ठोकर खायी
कहा फटा पेट।

8. पढ़ने को कहो तो ऊँघता
काम करने कहो तो जंभाई
मसालदोसा इड़ली
वड़ा देखते तो जग जाता।

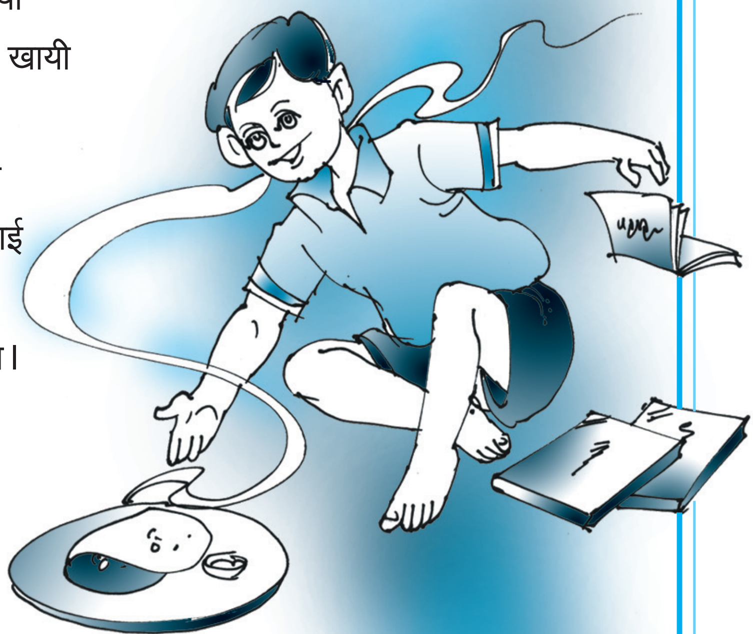

8. कन्नड़ ही कामधेनु
कन्नड़ ही कल्पवृक्ष
कन्नड़ ही धर्म अर्थ
कन्नड़ ही काम मोक्ष।

10. धनवान् बनेगा या नहीं परंतु बेटा
गुणवान बन सकते हो
गुणहीन धन लाश है, धन न होनेपर भी
'गुण रत्न की खान' सुनो जीवन में।

11. बड़ी बात छोटी चाल नहीं चाहिए
कम बात बड़ी चाल, नवनिधि है देखो
चक्र घूमाकर मारा राक्षसों को, श्रीकृष्ण ने
चरखा चलाकर लाये बापु स्वराज्य को
तन-मन श्रम से हम भी लायेंगे सुख संपत्ति
सभी का विकास यहाँ संभव है, हो तो हममें निज दोस्ती।

सवाल–जवाब

''नहा आया–
खाकर आया''
''क्या खाया ?
अन्न खाया''
''मस्त हाथी ?
शक्कर का हाथी !''

''उठाकर लाया–
ढोकर लाया।''
क्या लाया ?
टीला लाया।''
कौन-सा टीला
चित्र का टीला।''

''बनाकर आया
बनाकर आया''
''क्या बनाया ?''
''मंदिर बनाया''
''कौन-सा मंदिर ?''
''गुड़िया का मंदिर !''

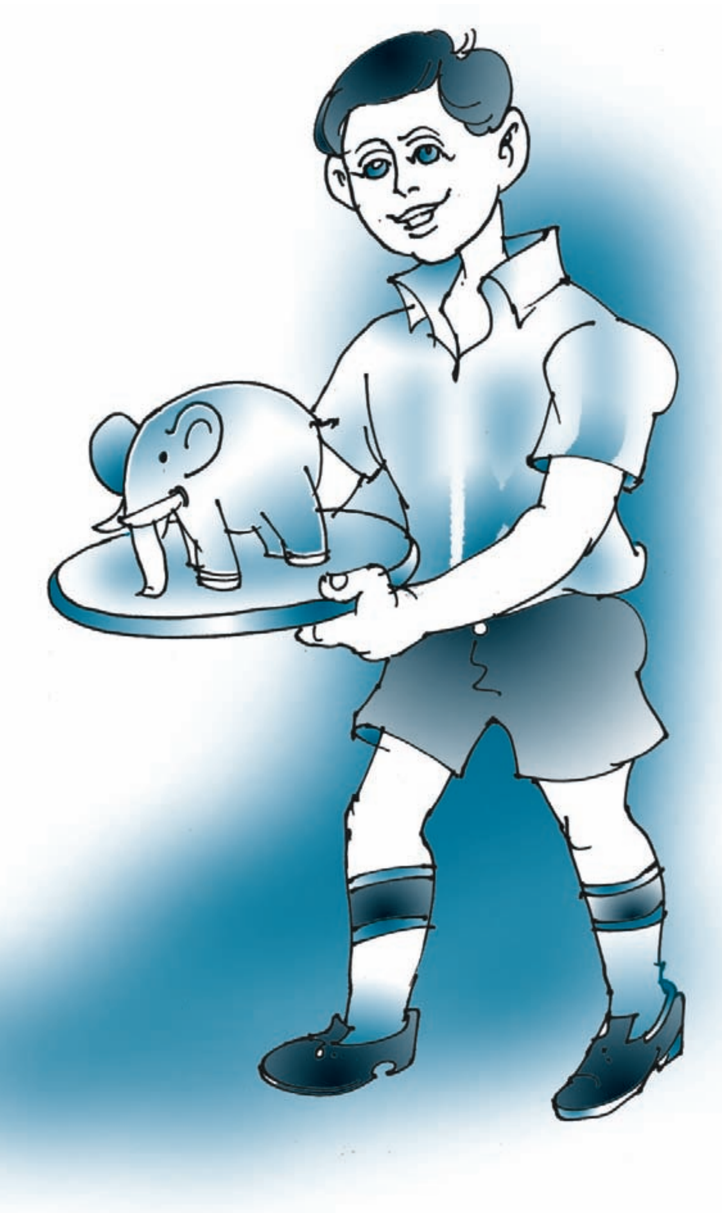

नेहरू चाचा

आज करेंगे याद तुम्हें
आज नमन करेंगे तुमको
गाकर तृप्त होते हैं
नेहरू चाचा।

तुम्हारा प्यार वात्सल्य
तुम्हारे मन का सौंदर्य
तुम्हें जानने की शक्ति
दो हमें चाचा।

तुम्हारा पावन जीवन
हमें वह है संजीवन
देशभक्ति के लिए लिखा
भाष्य चाचा ने।

स्वतंत्र तुम्हारा स्वर
तुम्हारी साँस जनतंत्र
एकता ही तुम्हारा मंत्र
बोल व चाल सच्ची।

तुम्हारे लक्ष्य तक पहुँचने
हमारा जीवन आरक्षित
श्रम करेंगे हम
काया वाचा मनसा।

तुम्हारी सुंदरता का नाम
हमारे मन की हरियाली
तुम्हारा लक्ष हमारी साँस
नेहरू चाचा।

श्रृंखला

छाछ, छाछ!
कौन-सा छाछ
खट्टा छाछ
कौन-सा खट्टा ?
आम का खट्टा
कौन-सा आम ?
गोवा आम
कौन-सा गोवा ?
कदंब गोवा
कौन-सा कदंब ?
बनवासी कदंब
कौन-सा बनवासी ?
पंप का बनवासी
कौन पंप ?

कन्नड़ कवि पंप
कौन-सा कन्नड़ ?
कस्तूरी कन्नड़
मेरा कन्नड़
तेरा कन्नड़।

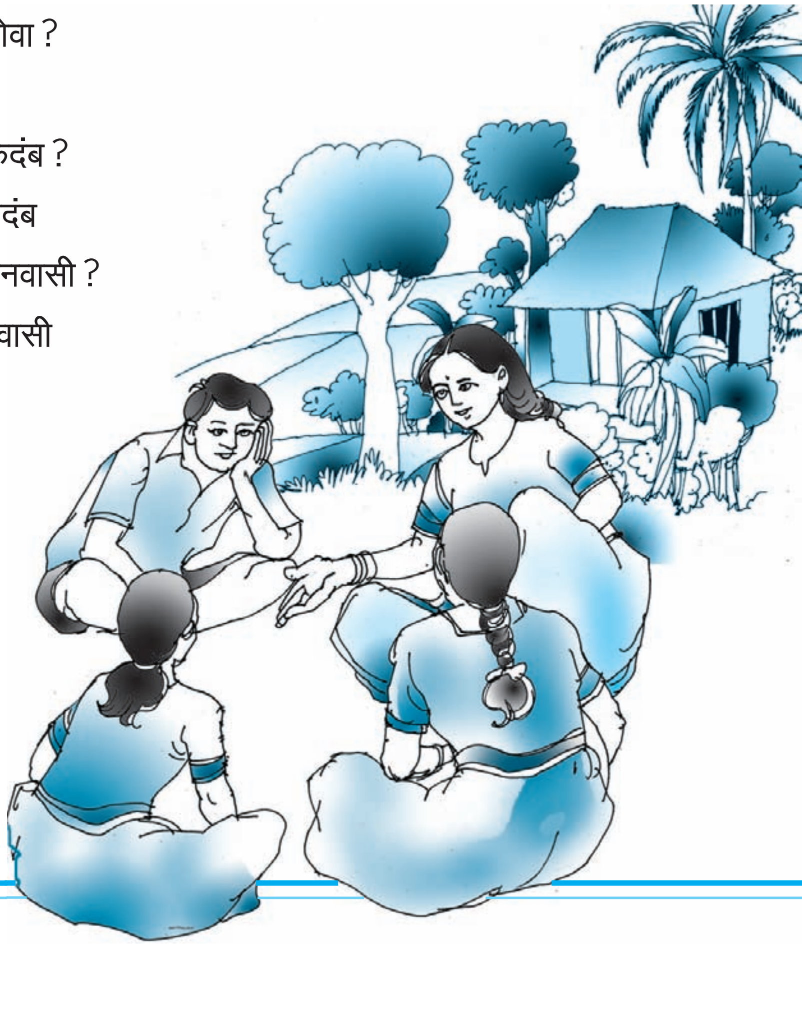

हमारा गाँव हमारे लिए स्वादिष्ट गुड़

हमारे गाँव का नाला
सूखता ही नहीं
हमारे गाँव की घास
सूखती ही नहीं
हमारे गाँव का खेत
बंजर होता ही नहीं
हमारे गाँव का बगीचा
मुरझाता ही नहीं।

हमारे गाँव की गाय
दुबली होती ही नहीं
हमारे गाँव के लोग
दुःखी होते ही नहीं
हमारे गाँव के बच्चे
पछतायेंगे नहीं
हमारे गाँव की संपत्ति
घटती ही नहीं।

हमारे गाँव की शाला
हारती ही नहीं
हमारे गाँव का मेला
रुकता ही नहीं
हमारे गाँव की कीर्ति
बुझती ही नहीं
हमारा गाँव हमें
स्वादिष्ट गुड़।

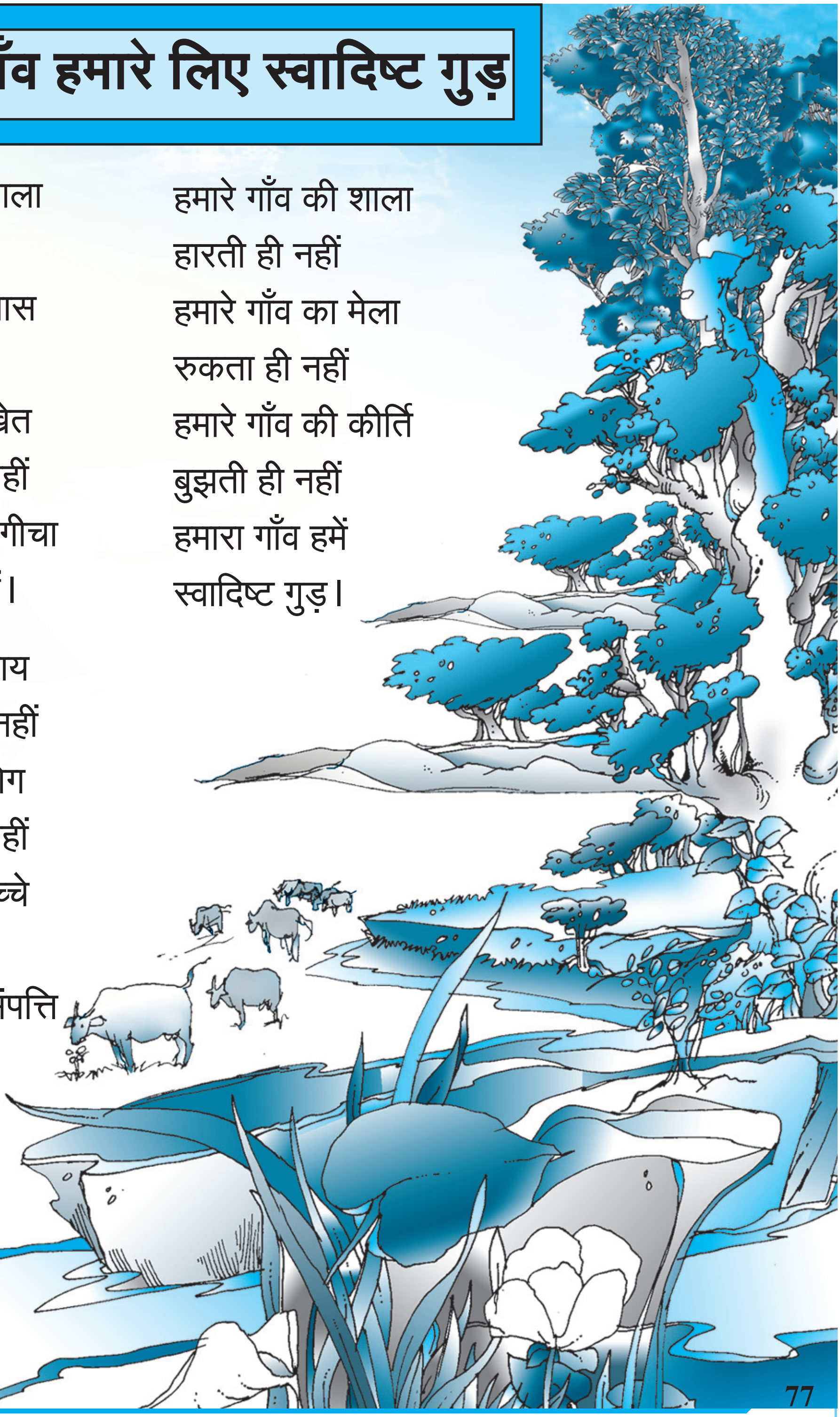

पूरनपूरी घी

पूरनपूरी घी
खाओ खूब
गरम गरम पूरनपूरी
सुवासित घी
छः सात
खा लो!
घी में तली
पापड़ बडिया
अचार बड़ा
मुँह में रखते ही
गलनेवाला पेड़ा
मुँह में पानी लाता
वडा कचौड़ी
खाइए, खाइए
पूरनपूरी खूब।

घी नहीं चाहिए?
लो दूध, मलाई!
वह भी नहीं चाहिए?
लो नारियल का दूध
वह भी नहीं चाहिए?
लो शहद
जो भी चाहे खा लो
बस, न कहो!
गिनकर न खाओ
पूरनपूरी!
पूरनपूरी घी
खाओ खूब!

रथ

पुरदेवता का
रथ खींचिए
आनंद से।
फल फेंककर
उछलते पकड़कर
खुशी खुशी से
नाचिए।
रथ खींचते
संतुष्ट होइए
देश माता का
रथ खींचिए
आनंद से।
माँ का पताका
फहराये
अभिमान से
नत होइए।
रथ खींचते
संतुष्ट होइए
देश देव का
रथ खींचिए
आनंद से।

विश्व गुरु के
महत्व जताते
द्वेष का अहं
मिटाइए।
रथ खींचते
संतुष्ट होइए
जगत् मेले का
रथ खींचिए
आनंद से।
'एक ही भू जल
एक ही मनुकुल'
घोषणा करते
झूमिए।
रथ खींचते
संतुष्ट होइए।

नागर

सर सर सरता नाग
आओ पीओ दूध
खुशी से दुआ दो
नया ज़माना लाओ
हे, फुंकारते नाग।

पंचमी आगयी
तुम्हें भी दूध लाये हैं
न पीओ तो कैसे
हे, फुंकारते नाग।
मेरे हिस्से का दूध पीओ
मेरे पिता के हिस्से का पीओ
मेरी माता के हिस्से का पीओ
दीदी भैया छोटा भैया बहन
सबके हिस्से का पीओ दूध
हे, फूंकारते नाग।

घर में भरी खाने की चीज़ें
दुहता दूध बर्तन में
फूल माला सोना, मोती
सब इंतज़ार कर रहे
जल्दी दूध पीओ
हे, फुंकारते नाग।

झूला झूलना है
गुड़िया खेलना है
सहेली संग जाना है
आँख मिचौली खेलना है
जल्दी दूध पीओ
हे, फुंकारते नाग।

घर घर में खुशी का फौवारा
जूड़े में शोभित मोगरे की कली
द्वार पर सजा वंदनवार
जल्दी दूध पीओ
हे, फुंकारते नाग।

आज ही तुम पौधा लगाओ

जंगल को ही
समाप्त किया गया है
जो जंगल है उसे
काटकाटकर

पौधा न लगाकर
पौधा काटने के
दुष्ट कार्य में
पड़कर

पानी न बरस रहा
तो फसल कहाँ
धरती बंजर बन रही
बिना वन के

सूख गये हैं तालाब
सूख गये हैं सर
सूख गयी है धरती
खोकर हरियाली
धान्य का अभाव
चारे का अभाव
लकड़ी का अभाव
कृषकों को

पत्तों का खाद
कुटी छप्पर
सब का अभाव
गरीबों को

सूखा परिवेश
बहुत दुस्तर
जीने का मार्ग
जन को

लगाओ पेड़
हितकर पर्यावरण
पेड़ों का वर
उर्वर

लगाओ आम
लगाओ नीम
लगाओ सागवान
पेड़ इमली के

लगाओ नारियल
लगाओ सुपारी
लगाओ जामून
अरु कटहल

घर घर को
मिले पेड़
वन वन बने
गाँव गाँव
देश बने
नंदनवन
तुम आज ही
लगाओ पौधा
तुम आज ही
लगाओ पौधा।

मेरी यादें शत शत

सिलाई करनेवाले
दर्जी तुम्हें
मेरी यादें शत शत
कपड़ा धोनेवाले
धोबी तुम्हें
मेरी यादें शत शत
तेल देनेवाले
तेली तुम्हें
मेरी यादें शत शत
मक्खन देनेवाले
ग्वाले तुम्हें
मेरी यादें शत शत
घड़ा बनानेवाले
कुम्हार तुम्हें
मेरी यादें शत शत

लोह से बनानेवाले
लुहार तुम्हें
मेरी यादें शत शत
दाढ़ी बनानेवाले
नापित तुम्हें
मेरी यादें शत शत
बिस्तर बनानेवाले
पिंजारी तुम्हें
मेरी यादें शत शत
मेरे जीने के लिए
सहायक
जन है सहस्त्र सहस्त्र
कहीं भी रहे,
वे कोई-भी हो, उन्हें
मेरी यादें शत शत।

बाजीगर

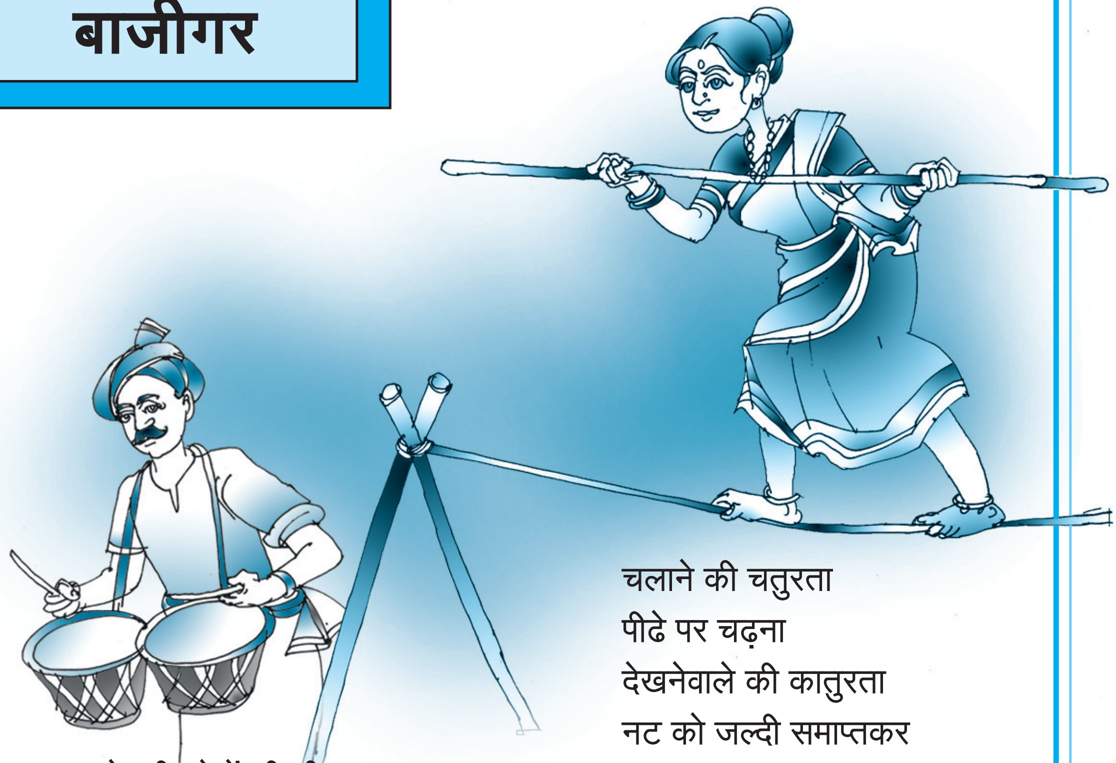

जमा हो रही लोगों की भीड़
नटों की देखने कलाबाजी
दूर करने उबाई
देखकर पैसे देने
थोड़ मन हर्षाकर पीठ पर
जीवन का जूआ चलाने
फुर्ति से चढ़कर लाठी पर
रस्सी पर कदम रखती गयी
नटी थोड़ा रुकी
एक लाठी पकड़ी
लाठी को आगे पीछे बढ़ाकर
नत होकर नाचती चली।
झटका न लगे ऐसा लाठी को
चलाने की चतुरता
पीढे पर चढ़ना
देखनेवाले की कातुरता
नट को जल्दी समाप्तकर
पैसा पाने की आतुरता
हड्डी ही न हो ऐसी
इसकी देह-धनुष
इसकी लता-से हाथ में
वह जो भी करें
मूक होकर देख रही हैं
जमी हुई भीड़ मैदान में
यह गाँव का सर्कस है
इसे देख लोग हुए खुश
ताली बजाते हर्षाये
खेल देख पसंद किये।
पैसा देकर काम की जल्दी में
घर की ओर निकल पड़े।

रंगों की होली

होली आयी होली
खुशी से दावा बोलो
आओ खेले होली
रंगों की यह होली!

तन को मन को गुदगुदी
स्त्री-पुरुष खेलते होली
होली गाते खुशी खुशी
रंगों की यह होली!

दीजिए हाथ में पिचकारी
रसिक बनेगा केवली
अर्पित करते वर्णांजली
रंगों की यह होली!

लोगों में जगाती लालसा
वैसे ही होली रसरंग
नीरसता को यह दूर करे
रंगों की यह होली!

कन्नड़ रक्षाकवच

कन्नड़ कवच
कन्नड़ कुंडल
कन्नड़ धनुष तरकस।
कन्नड़ रथ
कन्नड़ पथ
चलो जीवन समर में
कहाँ है भय
सर्वत्र जय
कन्नड़ पर विश्वासी वीर को

कन्नड़ पर करो विश्वास
देता है वह धैर्य
जीत कन्नड़ के हठी की।
कन्नड़ सिखाओ
कन्नड़ बचाओ
कन्नड़ बन जाय श्वास।
कन्नड़ का विकास हो
कन्नड़ की विजय हो
विख्यात हो कन्नड़ का नाम।

ऐसी बोली भारतमाता

ऐसी बोली भारतमाता
समझिए;
मुझे देखकर भिन्नताएँ
भूलिए;
माता की बोली की मिठास
बहाइए;
ओछापन, तुच्छता
छोड़िए;
अपने कार्य में मेरी गरिमा

बखानिए;
कालपट पर अपना नाम
लिख दीजिए;
काल-कर्म विधि के दाँत
उखाड़िए;
किसी पर किसी की भी अधीनता
मिटाइए;
बंजर भूमि में गंगा बन
बहिए;
उजड़ी भूमि में कृषिकार्य
कीजिए;
अंधतम में दीप बन
प्रकाशिए;
भूखे को अन्न बन
हाथ आइए;
बच्चों को गाय बन
दुहिए;
गरीब का सबकुछ
बन जाइए;
शत विध कलाओं में
पंडित बनिए;
जग पर हित भावना
बहाइए;
मुझे देख भिन्नताएँ
भूलिए;
कृतियों में मेरी महिमा
बखानिए।

हमारे नेता

कहीं भी रहो तुम
वहीं पहुँचेंगे
हमारे नमन
हमारे नेता!

कहीं भी रहो
हमारी ही चिंता
विमुक्ति के नेता
सुभाष त्राता!

और किस देश के
बच्चों का है ऐसा
लोहवक्ष के चाचा
को पाने का भाग्य?

उसका देशप्रेम
बड़े उद्देश्य के लिए
बनकर योग्य रहना ही
हमारा लक्ष्य जीवन का!

काल पथ में तुम्हारे
कदम के निशान हैं
हर एक कदम
बड़ी निशानी नेता की!

उस रोशनी पर कर विश्वास
बढ़ेंगे आगे यश तुम्हारा
दिशा दिशा फैलायेंगे
सुभाष त्राता!

तुम्हारी याद करेंगे नित्य
तुम्हारी याद ही सत्व
हमारे राष्ट्र रत्न
सुभाष त्राता!
तुम्हारे प्यार का पारिजात
बरसता रहे
हमारे सिर पर
हमारे नेता!

देशभक्ति दो
कार्यशक्ति दो
भय विमुक्ति दो
सुभाष त्राता!

ध्येय पर आसक्ति दो
प्रगति शक्ति दो
जय की युक्ति दो
हमारे नेता!

सोने की फसल

फसल के साथ आयी निराई
निकाल फेंक निराई
पौधे के साथ कचरा भी आया
मिटाओ सारा कचरा
रस के साथ कचरा भी आया
जला डालो कचरे को
भारतभूमि निर्मल हो
बढ़े पाकर यश
प्रतिभा, शील, नया प्रयत्न
उछले, फैले देश में।
साधनाओं के हीरे हैं इसमें
भाग्य रत्न कोश में
जंगल पहाड़ काटकर रचो
प्रगति का राजमार्ग
दोनों ओर सोने की फसल हो
नव नव युवा युवति रूपी।

चाह

अबतक जो अनजान था
जानने की चाह
अबतक जो न बढ़ा आगे
आगे बढ़ने की चाह
अबतक जो न देख सका
देखने की चाह
अबतक जो कुछ करना था
करने की चाह
पढ़कर घर में रोशन होकर
गाँव में चमकने की चाह
देश निर्माण में
मदद करने की चाह
आग लगे प्रदेश में
पानी हो बहने की चाह।
रोने वालों के
आँसू पोंछने की चाह
जाने क्या क्या चाह
बाल मन में
खींची जा रही है मुझको
धीरता की ओर
मैं तो छोटा हूँ मगर मेरी
चाह छोटी नहीं।
शक्ति दो भगवान
साधने इन सबको।

पार करूँगा

सियार से युक्ति में आगे बढ़ूँगा
हाथी से बल में आगे होऊँगा
वीरता में वनराज से आगे बढ़ूँगा
हठ में गरुड़ से भी आगे होऊँगा।

नर्तन में मयूर से बढ़कर होऊँगा
तोते से मीठी बोली में आगे बढ़ूँगा
हिरने को दौड़ने में, विहग दृश्य में,
कोकिला को गान में मात करूँगा।

काल निष्ठा में मुर्गे से आगे बढ़ूँगा
चींटी से परिश्रम में आगे बढ़ूँगा
कुत्ते से विश्वास में आगे बढ़ूँगा
गोह से पकड़ में आगे होऊँगा।

सबसे आगे, सबसे आगे
आगे बढ़ूँगा मैं अपने से भी
दूसरों को पार कर सकूँ या नहीं
अपने को पार करना ही बेहतर है।

कन्हैया, कन्हैया!

कन्हैया, कन्हैया तुमने
किसको दी बाँसूरी?
राधा को कहाँ छोड़ दिया?
मुकुट कहाँ रख दिया?
कन्हैया, कन्हैया!

दुष्टों का सिर पटको
कालिंग का फन मेटो
धर्म को बिठाओ गद्दी पर–
कन्हैया, कन्हैया!

गायों को घर भेजो
माथे पर कस्तूरी तिलक
उँगली में बड़ी अंगूठी
कन्हैया, कन्हैया!

पीतांबर पहन आओ
तुलसीमाला कंठ में धारो
चुराये माखन दे दो
कन्हैया, कन्हैया!

तुम भी जब थी मेरी उम्र की

माँ,
तुम भी जब थी मेरी उम्र की
क्या खेली थी गुड़िया का खेल
गुड़िया की शादी करायी थी क्या
मिठाई के लिए माँ को सताया था क्या ?

माँ,
तुम भी जब थी मेरी उम्र की
काठ-घोड़ी नचायी थी क्या ?
चबूतरे से कूदी थी क्या ?
सिंगार करने की इच्छा जतायी थी क्या ?

माँ,
तुम भी जब थी मेरी उम्र की
बाल गीत गाया था क्या ?
ताली बजाते दौड़ी थी क्या ?
गुड़ खाने को माँगी थी क्या ?

माँ,
तुम भी जब थी मेरी उम्र की
नानी की कथाएँ सुनी थी क्या ?
नाना की पीठपर बैठी थी क्या ?
पिता से शिकायत की थी क्या ?

तुम क्या बनोगे?

तुम क्या बनोगे ?
तुम क्या बनोगे ?
ऐसा पूछते हैं माँ।

तुमने क्या कहाँ ?
तुमने क्या कहाँ ?
ऐसा पूछती है माँ।

मैं मैं बनूँगा
मैं मैं बनूँगा
ऐसा कह दिया मैंने माँ ?

ठीक ही बताया
ठीक ही बताया तूने
ऐसा कह दिया माँ ने ?

उनके जैसा बनो
इनके जैसा बनो
ऐसा कहते हैं माँ।

तुमने क्या कहा ?
तुमने क्या कहा–
ऐसा पूछा माँ ने।

मैं मुझ-सा बनूँगा
मैं मुझ-सा बनूँगा
ऐसा कह दिया मैंने माँ।

ठीक ही बताया
ठीक ही बताया तूने
ऐसा कह दिया माँ ने !

क्यों माँ?

त्योहार तो एक ही दिन
स्कूल तो रोज़ ही –
क्यों माँ ?
दीदी तो पंचमी में एक बार
भाभी तो यहाँ कायम –
क्यों माँ ?
बरसात तो चार महीने
ओले तो कभी कभार बरसते
क्यों माँ ?
अंग्रेजी तो यहाँ तीनों पहर
कन्नड़ तो कभी कभी
क्यों माँ ?
तुम्हारा प्यार चारों पहर
पिता का प्यार कभी कभी
क्यों माँ ?

मास–माला

चैत्र में अंकुर निकलेगा
वैशाख में अधपका रहेगा
जेठ में पसीना निकलेगा
आषाढ में हवा दावा बोलेगी।

श्रावन में छायेंगे बादल
भादों में गीत आकाश में
आश्विन में हरियाली का राज

कार्तीक में गरजते बादल
मार्गशिर में सर्दी ठिठुरना
पुष्य में कुहरे का साम्राज्य

माघ में फसल का उत्सव
फाल्गुण में वसंत का बहार
मास-माला की यह शृंखला
अर्पित कर माँ को करूँगा नमन।

दिशाओं का गीत

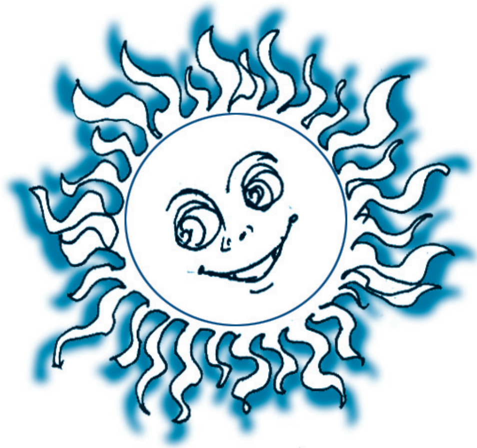

सूरज निकलता है
पूरब में
डूबता है वह
पश्चिम में
पूरब की ओर देखो
बाईं ओर में है उत्तर
देखो
दाहिने ओर है
दक्षिण दिशा
अब मालूम हुआ

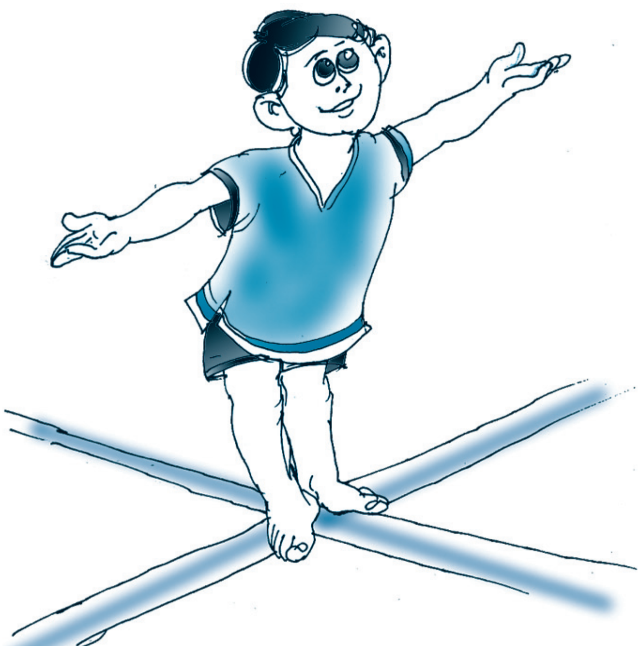

चार दिशा ?
पूर्व उत्तर बीच
पूर्वोत्तर
पूर्व दक्षिण बीच
आग्नेय
उत्तर पश्चिम बीच
पश्चिमोत्तर
दक्षिण पश्चिम बीच
नैरुत्य
दिशा आठ यों
गाया जाता।

जन्मदिन

आज हमारे मुन्ने का है
जन्मदिन
इसीलिए लिखी गयी है
छोटी-सी कविता
स्वच्छ तन, चमकीली आँखें
मुँह मुस्काता
रंगीन कुरता, जरीदार टोपी
और
ऊपर तुर्रा!
कदम कदम रखता
मुन्ना जब चलता
लगता सौंदर्य ही चल रहा हो,
बोले तो मुन्ना लगेगा गा रहा हो
तोहफे इतने जैसे बरस पड़े हों
जन्मदिन के लिए
मुन्ना ढूँढ रहा था डिब्बा
चाकलेटों का
बुजुर्गों का शुभ आशिश
हमारा तो हर्षोल्लास
भूल ही जाता पाठशाला
पढ़ना रटना, गिनना!

योग्यता बढ़ायेंगे !

राम का पात्र
करनेवाला क्या
राम ही बनेगा ?
सीता का पात्र
करनेवाली क्या
सीता ही बनेगी ?
बाघ के वेषधारी
क्या बनेगा बाघ ही ?
देवी वेषधारिणी
क्या बन जायेगी देवी ?
पात्र मुख्य नहीं
पात्रता है मुख्य
पात्रता पायेंगे !
वेष मुख्य नहीं
योग्यता मुख्य
योग्यता बढ़ायेंगे !

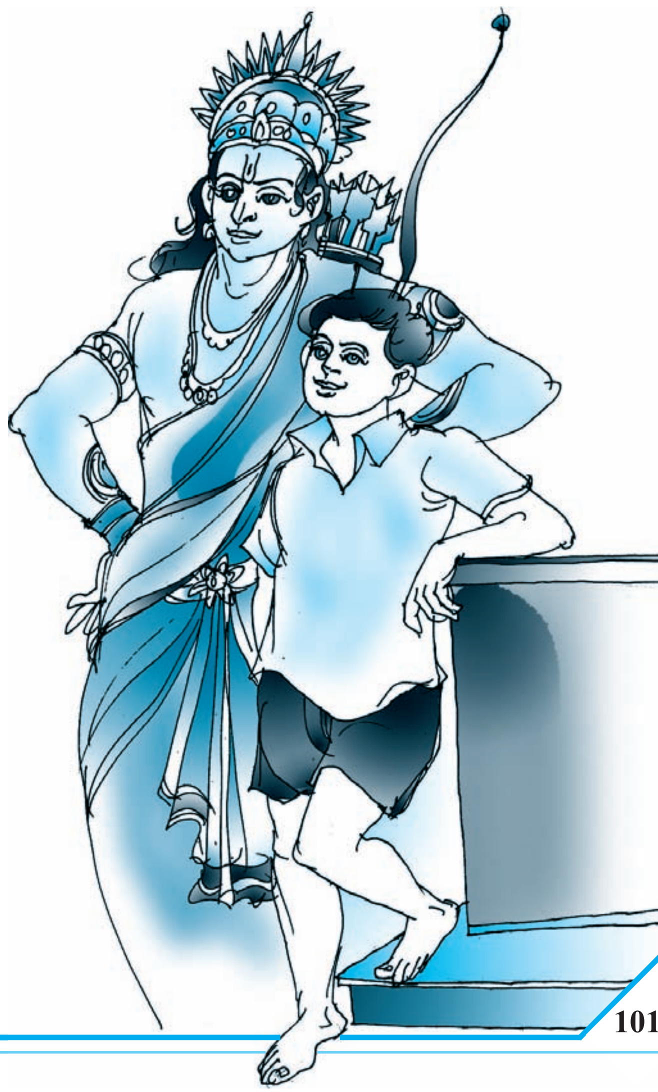

श्रृंखला

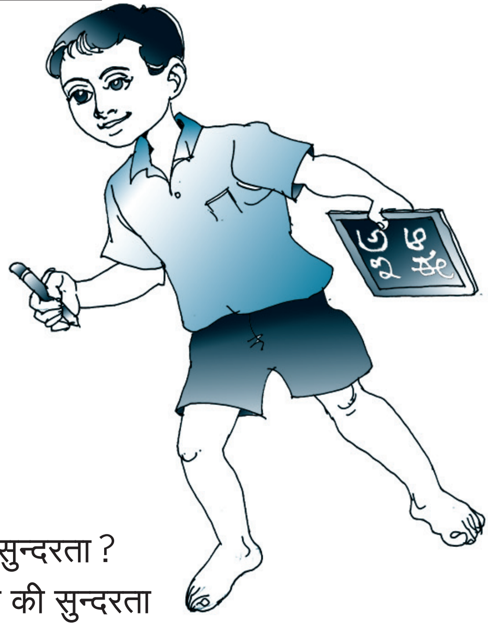

कन्नड़ कन्नड़
कौन-सा कन्नड़ ?
स्वादिष्ठ कन्नड़
कौन-सा स्वादिष्ठ ?
आम का स्वादिष्ठ
कौन-सा आम ?
मधु आम
कौन-सा मधु ?
कूर्ग का शहद।
कौन-सा कूर्ग ?
सुंदर कूर्ग
कौन-सी सुन्दरता ?
लड़की की सुन्दरता
कौन लड़की ?
बेंगलूर की लड़की
कौन-सा बेंगलूर ?
केंपेगौड़ा का बेंगलूर
कौन केंपेगौड़ा
कन्नड़भाषी केंपेगौड़ा
कौन कन्नड़भाषी ?
कन्नड़ सीखा कन्नड़भाषी।

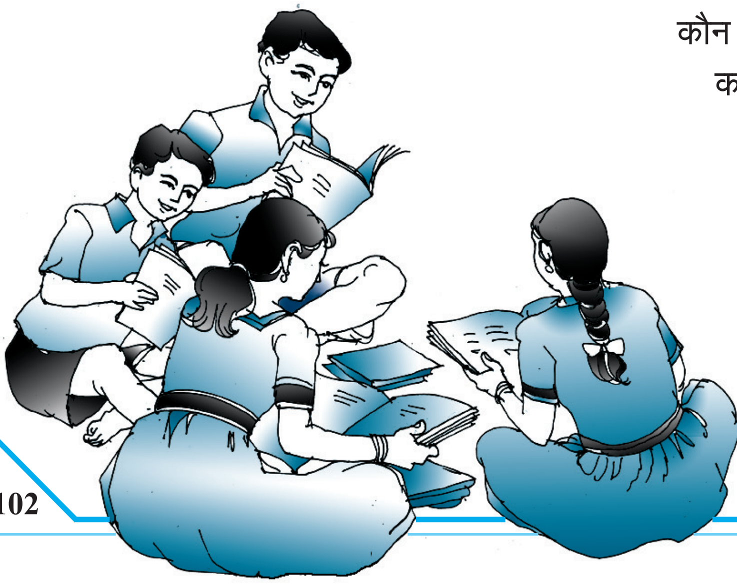

बताश

मेले में जाकर दादा लाये
बताश।
पोते खाये खूब
उल्लास से
भैया ने खाया बताशे का घोड़ा
छोटे भैया ने खाया रथ।
दीदी ने खाया हाथी।
छोटी बहन ने खाया महारथ!
बंदर को खाने नहीं कोई –
तैयार, उसके साथ खेलने पर भी
गणपति पूजकर, घंटी बजाते
नाच उठे मोद-अमोद में।

मुक्तक

उगादि में नीम व गुड़
संक्रांति में तिल व गुड़
कोई भी त्योहार आए
खाली हाथ कोई न आए।

* * *

खेत में ज्वार की बाली
बगीचे में केले का पेड़
घर के सामने मोगरा
लदा हुआ है कलियों से।

* * *

घर में माँ का पीसने का गीत
खेत में पिता का कतार बाँधते गीत
भिक्षुक आये तो दासों का गीत
शाला में तो नीति का गीत।

* * *

मैंने पाला इक कुत्ता
कहीं से हड्डियाँ लाकर
आंगन में फेंक देने पर
भगा दिया नानी ने तुरंत।

* * *

पगला आया दाँत निपोरता
पहने कपड़े को फाड़ डालता
हँसता रोता, चिल्लाता बुलाता
पास से गुजरे तो डर गया कहता।

* * *

मिट्टी के बैल को सजाकर
पीठ पर रेश्मीवस्त्र ओढ़ाकर
हल्की गाड़ी को बंधवा दिया
काई के लड़के को हाँकने देकर।

* * *

भोले ने लट्टू घुमाकर
खुशी खुशी से उछला
भैया ने आकर छीन लिया
तब छोटा भैया रो बैठा।

* * *

पेड़ में चिडिया का कलरव
घर में मुन्ने का कोलाहल
सुनते दोनों को पालतू कुत्ते ने
खोली आँखें कुतूहल से।

* * *

लंगड़ा आया नाचते
बैठे हुओं पर रखते पैर
सहारा लेकर
निकल पड़ा झटके से।

* * *

चाहे हारे, चाहे जीते
खेलो खेल खेलो।
खेल खेलने को ही है दोस्त
खेलो खेल खेलो!

संपेरा

आया एक संपेरा गाँव

लाया साथ साँप समूह

नाग साँप

हरा साँप

गिरगिट साँप

तरह तरह के साँप

झगमग चमकते साँप

उछलते साँप

कांतियुक्त साँप

टोकरी से
एक एक को निकालता
दिखाता रहा संपेरा
कालानाग देखते ही
बच्चा घबराकर
चिल्ला उठा
साँप को
मरोड़कर
बनाकर गले का हार
उसे बच्चे के
कमर में कमरबंद बनाता
ब्राह्मण बालक को
उसे नये ढंग का जनेऊ
लिंगवंत को बनाता
चमकता हुआ शिवसूत्र
बालकों का भय भगाकर
देखते देखते ही
बालकों को हँसाया
साँप की टोकरी
पैसे की थैली बनी
लोगों ने दिये पैसे
उस दिन की याद
आज भी देती खुशी!

बनिये की युक्ति

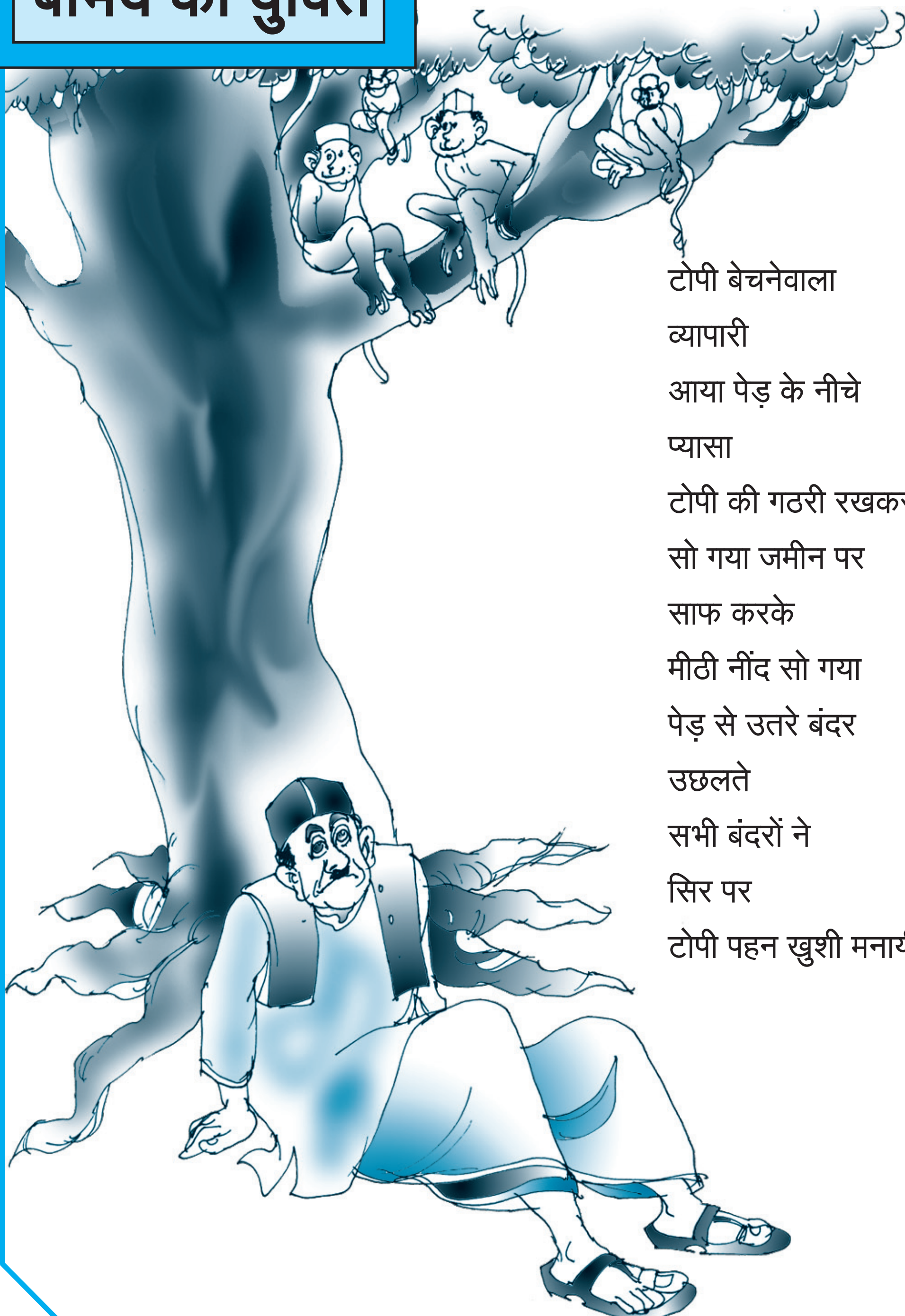

टोपी बेचनेवाला
व्यापारी
आया पेड़ के नीचे
प्यासा
टोपी की गठरी रखकर
सो गया जमीन पर
साफ करके
मीठी नींद सो गया
पेड़ से उतरे बंदर
उछलते
सभी बंदरों ने
सिर पर
टोपी पहन खुशी मनायी!

टोपी पहन
पूँछ हिलाते
उछलने लगे डाली डाली पर
बनिया जगा
देखा टोपी की गठरी
खाली
देखा चारों ओर
पता नहीं
ऊपर देखा पेड़ पर
बंदर सब टोपी में
मजे में बैठकर
चिढ़ा रहे थे
बनिया चढ़ा
तुरंत पेड़ पर
बंदर तो पेड़ की
चोटी पर
डाली डाली पर
उछलते कूदते
कुछ तो लता
पकड़ झूलने लगे
बनिये के हाथ में
न लगा एक भी
तो बनिया उतरा नीचे
सोचा बनिये ने
शक्ति से युक्ति भली,
अपनी टोपी को
उतार फेंका तो
देखता क्या है।
बंदरों ने भी
फेंकी टोपी
बनिये ने खुशी से
बटोर ली टोपियाँ
गठरी टोपियों की
उठाकर चल दी
अपनी राह!

हम मूढ़ बने तो कैसे?

हमारा देश है बड़ा
        हम छोटे बने तो कैसे?
हमारा देश है धनी
        हम गरीब बने तो कैसे?
हमारा देश है धार्मिक
        हम अधर्मी बने तो कैसे?
हमारा देश है नैतिक
        हम नीतिहीन हों तो कैसे?
हमारा देश है श्रमजीवियों का
        हम कामचोर हों तो कैसे?
हमारी शाला है विवेकियों की
        हम अविवेकी बने तो कैसे?

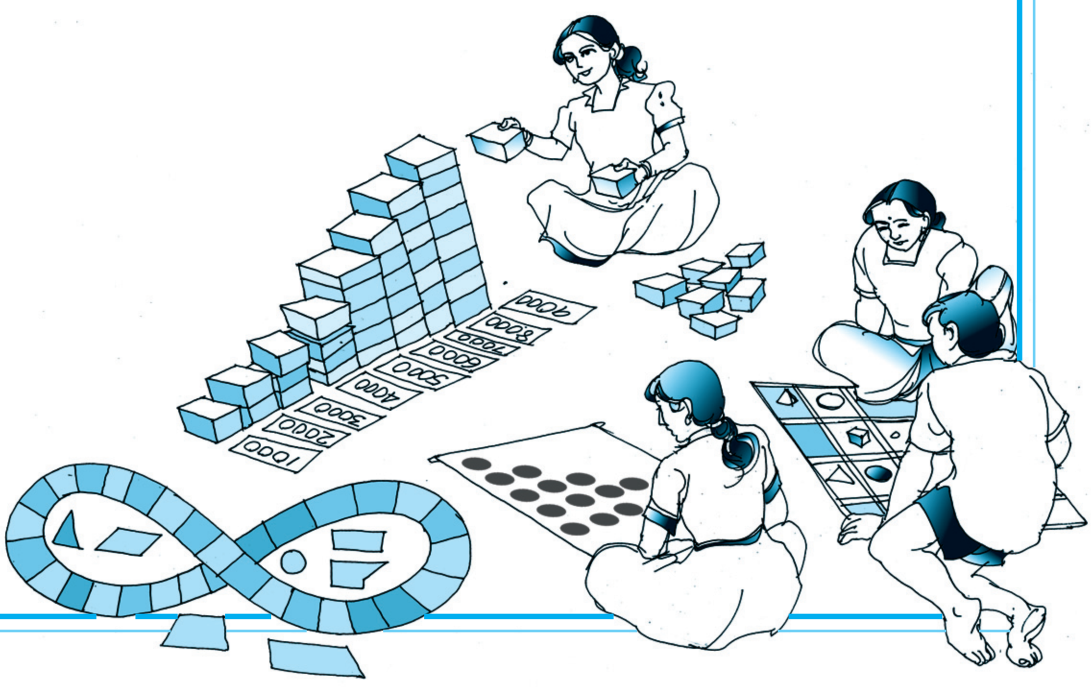

बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय!

बहुजन हिताय,
बहुजन सुखाय,
इस नीति पर अर्पित हो
मेरी सेवा, संपत्ति
बहुजन हिताय,
बहुजन सुखाय!

छोटा होने पर भी
ओछेपन से मैं
लेता हूँ बिदा
बहुजन हिताय
बहुजन सुखाय
इस नीति पर अर्पित हो
मेरी सेवा, संपत्ति!

जो सब की नहीं
वह संपत्ति अभिशाप
वंचना कर दूसरों की
सुख पाना है पाप
एक का विलास
सब का ताप
सब का खुशी खुशी से जीना
है उपाय एक ही
बहुजन हिताय
बहुजन सुखाय!

आइए, दोस्तो
आइए, बच्चो
लाइए, सद्‌हृदय
सब के हित के लिए
सब के सुख के लिए
कीजिए दैहिक श्रम
बहुजन हिताय
बहुजन सुखाय
इस नीति पर अर्पित हो
तुम्हारी सेवा-संपत्ति
यही है सच्चा-न्याय!

झंड़ा एक ही भारत का

झंड़ा एक ही भारत का
संविधान एक ही भारत का
एक ही सबका स्थान सम्मान
एक ही सबका संरक्षण
अर्पित कर लिया है अपने आप पर
करने को सच में।
समान न्याय समान समझौता
प्राप्त हो सबको
बहुभाषा के बहु धर्मों के
भारतीय सभी को
धार्मिक लौकिक सांघिक बौद्धिक
स्वातंत्र मिले सबको

हरेक के हित में एक का हित है
सबके लिए सब है
एक का कष्ट सबकी हानि है
देश है सबके हित के लिए
भारत के झंड़े के नीचे श्रम करेंगे
सबके हित के लिए
झंड़े की रक्षा करेंगे तो
रक्षा करेगा झंड़ा
प्रगतिपथ में बढ़ने।

न्याय निर्णय

(अरेबियन् नाइट्स कथा' का बाल-नाटक के रूप में रूपांतर)

खलीफ़ा हारून-उल-रषीद के समय में घटी कही जानेवाली यह कथा बहुत रोचक है। इसमें बच्चों का पात्र प्रमुख हैं।

(बागदाद की सड़कों पर बच्चों का खेल)

देश की नाड़ी में लहू हैं हम
भाषा की लता में फूल हैं हम
कल के सपने का अर्थ हैं हम, हम बालक हैं!
हम से बढ़कर क्या है ?
हमारी हिम्मत के लिए अंत कहाँ ?
सारा लोक ही हमारा घर है। हम बालक हैं!
बागदाद के भाग्य का द्वार खोलेंगे
देश की गौरव गाथा लिखेंगे
जीवन में नये नये मोड़ लायेंगे, हम बालक हैं!

अच्छों को हमारी मदद ही मनौती है

दुष्टों से हमारा कुछ न बिगड़ेगा।

न्याय का अभाव कभी न हो, हम बालक हैं!

जकि : आज कौन सी सड़ी मछली पड़ेगी जाल में देखेंगे।

जाकोब : जकि, हमारे नसीब में रोज़ सड़ी मछली पकड़ना लिखा है।

जकि : तुम्हारी यहूदी बुद्धि कहाँ जायेगी, जाकोब। सड़ी मछली तालाब में ही सड़ती रही। अच्छी मछली ले जाकर खाये। ऐसी हुई तुम्हारी बात। मगर याद रखो, एक सड़ी मछली ही काफी है तालाब के पानी को बिगाड़ने के लिए। इसलिए सड़ी मछली को तालाब से निकाल फेंकना ही पवित्र कार्य है। अच्छी मछली पकड़ने वालों का अभाव कहाँ?

जय : ठीक बताया तुमने जकि, तालाब साफ हो तो सबको अच्छी मछली मिलेगी। पहले सड़ी मछलियाँ उठाकर फेंकना, बाद में अच्छी मछली पकड़ने का काम।

जकि : भारत भूमि के लिए योग्य बात की तुमने जय। इस बागदाद के तालाब में सड़ी मछली दिखाई पड़ी तो उसे फेंकने का काम ही हम आगे बढ़ायेंगे। इससे हमारे नगर का नाम श्रेष्ठ ही रहेगा। अच्छे लोगों को सुखी जीवन बिताना संभव होगा।

जार्ज : छोटों के लिए जिनको मार्गदर्शक बनना है ऐसे बुजुर्ग ही गलत रास्ते पर चले तो उन्हें हमारे नगर के तालाब की सड़ी मछलियाँ समझे बिना कोई और चारा नहीं, जकि।

जकि : सच कहा तुमने जार्ज। जो बुजुर्ग समझते हैं कि उन्हें छोटे लोग इज्जत दें

		तो उन्हें उस इज्जत के लायक होना चाहिए न? न्याय, नीति, प्यार, विश्वास के लिए अपने चाल चलन में स्थान न देने पर भी छोटे लोग उन्हें इज्जत दें। बड़ों की चाल छोटों में। जो न्याय नीति बुजुर्गों में नहीं छोटे लोगों में कहाँ से आयेगी?
जय	:	नहीं आयेगी जकि। ऊपर वालों के अनुसार ही नीचेवाले चलते हैं। परंतु, यदि वे गलत मार्ग पर चलें तो हमें भी गलत रास्ते पर नहीं चलना चाहिए। हमारा ध्येय होना चाहिए कि हम न्याय के अनुसार चलकर अन्याय के मार्ग पर चलनेवालों को फँसाये।
सभी	:	हम सब इसे मानते हैं।
जकि	:	वह देखो, कोई इस तरफ़ आ रहे हैं रात के अंधेरे में। इस पेड़ के पीछे छिपकर देखें कि क्या हो रहा है। जैसे कल रात किसी लड़की पर हाथ उठाने का प्रयत्न करनेवाले दुष्टों को बाँधने के समान इन्हें भी पकड़ेंगे। (सभी चले जाते हैं)
		(बागदाद में अली का घर। वह सो गया है। उसके सपने में एक निंदा की आवाज़ सुनाई पड़ती है। ''अली, ए अली, तुम अभी मक्का नहीं गये हो?'')
अली	:	(घबरा कर उठते हुए)

फिर वही प्रश्न! वही डाँट-फटकार! तीन दिन से सपने में इस डाँट-फटकार को सुन रहा हूँ। अब देखना चाहिए। सभी लोक के प्रभु, परम दयालु अल्लाह ने कैसे कठिन हालात में मुझे पार किया है। कितनी ही रीति से, कितने ही प्रकार से मदद की है। मुझे पवित्र मक्का पहले ही जाकर मेरा कर्तव्य पूरा करना था। मानव सहज भुलावे से, धन के

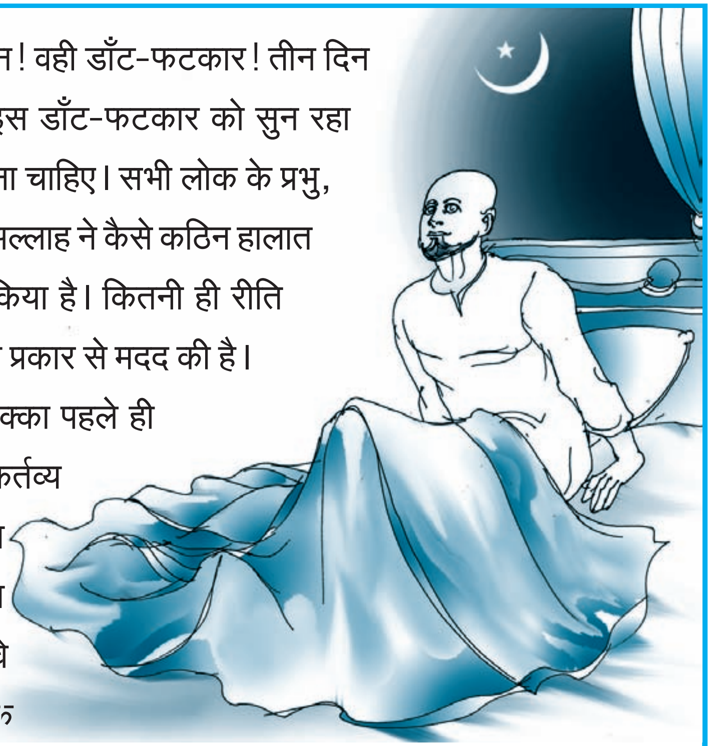

लोभ से और घर-बार के मोह से अब तक न जा सका। अब देर न करना चाहिए। मक्का चलना ही चाहिए। शादी होने पर जाने और कौन से मोह पाश में मुझे फँसायेगा! शादी से पहले ही मक्का हो आना है। घर किराये पर दे सकते हैं। जो कुछ है बेचकर, पवित्र मक्का यात्रा के लिए आवश्यक धन ले जा सकते हैं। बचे तो बाद में देखेंगे। मक्का चलो, मदिना चलो, मक्का चलो।

(अली हाथ में छोटी घंटी पकड़कर पूछताछ करते आता है।)

अली : घर तो किराये पर दिया गया।दुकान में जो समान था उसको बेचा भी गया। लेखा-जोखा करने पर यात्रा के लिए आवश्यक धन से एक हज़ार से भी अधिक मोहर बचे न! इस बचे धन को कहाँ, कैसे किनके यहाँ रखें। यह तो अच्छी सोच है मेरे परिचित विश्वासी उस व्यापारी के यहाँ रखे तो? धन का मोह निराला होता है। वह व्यापारी अविश्वासी हो तो! हाँ, ऐसा करेंगे कि बचे

हुए मोहरों को एक बर्तन में रखकर ऊपर जैतून फल को रखकर उसके मुँह को अच्छी तरह बंद कर दे तो, उसे भी मालूम न होगा। यही सही योजना है।

(इस प्रकार सोचते हुए आगे बढ़ा तो व्यापारी ही सामने आ गया।)

व्यापारी : क्या अली! किस विचार में मग्न हो ?

अली : जिस लता को ढूँढ रहा हूँ, उसीके पैर में फँसने जैसा हुआ। मैं तुम्हारे घर के लिए निकला था। परम प्रभु अल्ला के दर्शन के लिए मक्का-यात्रा करनेवाला हूँ। मैंने अपनी सारी जायदाद बेच दी है। ये फल बचे हैं। मेरे लौटने तक

उन्हें विश्वासी मित्र तुम्हारे पास रखकर जाना चाहता हूँ। इसीलिए तुम्हारे पास आ रहा था। इन्हें मेरे आने तक रख लो।

व्यापारी : भगवान के दर्शन के लिए निकले आदमी की इतनी मदद न कर सकने वाला अविश्वासी हूँ क्या। चलो, अभी घर जायेंगे। तुम ही अपने पसंद की जगह इन्हें सुरक्षित रखो। उनकी हिफाजत की जिम्मेदारी मेरी है। चलो चलें (जाते हैं। अंदर जाकर वापस आते हैं और सड़क पर बात करते हैं।)

व्यापारी : हाँ, तुमने ही अपनी इच्छा के अनुसार जैतून के फल बर्तन में डालकर तुम्हीं उस कमरे में रखकर आये न!

अली : लो यह चाबी। तुम्हारा उपकार मैं न भूलूँगा। अल्ला से तुम्हारी भलाई की प्रार्थना कर आऊँगा।

व्यापारी : खुदा हाफ़िज! फिर आइये। तुम्हारी यात्रा सुखकर हो।

(दोनों मक्का चलो, मदीना चलो कहते जाते हैं)

(अली के बर्तन रखे व्यापारी के घर में)

व्यापारी : यह क्या बेगम् रात का खाना भी तुम्हें रुचिकर नहीं लग रहा है। गर्भवती औरत का खाना गर्भस्त शिशु को भी आहार देनेवाला होना चाहिए। यदि तुम ही रोज़ खाना कम करती रहोगी तो तुम्हारे गर्भ में विकसित हो रहे हमारे

जीवन रूपी
लता की कली मुरझा नहीं
जायेगा क्या ?

बेगम : क्या करूँ मेरे राजा! जो भी लाकर रख दे, जाने क्या क्या चाह मन को पीड़ा दे रही हैं। मेरी चाह पर मुझे ही लज्जा हो रही है।

व्यापारी : गर्भवती की चाह सहज है बेगम। उन्हें पूरा करने में ही पति को आनंद। तुम्हारी चाह को पूरा करने का मतलब है कि आगे हमारे आनंद का फौवारा बन रहे शिशु की चाह को पूरा करने के समान है। पति के रूप में तुम्हारी चाह को, पिता के रूप में आगामी शिशु की चाहों को पूरा करने को तैयार हूँ। जल्दी बताओ, तुम्हारी इच्छा क्या है ?

बेगम : सुनाती हूँ। मगर यह कैसी विचित्र चाह है कहकर हँसना नहीं।

व्यापारी : हँसूगा नहीं। मेरी कसम, हँसूगा नहीं।

बेगम : वैसा कुछ नहीं, मुझे जेतून के फल खाने की इच्छा है।

व्यापारी : यह तो बड़ी चाह नहीं है बेगम। परंतु इस आधीरात को कहाँ से लाऊँ जैतून

के फल ? (याद करके) हाँ, मेरा दोस्त अली जैतून फलों का बर्तन घर में ही रख छोड़ा है। उसे गए सात साल हुए, उसकी खबर तक नहीं। जाने कहाँ गया। इस लोक में है या परलोकवासी है, कौन जाने ? मैं अंदर जाकर उस बर्तन को खोलकर कुछ ही जेतून के फल लाऊँगा। तुम तृप्त होने तक खाओ, बचे तो मैं भी थोड़ा उसका स्वाद चखूँगा।

बेगम : तोबा, तोबा, ऐसा हीनकृत्य करने में मन लगाना ठीक है क्या ?अल्ला मानेगा क्या इसे ? दूसरों की चीज़ हड़पने से उपवास करके मरना भला है। अलावा इसके अली की खबर न मिलने से कैसे निर्णय ले सकते हैं कि वह मर गये हैं। आज नहीं तो कल यदि वह आकर पूछे अपनी चीज़ वापस लौटाने के लिए तो किस मुँह से आधा खाली बर्तन उसे देंगे। तब हमारे परिवार की इज्जत मिट्टी में मिल जायेंगी न ? इज्जत खोना मरने के समान है न ?

व्यापारी : तिल को पहाड़ बनाने में तुम से बढ़कर कोई नहीं बेगम। अली के बर्तन से मैं मुट्टि भर जैतून के फल लाऊँगा। वे क्या सोने के मुहर हैं ? इतनी-सी बात को बड़ा बनानेवाला मूर्ख नहीं है वह। गर्भवती की चाह पूरा करने को इन फलों का उपयोग सार्थक समझ खुश होगा।

बेगम : अब मुझे नहीं चाहिए। वह चाह अब नहीं। सुना है कि आदम की पत्नी का निषिद्ध फल माँगना ही उन दोनों की अधोगति का कारण बना। मेरी चाह के कारण मेरा परिवार नष्ट न हो जाय। ये जेतून फल ही नहीं चाहिए। मुझे स्वर्ग के अमृत फल भी नहीं चाहिए।

व्यापारी : तुम्हारे लिए नहीं चाहिए तो क्या मेरे लिए भी नहीं चाहिए, बेगम। मैं उन फलों के बारे में भूल ही गया था। तुम्हारे कारण वह बात याद आ गयी। अब न चाहिए कहोगी तो मैं चुप रहूँगा क्या ? सोई हुई इच्छा को न जगाना आसान

		है। परंतु जागृत इच्छा को नियंत्रण करना आसान है क्या ? मुझे वह बर्तन खोलना ही चाहिए। उन फलों को चखना ही चाहिए।
बेगम	:	मित्र द्रोह मत कीजिए। नीति-नियमों को हवा में मत उड़ाइए। घर की इज्जत मत बेचिए। आँचल पसार कर प्रार्थना करूँगी। उस बर्तन के पास मत जाइए।
व्यापारी	:	बेगम, तुम्हारे इतना कहने पर मैं केवल दो फल चख कर आ जाऊँगा। सिर्फ दो। तीसरा छुऊँगा तो तुम्हारी कसम।
बेगम	:	दो खाये तो क्या, सौ खाये तो क्या। पाप पाप ही है। तिस पर सात साल के बाद के उन फलों में कैसी रुचि मिलेगी आपको ? सुबह होते ही मैं नये रस भरे जेतून फल ला दूँगी। सुबह होने तक सब्र कीजिए। तब तक आपकी

इच्छा पूर्ण न हो तो आसमान गिर तो न जायेगा।

व्यापारी : वैसा ही हो बेगम। वैसा ही हो। परंतु उस बर्तन को देख आऊँगा कि वह उसी स्थान पर है या नहीं। तुम यहीं रहो।

(अंदर जाकर बर्तन खोलकर देखा और बर्तन उठाकर सारा फल नीचे गिराया। आश्चर्य से कह उठा)

व्यापारी : या अल्लाह! फल सब सड़ गये हैं। फलों के बीच से निकली चमकती ये वस्तु क्या है ? आह! सोने की मोहरें। और भी होंगे अंदर। (पूरा गिराकर देखता है। जैसे जैसे गिराता है, सोने की मोहरें) आह! सैकड़ों मोहरे। मुझे मूर्ख बनाने के लिए अली ने ऊपर फल रखकर अंदर मोहरों को भर दिया है क्या ? जब उसने मुझे धोखा दिया तो यदि मैं उसे धोखा दूँगा तो क्या गलती होगी ? जब उसने मुझपर पूरा भरोसा न किया तो मैं क्यों ईमानदार बनूँ? एक हज़ार मोहरें, चमकती मोहरें। आज मैं धनी हो गया। मुझे इन्हें हड़पना ही चाहिए। धनी बनना ही चाहिए। आज तुम खुशी से नाचो। थैली में मोहरे डालने की आवाज़। उसी समय बाहर जकी, जाकोब, जय, जार्जर उछलते कूदते गाते रहते हैं)

विश्वासी का गला काटनेवाले
हे दुष्टों याद रखिये,
धोखा देंगे तो वह पाश बनेगा।

कोई देखे न देखे
जो पातक तुमने किया
एक है जो सब कुछ देखता,
इसे मत भूलो भाई।
घर की दीवार क्या छिपा देगी
तुमने जो पाप किया ?
बहती हवा ही पता देकर
दिलायेगी सज़ा भाई।
चोरी करनेवाले हाथ को रोको
मन को नकेल लगाओ
मनुजता को मत बेचो
धन के लिए मत बेचो घर की
इज्जत!

व्यापारी : (घबराकर) आ गये क्या

ये बालक, दुष्ट लड़के। खलीफ या सेवकों की आँखों से बच सकते हैं, काजी की आँख से बच सकते हैं, मगर बागदाद के इन आवारा बच्चों की आँख से बचना संभव ही नहीं। रात होते ही शुरू इनका स्व प्रेरित गश्त लगाना। इनकी आँख हम जैसों पर ही। आज इतना बस है। आगे का काम इनकी आँख बचाकर करेंगे। (कमरे का दरवाज़ा बंद करके आकर) बेगम, तुमने जो कहा वह बिलकुल सच है। जेतून के फल सड़ गये हैं। उन्हें बर्तन में ही भरकर आ गया।

बेगम : अच्छा ही हुआ। फिर भी दूसरों की वस्तु को स्पर्श करने का पाप हमें लगा है। अल्लाह इसके लिए क्षमा करे और हमारी रक्षा करे।

व्यापारी : आमीन! सदआमीन! ऐसा ही हो बेगम, मैं शहर जाकर आऊँगा (सड़क पर चलते) शहर जाकर नये जेतून के फल लाऊँगा। उन्हें ऐसे बर्तन में रख दूँगा कि बेगम को मालूम न हो। अब उसमें जो मोहरें थीं वह मेरी हो गयीं। (कहकर हँसता जाता है)

(शिराज शहर के रास्ते में अली और उनके यात्रिक ऊँटपर सवार होकर निकले हैं। ऊँट के गले में बाँधी घंटी की आवाज़ पृष्ठभूमि के संगीत के समान पीछा करती है)

अली : दोस्तो, तुम लोगों के स्नेहमय वातावरण में हमने यात्रा की। पवित्र काबा में विश्व के विभिन्न भागों से धर्म-बंधुओं के साथ नमाज़ करने का भाग्य पाया। अलावा इसके लोक प्रसिद्ध शहरों को देखने का अच्छा मौका मिला। आप लोगों के स्नेह-सौहार्द मैं कभी नहीं भूल सकता।

व्यापारी-1 : मक्का यात्रा का फल तुरंत हमें मिल गया अली। कहाँ का बगदाद कहाँ का मक्का! कहाँ का कैरो कहाँ का जेरूसलेम! और कहाँ का डमास्कस कहाँ का शिराज! एक यात्रा में इन सबको देखने का भाग्य हमारा हो गया। हम ही धन्य हैं।

व्यापारी-2 : हाँ, उस कैरो शहर के पिरामिड् कितने भव्य है! नील नदी में हमने जो नौकाविहार किया कितना खुशहाली था!

व्यापारी-3 : जेरूसलेम के मंदिर की दिव्यता को भूल गया क्या?

व्यापारी-4 : आहा! डमास्कस के बगीचों का दृश्य कितना मनोरम! वह सिरिया शहर की शोभा भूली न जाती! हमें सबसे ज्यादा दिन रोका था उस शहर की रमणीयता ने।

अली : वैसे तो हरेक शहर वैशिष्ट्यपूर्ण ही है। शिराज भी वैसे ही है। परंतु भारत देखने के बाद हमें और किसी जगह को देखने की चाह न रहेगी। कैसी खूबसूरती! कैसा समृद्ध संपन्न देश; कैसे सुंदर सुसंस्कृतों का देश! भारत भूलोक का स्वर्ग ही है।

व्यापारी-1 : हाँ, मान गया।

व्यापारी-2 : हाँ, मैं भी मान गया।

व्यापारी-3 : हाँ हम भी मान गये।

अली : वह सब ठीक है। अब तो हमें बगदाद लौटना ही है। बगदाद छोड़कर एक, दो नहीं पूरे सात साल गुज़र गये। अब मुझसे ठहरा नहीं जाता।

सभी व्यापारी : हम से भी नहीं होगा।

अली : शिराज में एक दो दिन रहकर चल पड़ेंगे।

व्यापारी-1 : इसके लिए क्यों रुकावट अली। बीबी बच्चेवाला न होने पर भी तुम जब इतने कातर हो तो हम बीबी बच्चों वालों में और कितनी कातरता होगी? सभी ऊँटों को थोड़ा तेज़ चलाइए। (सब मिलकर गाते निकलते हैं।)

समूह गान

हे, रेगीस्तान की नौका
भूमि के हाथ का कंगन
मन लुभाता साहसी
चलो तेज़ चाल चलो
घर वापसी का प्रयाण है।

हे कष्टजीवी ऊँट
हे सुंदर घंटीका
घर लौटने क्यों तकरार?
चलो तेज़ चाल चलो
घर वापसी का प्रयाण है।

आठ दिन का चावल पानी
आज एकसाथ पूरा निगलो
चलो खींचते हमारा रथ
चलो तेज़ चाल चलो
घर वापसी का प्रयाण है।

सिर्फ हमारे ही है क्या
बच्चे तुम्हारे नहीं?
बच्चों बिना जीवन सूना
देखो बुला रहे बालवृंद
चलो तेज़ चाल चलो
बच्चों की ओर प्रयाण है।

(अली व्यापारी का घर आता है)

व्यापारी : ओ अली! (कहकर अली को गले लगाकर) आ गया बंधु, अली तुम्हारी मक्का यात्रा तो सुखकर रही? कुशल तो हो!

अली : अल्लाह की कृपा से कुशल हूँ।

व्यापारी : ये लो। बर्तन, तुमने जो रखा था। आज से इस अमानत की जिम्मेदारी पूरी हुई। (कहते हुए द्वार खोलकर बर्तन अली के हाथ में देता है।)

अली : तुम कैसे महानुभाव हो! तुम जैसे ईमानदार मित्रों के रहने से ही सुबह-शाम हो रहे हैं। ठीक है, मैं फिर आऊँगा। खुदा हाफ़िज! (अली घर आकर बर्तन खोलकर बाहर निकालता है। मोहरे नहीं देखता। घबराकर, ''हाय! मेरी कमाई की संपत्ति गायब हो गयी! कहकर व्यापारी के घर आता है।)

अली : भैया! तुमसे एक बात छिपा रखी थी मैंने। उस बर्तन में एक हज़ार अशर्फियाँ डालकर ऊपर जैतून के फल भरे थे। अब देखता हूँ उसमें सिर्फ फल भरे हैं, मोहरें गायब हैं! क्या तुम्हें मालूम है कि उनका क्या हुआ?

व्यापारी : यह क्या कह रहे हो! यह क्या सुन रहा हूँ अली? उसमें मोहरें थीं क्या? यदि तुम उसी दिन कहते तो मैं गिनकर बर्तन में रखता और बर्तन को अपने पास रखूँ या नहीं, निश्चय करता। तुमने कहा सिर्फ फल हैं। मैंने उस बात पर विश्वास करके कम मूल्य की वस्तु समझकर रख लिया। रख लेने के उपकार के बदले अब मुझ को अपराधी बना रहे हो। मक्का इसलिए गये थे कि चोर बनकर लौटे। किसी किसी देश में देखकर तुम भी देश में ठग विद्या सीखकर आये हो? पवित्र कुरान छूकर उसी हाथ से दूसरों की चीज़े स्पर्श कर सकता हूँ क्या मैं? तुमने क्या समझ रखा है मुझको?

अली : गुस्सा मत करो। मैं हकीकत बता रहा हूँ। मैं मानता हूँ कि मुझे बताना चाहिए था कि उसमें मोहरे हैं। मगर इस एक गलती के लिए मैं अपनी जीवनभर की कमाई से हाथ धोऊँ? मुझ पर रहम करो भाई।

व्यापारी : ओह! मुझे ही चोर बता रहे हो क्या अली? तुम जैसों के लिए जो उपकार किया वह अर्थी का शृंगार जैसा! सात सालों तक तुम्हारे बर्तन की हिफाज़त करने का फल बहुत खूब दे रहे हो अली। आइंदा तुम्हारी छाया भी मेरे आंगन पर न पड़े। चले जाओ, यहाँ एक पल भी न रुको। हट जाओ।

अली : जाऊँगा भैया। अब तेरी मेरी मुलाकात अदालत में ही होगी!

व्यापारी : ज़रूर! तुम्हारे पास सबूत हो तो अदालत में जाओ।

अली : बाहर का कोई सबूत नहीं। मगर अंत:साक्षी है; सर्वसाक्षी अल्लाह है। यदि कोई इन्साफ है तो मुझे मिलना ही चाहिए।

व्यापारी : सुबहानुल्लाह। सुबहानुल्लाह! कैसी बात कह दी अली। इस बात के लिए ही सही तुम्हें हज़ार मोहर मिलनी ही चाहिए! हा, हा, हा!

(दूसरा दृश्य जिसमें अली काजी से न्याय माँग रहा है)

काजी : अली भाई कहते हो मेरे पास कोई भी सबूत नहीं, फिर कहते हो हज़ार मोहरें मिलनी ही चहिए। यह कैसे संभव होगा अली भाई?

अली : काजी साहब, सजीव आदमी के सबूत से निर्जीव सबूत श्रेष्ठ है क्या? फिर गवाह की बात। सात साल बाद जब मैं दूर देश में था तब जो बेइमानी हुई उसे किसने देखा होगा? बिना देखे मेरी ओर से कौन गवाह देगा?

काजी : अली भाई, सच है कि निर्जीव कागजातों से आदमी की बात को ज्यादा मूल्य देना चाहिए। यह तभी संभव है जब आदमी अपनी बात का पालन करे! अल्लाह ने आदमी को वर दिया उसमें वाक् चातुर्य भी एक है। मगर आदमी इस वाक् चातुर्य का सदुपयोग न करके अपनी बात का ही मूल्य न रहे, ऐसा प्रयोग करता है। इसलिए निर्जीव कागजातों के लिए उसकी बातों से ज्यादा मूल्य मिलता है। यदि वह सच्चा हो, ईमानदार हो तो अदालतों की ज़रूरत क्यों पड़े? तुम्हारा मामला ही ले लो। यदि तुम कह देते सचसच कि बर्तन में मोहरें हैं तो यह मामला पैदा ही न होता।

अली : मान गया काजीसाहेब। मान गया अपनी गलती। इस एक गलती के कारण क्या मैं इंसाफ से वंचित हो जाऊँ? तो इंसाफ का कोई भी रास्ता मेरे लिए नहीं रह गया?

काजी : एक कहावत है 'सुल्तान तक शिकायत'। सुल्तान से शिकायत करो। सुल्तान अपने इन्साफ के लिए, अपनी दयालुता के लिए मशहूर है। खलीफ़ा हरून-उल-रषीद तुम्हारे लिए न्याय का रास्ता बता सकते हैं। काजी की सोच में जो नहीं वह खलीफा सोच सकते हैं।

अली : ऐसा ही करूँगा काजी साहेब। आपने जो राह दिखायी उसके लिए मैं ऋणी हूँ।

(दोस्तों में चर्चा)

जकि : बेचारा अली। सुल्तान से तो शिकायत की है। सुल्तान भी क्या कर सकते हैं? बिना सबूत गवाह इंसाफ करने की कोई न्याय व्यवस्था अब तक पैदा नहीं हुई है।

जाकोब : इन्साफ-बेइन्साफ का मतलब जानते हो तुम जकि?

जकि : तुम ही बताओ उनका अर्थ जाकोब।

जाकोब : सबूत-गवाह को पैदाकर साधनेवाला अन्याय ही न्याय है।

जय : तब अन्याय का अर्थ?

जाकोब : करके फकड़े जाय तो अन्याय, न पकड़े जाय तो न्याय!

जार्ज : बहुत अच्छा समझाया, जाकोब! तुम तो यहूदि हो न?

जाकोब : सिर्फ समझाने से फायदा नहीं। इस अन्याय से हम तो बचावें। सबूत-गवाह के बिना भी अली को न्याय मिले ऐसा करना चाहिए।

जकि : क्या करें यही बड़ा सवाल है।

जय : मेरे दिमाग में एक उपाय सूझा है।

सभी : (कातरता से) वह क्या, वह क्या जय?

जय : जैसे हमने अंदाज़ लगाया सुल्तान के सामने भी सबूत-गवाह का प्रश्न खड़ा हुआ है। वे भी चिंतित हैं कि क्या करें। वे काजी की भाँति मामले को खारिज न करके यह देखने कि बगदाद में इसके बारे में कोई उपाय मिल जाय अब वेष बदलकर परिचरों के साथ आज रात राजमहल से निकल कर इधर ही आ रहे हैं। अब हम ही को उन्हें इन्साफ के बारे में राह दिखानी है। अपने कानों को मेरे मुँह की तरफ लाओ।

(कानों में कुछ कहता है)

सभी : बहुत अच्छा उपाय, विवेकपूर्ण उपाय।

(रात का समय)

खलीफा : रात बहुत होने पर भी बगदाद में अब भी लोगों का कोलाहल कम नहीं, है न गफ़ूर ?

गफ़ूर : जहाँपनाह, आपके धर्मनिष्ठ राजकाज के निर्वहण से लोग सभी आर्थिक दृष्टि से अच्छी स्थिति में रहने से रात में आमोद-प्रमोद में मनोरंजन में लगे रहते हैं। उनकी इस रसिकता के लिए उनकी संपन्नता ही कारण है।

खलीफा : संपन्नता, रसिकता बढ़ने से बगदाद की प्रजा श्रेष्ठ नागरिक कैसे कहलाएगी, गफ़ूर। यदि वे नीतिवान् न बनेंगे तो यह संपन्नता रेत पर दुहे दूध के समान व्यर्थ हो जाती है। तुम क्या कहोगे मसरूर ?

मसरूर : बगदाद में जितनी नैतिकता बढ़नी चाहिए, नहीं बढ़ी है। उसके लिए अली का प्रकरण ही उदाहरण है, जहाँपनाह।

खलीफा : सच कहा है मसरूर तुमने। अली का मामला हमारी न्याय व्यवस्था पर सवाल है। इसमें कौन अपराधी है ढूँढ निकालना ही चाहिए। वरना, अली को हानि के साथ अन्याय भी होता है और अपराधी भी सज़ा के बिना रह जाय तो अपराध-प्रवृत्ति को बढ़ावा मिलता है। तब हमारी न्याय-व्यवस्था की जड़ ही झकझोरने लगती है। वह अत्यंत खतरनाक स्थिति है। उसे रोकने के लिए ही अली के मामले में फैसला होना ही चाहिए।

गफ़ूर : होना ही चाहिए।

मसरूर : हाँ, होना ही चाहिए, जहाँपनाह।

खलीफ़ा : होना चाहिए, होना चाहिए आवाज़ देने से हो जाता है क्या? कैसे होना चाहिए इस पर न सोचकर होना चाहिए ऐसा प्रतिध्वनित कर रहे हैं। इसीलिए आये हो क्या हमारे साथ?

दोनों : क्षमा कीजिए, जहाँपनाह।

(बाहर जकि, जाकोब, जय, जार्ज का गाना)

इन्साफ ही शासन का है आधार
इन्साफ का बल ही बल है सब ओर
इन्साफ का शासन ही हमारा हो जाए
इन्साफ को कभी चुकने न पाए।
इन्साफ-पसंद है सुल्तान हमारे
सुल्तान की चिंता दैव ही करेगा दूर।।

खलीफ़ा : कौन है ये बालक? विवेकशील ये असाधारण बालक ही होंगे। गफूर, खावंद, मसरूर हम आड़ में खड़े होकर देखेंगे कि ये बालक आगे क्या करेंगे।

गफूर : ठीक है, जहाँपनाह।

(आड़ में खड़े हो जाते हैं।)

जय : दोस्तों, हम आज कौन-सा खेल खेलेंगे?

जकि : कल हमारे काजी न्याय का फैसला न सुना सकने से हार मान गये। इसलिए हम आज काजी का खेल खेलकर न्याय के फैसले का नमूना देंगे।

जाकोब : हम इसका अनुमोदन करेंगे।

जार्ज : मैं भी अनुमोदन करूँगा।

जय : जकि काजी बनकर बैठें। मैंने जो उपाय बताया है वैसे जकि न्याय का फैसला सुनायें।

जकि : सुनिए, सुनिए मैं अब काजी हूँ।

सभी : तुम्हारे काजी बनने हम सब राजी हैं।

जकि : तब तो मैं जो कहता हूँ उसे बिना चूके कीजिए।

सभी : जैसी आज्ञा। हमारे योग्य काजी साहेब।

काजी (जकि) : अली को और उसके पैसे को हड़पनेवाले व्यापारी को ले आकर मेरे सामने खड़ा कीजिए।

खलीफ़ा : अरे, अरे इस कुमार काजी ने अली के मामले का विचारण आरंभ कर ही दिया।

गफूर : जो प्रश्न सुल्तान को सता रहा है उसका उत्तर मिलने का लक्षण दिखाई पड़ रहा है, महाप्रभु!

मसरूर : यदि उत्तर मिल जाय तो घर जाकर आराम से सो सकते हैं।

खलीफ़ा : कौन कहेंगे कि तुम अब सतर्क हो? जागृत हो तब न सोने का विचार?

मसरूर : क्षमा कीजिए महाप्रभु!

(जाकोब और जार्ज को आगे खड़ाकर)

जय : अली, व्यापारी हाज़िर हैं।

नकली काजी : ऐ अली, तुम इस व्यापारी के पास बर्तन रखकर गये थे न?

नकली अली : हाँ, काजी साहेब।

नकली काजी : उसमें क्या क्या रखा था?

नकली अली : मान्यवर, उसमें एक हज़ार मोहरे रखा था और वह बात इस व्यापारी को मालूम न हो, इसलिए ऊपर जैतून के फल भरे थे।

नकली काजी : बर्तन कहाँ रखा था?

नकली अली : जैसा कि व्यापारी ने कहा उनके घर के कमरे के कोने में रखकर यात्रा में गया।

नकली काजी : लौटने पर क्या तुम्हारा बर्तन तुम्हें मिला?

नकली अली : मिला मान्यवर, मगर उसमें सिर्फ जैतून के फल थे। मोहरे गायब। मैंने घर जाकर जब बर्तन खोला, तब मालूम हुआ कि धोखा खा गया हूँ। कृपया मुझे न्याय दीजिए।

नकली काजी : हे व्यापारी। इसके लिए तुम क्या कहते हो?

नकली व्यापारी : खावन्द, यह मेरे कमरे में बर्तन रखकर तो गया मगर उसमें क्या रखा है इसे मैंने रखते समय भी न देखा। उसे ले जाते समय भी न देखा। ऐसे में इसके पैसे को हड़पने का प्रश्न ही नहीं उठता है। खुदा की कसम, खावन्द मैंने हड़पा नहीं।

नकली काजी : (अपने में) मेरे पूछने से पहले ही इसने कसम खा लिया न। यह धूर्त है, ए अली। ए अली।..........

नकली अली : खावन्द।

नकली काजी : तुम्हारा बर्तन हम देखना चाहते हैं। जेतून फल लाये हो क्या ?

नकली अली : नहीं खावन्द।

नकली काजी : क्यों न लाये। अक्ल नहीं तुममें। जाओ तुरंत ले आओ।

नकली अली : आपका आदेश (जाकर ले आने की आवाज़)।

खलीफ़ा : जो बात मेरी समझ में नहीं आयी, वह बात इस बालक को कैसे सूझी ? उस बर्तन को देखकर आगे जाने क्या करेगा यह कुमार काजी ? यह कुमार काजी असाधारण है, काजी।

गफूर : बहुत बुद्धिमान लगता है, प्रभु।

खलीफ़ा : आपमें जो अकल नहीं वह उसमें तो है !

गफूर : हाँ सच ही, खावन्द।

नकली अली : (आकर) यह लो, यही वह बर्तन है खावन्द।

नकली काजी : ए व्यापारी, यह बर्तन है क्या जिसे अली रखकर चला गया था ?

नकली व्यापारी : (चुप रहता है)

नकली काजी : क्यों चुप हो व्यापारी? तुम्हारी चुप्पी तुम्हारी स्वीकृति का प्रतीक है। ऐ अली, बर्तन का मुँह खोलो।

नकली अली : खोल दिया खावन्द।

नकली काजी : उसमें से एक दो जेतून का फल दो।

नकली अली : यहाँ है, खावन्द।

नकली काजी : देखने में तो अच्छे लगते हैं। खाकर देखता हूँ (खाकर मुँह चाटते हुए) अहा, बढ़िया है। सात बरस के बाद भी जैतून फल इतने अच्छे रहेंगे क्या? जैतून के फल बेचनेवालों को बुलाइए।

खलीफा : वाह रे, इस बालक की अकलमंदी पर कोई भी हो चकित हो सकता है। जो सूक्ष्म बात किसी की दिमाग में आयी ही नहीं इसमें कैसे चमकी, वह परवरदिगार ही जानता है। मैं इतने बरसों से न्याय-निर्णय कर रहा हूँ। परंतु यह राज़ मुझे भी नहीं सूझा।

नकली व्यापारी : (आकर नमस्कार करते) मुझे क्यों बुलवाया, खावन्द?

नकली काजी : तुम जेतून फल के व्यापारी हो?

आया व्यापारी : जी हाँ, खावन्द।

नकली काजी : कब से यह व्यापार कर रहे हो?

व्यापारी : पीढ़ी से हमारा यही व्यापार है, खावन्द।

नकली काजी : शाबाश! तब तो तुम इन जैतून फलों के बारे में पूरा जानते हो।

व्यापारी : हाँ, खावंद। पूरी जानकारी है।

नकली काजी : व्यापारी जी, यह फल कितने सालों तक खाने लायक रहेंगे?

एक व्यापारी : खावंद, हम जितना भी जतन से रखे तीन साल से ज्यादा ये खाने लायक स्थिति में नहीं रहेंगे।

नकली काजी : सात साल तक हिफाजत से रखेंगे तो क्या होता है ?

एक व्यापारी : वे सड़ जाते हैं।

नकली काजी : ये फल देखिए। बाहर से जाँच कीजिए; खाकर देखिए देखकर बताइए कि ये कितने साल के होंगे ?

एक व्यापारी : (जैसे देख रहा हो, खा चुका हो ऐसा अभिनय करता है) खावन्द, ये पुराने नहीं नये हैं। ये इसी साल के हैं।

नकली काजी : फल बेचनेवाले दूसरे व्यापारियों से भी पूछूँगा यदि तुम लोगों का कहना और दूसरों का कहना भिन्न भिन्न हो तो तुम लोगों का सिर कट जायेगा। सही, सही बताइए।

एक व्यापारी : आप बगदाद के सभी जेतून फल के व्यापारियों से पूछिए यही उत्तर मिलेगा, खावंद। यदि न मिले तो आप जो भी सज़ा देंगे हम भोगेने को तैयार हैं। हम वचनबद्ध हैं।

अली को धोखा देनेवाला व्यापारी : खावन्द, मेरी एक प्रार्थना है।

नकली काजी : (डाँटते हुए) बंद कर मुँह। महाचोर। सेवकों, इस चोर को कारागृह में ले जाइए।

सभी : आपकी आज्ञा, खावंद।

(उसे बाँधने पर वह गिड़गिड़ाने लगा कि मुझे छोड़ दीजिए। एक साथ सभी हास्य के फव्वारे उड़ाने लगे। सभी बालक छंट गये।)

खलीफ़ा : (आगे बढ़कर) सौ काजियों को इस बालक के सामने निवारना चाहिए। ऐसे बालक बगदाद में है यह मेरा भाग्य है। इस पर हमें नाज़ हैं।

(बगदाद का सड़क। जकि, का घर। खलीफ़ा का एक भट् दस्तक देकर पूछता है।)

सैनिक : कुमार जकि अंदर है क्या?

जकि की माँ : आप कौन हैं?

सैनिक : मैं खलीफ़ा का सैनिक हूँ।

जकि की माँ : मेरे लड़के के साथ तुम्हारा क्या काम?

सैनिक : मेरा कोई काम नहीं माँ। खलीफ़ा को काम है तुम्हारे लड़के से। इसीलिए उसे सुल्तान के पास ले जाने आया हूँ।

जकि की माँ : सुल्तान ने बुलाया है क्या मेरे बेटे को। मेरे बेटे ने क्या गलती की है।

सैनिक : मालूम नहीं माँ। तुम्हारे बेटे के साथ जाकोब, जय, जार्ज को भी बुला लाने की आज्ञा हुई है।

जकि की माँ : या अल्लाह, अब क्या होगा? जाने खलीफ़ा क्या सज़ा देंगे इन नटखट लड़कों को! रात भर भटकते रहते हैं। फिर मैं कब बेटे का मुँह देखूँगी! या परवरदिगार! मेरे बेटे के लिए यह आपत्ति क्यों? (रोती है)

जकि : (अंदर से दौड़े आकर) अम्मीजान, इस निडर, धीर जकि की माँ होकर रोना कैसा ? खलीफ़ा क्यों, अल्लाह भी बुलाये तो धैर्य से जाकर, आपत्ति से मुक्त होकर, आने का धैर्य तुम्हारे इस बेटे में है। तुम क्यों घबराती हो ?

जय, जाकोब, जार्ज : साथ में हम हैं काकी। हम चारों साथ निकलेंगे तो हमें पकड़ेवाला कोई नहीं। देखती रहो, सुल्तान से तोहफा लेकर आयेंगे।

जकि की माँ : खुदा हाफिज़! बच्चो, हो आइए! अल्लाह आपकी रक्षा करेगा।

सभी : जल्दी चलिए राजसेवक। सुल्तान गरीब सैनिक पर नाराज़ न हो।

सैनिक : तुम जैसे साहसी बच्चों को मैंने नहीं देखा था।

जकि : और भी देखेंगे हमारा साहस, हमारी दृढ़ता।

(अगला दृश्य खलीफ़ा हारून-उल-रषीद के दरबार में)

खलीफ़ा : आओ, बच्चों, क्यों खड़े हो ? मेरे दाहिने-बाँए पीठ पर बैठ जाइए। तुम जैसे बुद्धिमान लड़के, न्यायनिष्ठ बगदाद में हैं यह हमारे लिए गर्व की बात है। कल तुम लोगों ने जो न्याय निर्णय किया, वह न्याय व्यवस्था के लिए गौरव देनेवाला निर्णय था। तुम लोगों ने इसे कहाँ सीखा ?

जकि : हमारी प्यारी नगरी बगदाद में, सुल्तान!

खलीफ़ा : वह मुझे भी मालूम है चतुर बालक। बगदाद की किस शाला में पढ़ रहे हैं यह जानने का कुतूहल है।

जकोब : इसे सिखाने के लिए कोई शाला है क्या खलीफ़ा जी आपकी राजधानी में ?

खलीफ़ा : सभी सबकुछ शाला में ही सीखते हैं न ?

जय : क्षमा कीजिए महाराज, हमारी प्रत्युत्तर की उदण्डता पर। हम अपनी शाला में देखते हैं हमारे मास्टर के गंभीर वदन को, सुनते हैं उनके पहले पढ़े हुए को आज जो पढ़ाते हैं! शाला की चार दिवारों के बीच हमें केवल सीमित ज्ञान मिलता है महाराज!

खलीफ़ा : तब तो अधिक जानकारी पाने के लिए तुम लोग किस पर निर्भर हो?

जार्ज : हमारे प्यारे नगर पर ही हम निर्भर हैं महाराज! हमारे देश की राजधानी बगदाद ज्ञान नदी का उद्‌गम स्थान है। यहाँ का जीवन, यहाँ के लोग, उनकी इच्छाएँ आदि के लिए निकट होकर जीते हैं। इसीलिए शाला में जो सिखाते हैं उससे अधिक जानने में समर्थ हुए हैं।

खलीफ़ा : बच्चों को जन-जीवन के निकट रहकर सीखना चाहिए। हस्ति-दंत गोपुर में नहीं, यह बहुत समंजस सूत्र है।

जकि : महाराज, कई सालों तक बच्चों को जन-जीवन से दूर रखकर सिखाकर एकदम जीवन की लड़ाई में लड़ने भेजे तो क्या प्रयोजन? उनकी पढ़ाई और वास्तविक जीवन में बहुत अंतर है। यदि वे जीवन की लड़ाई में हारेंगे तो कहेंगे कि पढ़े-लिखे जन ऐसे ही। न हारना हो तो बचपन में ही लड़ाई को आत्मसात कर लेना चाहिए।

खलीफ़ा : खूब, बहुत खूब। बच्चों तुम लोगों से बात करके मुझे गर्व हो रहा है तुम लोगों पर। हमारे राज्य में अब सिखाने की व्यवस्था ठीक नहीं। तुम लोगों से ही पता चला कि उसमें काफी सुधार चाहिए। और एक प्रश्न करूँगा। जवाब दीजिए। बगदाद में बहुत-से बच्चे हैं। उन सब में न आकर तुम चार बच्चों में ही यह विवेक कैसे जागा?

जय : पहली बात यह है कि आज या कल हम ही को इस नगर की, देश की जिम्मेदारी वहन करना है – यह प्रज्ञा हममें आ गयी। इसलिए हम इस नगर के शासन के बारे में, यहाँ के लोगों के बारे में अधिक जानने के लिए उत्सुक हो गये।

जकि : दूसरी बात है कि हम में यह भावना पैदा होनी चाहिए कि हम सब एक ही नगर के, एक ही देश के पुत्र हैं। इसलिए हम चारों अलग-अलग धर्म के होते हुए भी आपस में भाई-भाई की तरह हैं और हम एक दूसरे को चाहते हैं, विश्वास करते हैं, आपस में मदद करते हैं। तब एक को जो सूझता नहीं, दूसरे को सूझता है। वह सूझ-बूझ हम सब की हो जाती है।

खलीफ़ा : बहुत खूब! वज़ीर, सलार, दरबारियों, हमने अब तक गलत समझा था कि राज्य का भविष्य, भरे खजाने, सशक्त सेना, समर्थ कानून व्यवस्था पर निर्भर है। आज इन बालकों से पता चला कि इन बालकों की समग्र शिक्षा, बुद्धि और भाव जीवन का विकास ही हमारा ध्येय होना चाहिए। उनकी

शिक्षा-व्यवस्था में यथोचित बदलाव चाहिए। इनकी शिक्षा के लिए अब जो खर्च हो रहा है वह दस गुना बढ़े। अब इन बालकों को वे जितना ढ़ो सके उतनी अशर्फियाँ पुरस्कार के रूप में वितरित हो।

जकि : ऐसे दयालू राजा को पाकर हम ही धन्य हैं।

खलीफ़ा : नहीं तुम जैसे बालकों को पाकर हम ही धन्य हैं। आज से इस राज्य के बच्चों के दैहिक, बौद्धिक, नैतिक विकास के लिए पहला स्थान देना चाहिए। बच्चे ही देश की निधि हैं, निधान है। घर जाइए बच्चो, बगदाद के आसमान के तारे! तुम लोग अब मेरे बच्चे भी हो। ऊँचाई को छूयिए। गहराई में उतरिए। आलोक का जीवन बिताइए। अपने देश को उज्ज्वल बनाइए।

(घर की ओर नाचते-कूदते चले जकि, जाकोब, जय, जार्ज आरंभ के गीत गाते चलते हैं।)

देश की नाडी में लहू हैं हम
भाषा की लता में फूल हैं हम
कल के सपने का अर्थ हैं हम, हम बालक हैं।

शुकवन

विश्व के सभी तरह के शुकों या तोतों को एक ही जगह देखना हो तो अमेरिका के फ्लोरिडा राज्य, मियामि नगर के पास के शुकवन में जाना चाहिए। एक ही देश के कई शुकों को और नमूने के तौर पर अलग अलग देशों के शुकों को उन चिडिया घरों में देखा जा सकता है। परंतु सभी देशों के सभी नस्ल के तोतों के संग्रह का श्रेय इस शुकवन को जाता है। सहज ही यह देश-विदेशों में प्रसिद्ध पर्यटन केन्द्र है।

यह तो अमेरिका में है, परंतु इसे शुरू करनेवाला आस्ट्रिया में पैदा हुआ था और वह रोज़ी-रोटी के लिए अमेरिका आया था। साहस हो तो कितना भी कठिन काम क्यों न हो, करके दिखा सकते हैं। इस बात के लिए एक निदर्शन के रूप में फांझ स्केर है। पहले पहल कड़ी मेहनत के बावजूद यह अपनी प्यारी प्रकृति माता का सहारा लेने का निश्चय करता है। 20 दिसंबर 1936 को अपने बनाये छोटे-से शुकवन को दर्शकों को दिखाता है। सुंदर बगीचे के बीच में विविध रंग और रीति के तोतों को देख, सैकड़ों दर्शक चकित हो जाते हैं। उसका परिश्रम सार्थक हो जाता है।

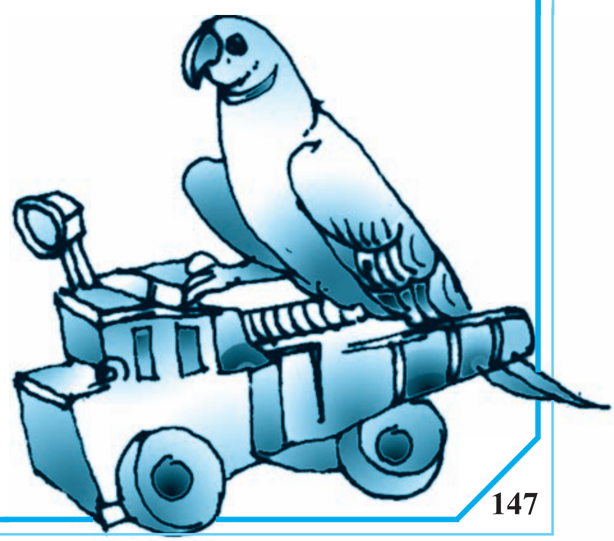

नयी उमंग से शुकवन में अलग अलग देशों के अलग अलग नस्ल के शुक मंगवाए हैं। अपनी 20 एकड़ भूमि में भूलोक के नंदनवन जैसे वन का पोषण किया। वहाँ सैकड़ों नस्ल के हज़ारों तोतों को पाला। उन्हें बोलना सिखाया। खेलना-कूदना सिखाया। सर्कस के करतब को सिखाया। उन्हीं के लिए एक रंगमंच भी तैयार किया। वहाँ उनकी करामातों की प्रदर्शनी आरंभ की।

क्या कहें ! देश-विदेशों से बच्चों से लेकर बूढ़ों तक सैलानी उसे देखने आने लगे। उसके अनुसार शुकवन भी बढ़ने लगा। बागवानी में हुए विविध प्रयोगों के लाभ से शुकवन को और भी सुंदर बनाया गया। प्रवेश द्वार मूँगे का था। अंदर प्रवेश करते ही बात करनेवाले, बुलाने पर आकर भुजाओं पर बैठनेवाले, केमरा देखते ही फोटो खिंचवाने को तैयार होनेवाले शुक को स्वागत करते। हरियाली ज़मीन पर अगणित खिले फूल, फल लिए तरह तरह के पेड़, उनके बीच पैर रखूँ या नहीं ऐसे टेढ़े-मेढ़े रास्ते! ऊपर विविध रंग के लता-मंड़प। इधर-उधर छोटे-छोटे जल प्रपात, छोटे-छोटे ताल। उनमें चमकती मछलियाँ, तैरते विहग वृंद। रास्ते के दोनों किनारों में बहते साफ पानी के नाल, फौवारे, चिलम। मूँगफली या फल आगे बढ़ाते ही कूदकर ले जानेवाले बंदर। जाने कितने आकर्षण रास्ते भर में!

थोड़ी दूर पर प्लेमिंगो ताल मिलता है। यहाँ पहुँचने के पहले और एक ताल में हंस, बतख़ आदि के नमूने देखने को मिलते हैं। सुंदर पिंजड़ों में विविध विहगों को देखते हैं। प्लेमिंगो ताल को देखकर ही विश्वास होता है, अद्भुत मनोरम दृश्य होने का! चारों ओर सैकड़ों तरह के अड़हुल, बोगनविलि के कई तरह के मुस्कुराते फूल। ताल में देखते

देखते रंग बदलते फ्लेमिंगो पक्षियों के झुंड़, कतारों कतारों में! यहाँ पता नहीं चलता कि वन के सौंदर्य को देखकर खुश हों या पक्षियों के राग-रंग को देखकर खुश हों या फिर ताल-तलैयों की संपदा को देखकर खुश हों! इस विस्मय से सचेत शुकों से रंगमंच शोभित दिखता है। वहाँ शुरू होता है शुकों का सर्कस! ऊँचे ऊँचे तार पर साइकल चलाते तोते, रथ-दौड़ में भाग लेते तोते, फिसलती शिला पर खेलते तोते, कार चलाते तोते, दूरभाष पर बोलते तोते, चोर का पता लगाते तोते, इस प्रकार कुल तीस प्रकार की कसरत दिखाते तोते दर्शकों को मूक-विस्मित कर देते हैं।

सभी तोतों के नाम होते हैं। सभी तोतों के बिस्तर होते हैं। उनका नाम लेते ही उन्हें आकर अपने बिस्तर में लेटते देखने में ही आनंद है। वे चाहे खायें, खेलें, प्यार करें, चुप रहें, उड़ते फुदकते रहें, सब लुभावना होता है।

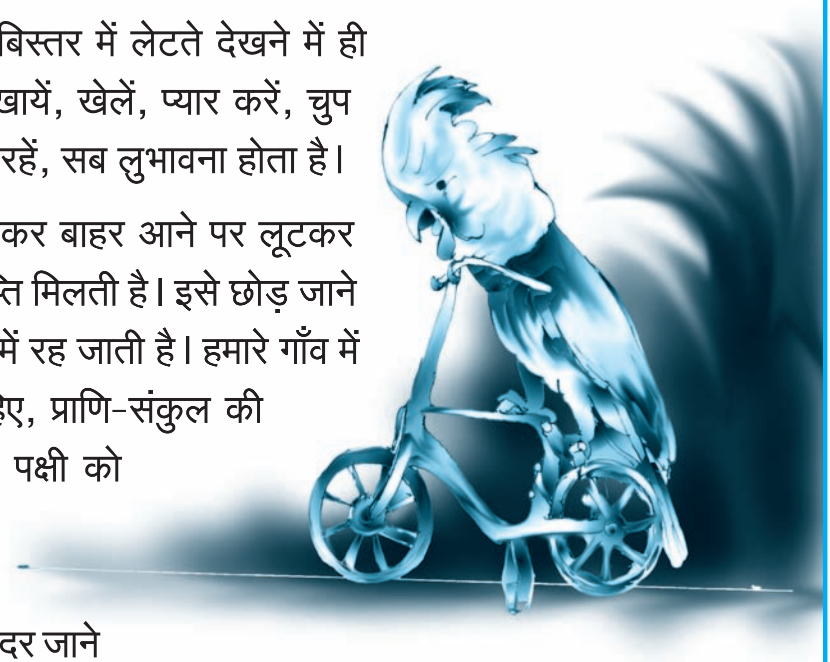

सब कुछ देखकर बाहर आने पर लूटकर लाए सौंदर्य से संतृप्ति मिलती है। इसे छोड़ जाने की खिन्नता भी मन में रह जाती है। हमारे गाँव में भी पेड़ लगाने चाहिए, प्राणि-संकुल की रक्षा करनी चाहिए, पक्षी को पालना चाहिए, गाँव को सुंदर रखना चाहिए, ऐसी सुंदर सुंदर जाने कितनी चाहतें अंकुरित होती हैं!

('शुकवन' का अब स्थानांतरण हो गया है। वह वन 'वॉटसन आयलैंड' मियामी, फ्लोरिड़ा में है और 2006 में उसका पुर्ननामकरण 'जंगल आयलैंड' हो गया है।)

सागर लोक

सागर लोक का क्या माने है ?

सागर के सारे प्राणियों को एक जगह दिखाने की व्यवस्था है। परिवार के सभी लोगों का मनोरंजन करनेवाला कई प्रकार के विनोद का केन्द्र है। उसके चारों ओर सागर है। यह सागर लोक का स्थूल परिचय है।

एक ही देश में ऐसे तीन सागर लोक हैं और वह देश है अमेरिका। इससे भी अधिक वहाँ हो सकते हैं। तीन ही मुझे मालूम हैं। क्यालिफोर्निया राज्य के स्यान-डियागो में 1964 में सागर लोक का आरंभ हुआ। 1970 में ओहियो राज्य के क्लेव लैंड के 23 मील दूर पर और फ्लोरिड़ा राज्य में ओर्लेंडो से पाँच मील दूर पर 1973 में आरंभ

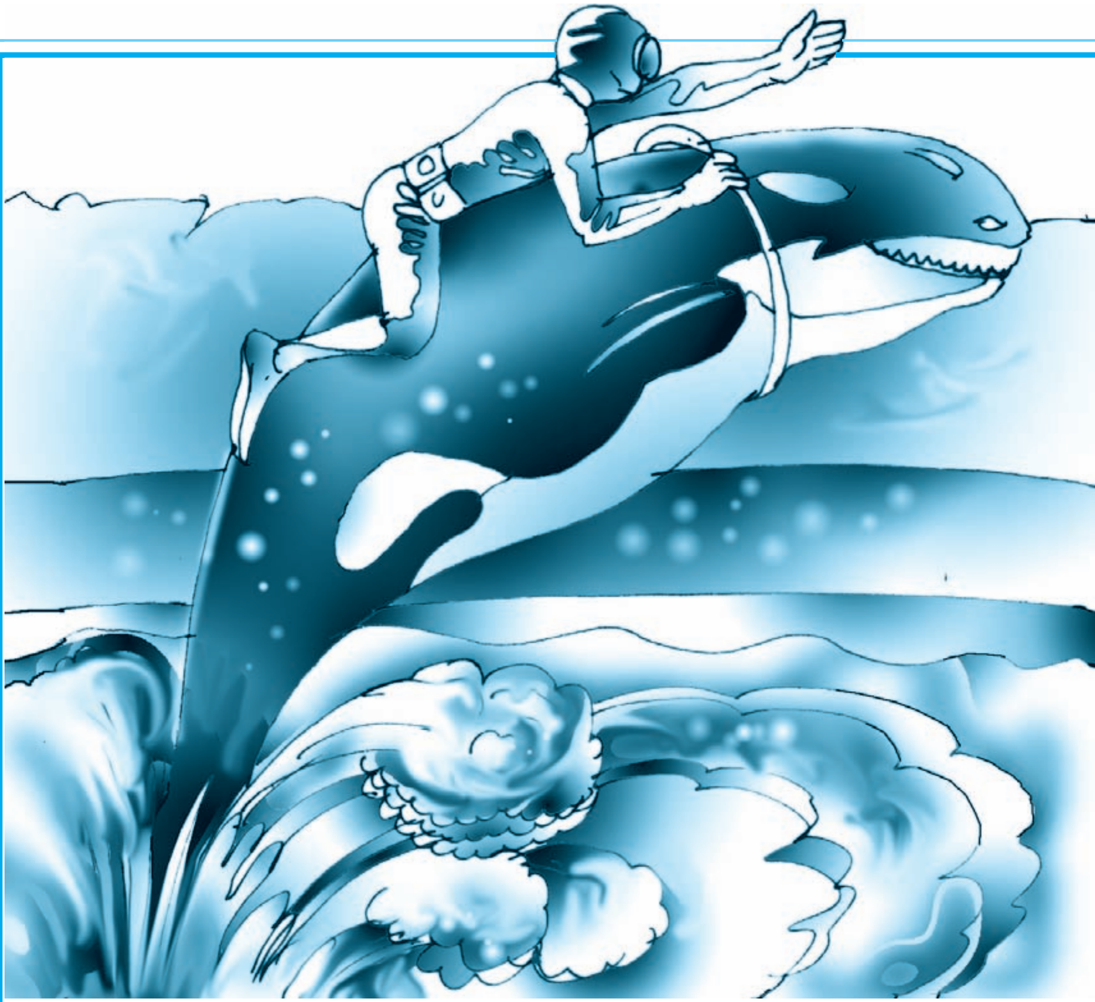

हुआ। ये तीनों एक दूसरे के लिए पूरक के रूप में हैं और ऋतु के अनुसार प्राणियों को एक जगह से दूसरी जगह ले जाते हैं। वह भी विस्मयकारी है!

ये तीनों सागर लोक हरदिन विकसित होते रहते हैं। एक एक के लिए करोड़ों रुपये खर्च कर हरेक के विस्मयकारी रूप में रहने पर भी उन्हें चलानेवालों की इच्छा और भी विकसित करने की है। उनके लिए विकास ही जीवन का लक्षण है। विकास का रुकना मृत्यु को पाना है। इन तीनों में जो नया है फ्लोरिड़ा राज्य का सागर लोक, वह साल भर खुला रहता है। और वह शेष दोनों से आगे बढ़ा सागर लोक है। 125 एकड़ व्याप्ति में यह जो है इसे देखने का संयोग मुझे मिला था, 1974 में।

आरंभ में ही एक विस्मयकारी प्रदर्शन है। नमकीन पानी का बड़ा तालाब। उसमें 18 फीट लंबा 4700 पाउण्ड वज़न की चार इंच सीधी 44 दैत्य दाँत की बड़ी मछली, तेज़ी से तैरते देखते हैं। अपने अवयवों को ताकत लगाकर तेज़ी से तैरते एकदम अपनी लंबाई से दुगुनी ऊँचाई पर उछलती है। उसे देख दर्शक दंग रह जाते हैं।

इससे भी चकित करनेवाला दृश्य बाद में दिखाई पड़ता है। वह अपना राक्षसी मुँह खोलता है – जितना चौड़ा खोल सकता है, उतना खोलता है। उसके दोनों दाँतों की पंक्तियों के बीच में उसको खिलानेवाला अपना सिर रखता है। काटे तो चपटा हो जाता है सिर। मगर वह काटता नहीं। सिखाने पर जितना भी खूँखार प्राणी हो मनुष्य की बात सुनते हैं, उसके लिए यह एक उदाहरण है।

इसके बाद वह ऊँचाई पर उछलकर गिरता है। सीधा उछलता है। जाने क्या क्या कसरत करके लोगों को आनंदित करता है। सागर का भयानक प्राणी यहाँ आनंददायक काम करता है।

पेंग्विन (एक प्रकार का सागर का पनकौआ है) और सील प्राणी (एक प्रकार का सागर-भालू है) की कसरत बाद में दिखाते हैं। पृष्ठभूमि में एक दैत्याकार पनिहा घोड़ा खड़े होकर ऐसा दिखता है कि जैसे बता रहा हो कि इनकी कसरत देखकर मत हँसिए। मैं हूँ यहाँ आपके दिल को धड़काने!

'डिंग्-अलिंग् बंधुओं का सरकस' कहलाने वाला यह पेंग्विन-सील प्राणियों का कसरत बालक-बालिकाओं को बहुत आकर्षित करता है।

इसके बाद एक जापानी गाँव ले जाते हैं। वह सचमुच अमेरिका में स्थित एक जापानी गाँव जैसा लगता है। वहाँ के घर, झोपड़ियाँ, दूकानें, रस्टोरेंट आदि सभी जापान के जैसे ही लगते हैं। वहाँ काम करनेवाले भी जापानी हैं। जापानी लड़कियों की वेष-भूषा, उनकी मूक हँसी एकदम हमें एक अलग ही लोक में ले जाते हैं। वहाँ जो भी दिखाया गया उन सबका बयान यहाँ संभव नहीं। परंतु एक का तो बयान करना ही चाहिए। एक छोटा-सा सागर निर्माण किया गया है। उसके चारों ओर लोग खड़े होकर देखते ही रहते हैं कि विशेष पोषाक में जापानी सुंदरियाँ उसके तल में जाकर पेट में मोती छिपाये सीपियों में जाकर ऊपर आते हैं। धैर्यवान् दर्शक उन पोषाकों में डूबकर मोती ला सकते हैं। मोतियाँ वहाँ बिकते भी हैं।

आगे का मनोरंजन है फव्वारों का नर्तन। इसी के लिए रचे रंगमंच पर कई प्रकार के रंगीन फव्वारों की व्यवस्था है। एक बटन दबाते ही वे फव्वारे नाचने गाने लगते हैं।

वह तो एक ऐसा दृश्य है जिस पर आँख को विश्वास ही नहीं होता! नाच भी एक ही प्रकार का नहीं। देश-विदेशों के नृत्यों को फव्वारे नाचकर दिखाते हैं। यह एक माया-बाजार है!

और एक अचंभे का वर्णन करके इसे समाप्त किया जा सकता है। 'गोल-गुंबज' से भी बड़ा एक काँच का गोल और उसमें पानी भरा है। उसमें अक्टोपस जैसे भयंकर प्राणि से लेकर स्तब्ध मछलियों तक सभी तरह के सागर जीव, इधर उधर मूंगा के द्वीप, हरी काई, टूटकर डूबे नाव, मध्य में सागर-पोषाक में सुंदरियाँ तैरती हुईं एक एक प्राणी को दर्शकों को लाकर दिखाती हैं। उस पार हजारों फीट ऊपर चढ़कर समग्र दृश्य को देखने की सुविधा है।

शेष 34 आक्वेरियमों में डाल्फीन एक में हो तो सैकड़ों जाति की मछलियाँ, कछुए और जलचर दूसरे में। 'देखो-छुओ- खिलाओ' यह वहाँ का सूत्र है। उन्हें देखकर लोग खुश होते हैं, स्पर्श कर आनंदित होते हैं। उन्हें कुछ न कुछ खिलाकर उल्लासित होते हैं।

इस सब को घेरे हरी भूमि, फूल-पौधे-लताएँ, फलभरित वृक्ष, तरह तरह की लताएँ - सब सुन्दर! उन्हें देखकर लौटते हुए एक सागर ही सिर में बैठा हो ऐसा अनुभव होता है!

वाल्ट डिस्नी लोक

अद्भुत स्वप्नदर्शी वाल्ट डिस्नी का प्रथम बाल मायाबाज़ार प्रारंभ हुआ केलिफोर्निया राज्य के आनहीम नामक स्थान में 1955 में। वाल्ट डिस्नी का उद्देश्य था कि उसे माँ-बाप तथा बच्चों को समान रूप में आनंद देनेवाली कला होनी चाहिए। उद्देश्य पूर्ण होकर हर वर्ष लगभग एक करोड़ माँ-बाप तथा बच्चे उसे देखकर खुश होते आये हैं। इसे देख आनंदित होनेवालों में राजा रानी हैं, राष्ट्रपति हैं, प्रधानमंत्री हैं, देश-विदेश के बच्चे हैं। बच्चों के मनोरंजन के लिए इससे बढ़कर दूसरा कोई स्थल नहीं, ऐसी ख्याति डिस्नी लोक की है।

और कोई वाल्ट डिस्नी से बढ़कर न हो सके तो स्वयं डिस्नी ही अपने से बढ़कर हो। वनों, सरोवरों के सुंदर राज्य फलोरिड़ा में, ओरल्यांडो नगर से 15 मील के अंतर पर अक्टूबर 1971 में नये डिस्नी लोक की स्थापना हुई। उनके सपनों के गोपुर के लिए कलशप्राय है। यह वाल्ट डिस्नी का साकार-सपना तो है ही, इसे देखनेवाले करोड़ों, करोड़ों लोगों का भी यह साकार-सपना है! उनका स्वप्न-लोक भी इतना विस्मयकारी न होगा। मानव अपने स्वप्न-कल्पनाओं में जो नहीं देख सकते, उसे वास्तवलोक के रूप में सृजन करने की महानता और धीरता इनकी है।

इस यक्षिणी लोक के समीप होते होते वाणी मूर्छित हो

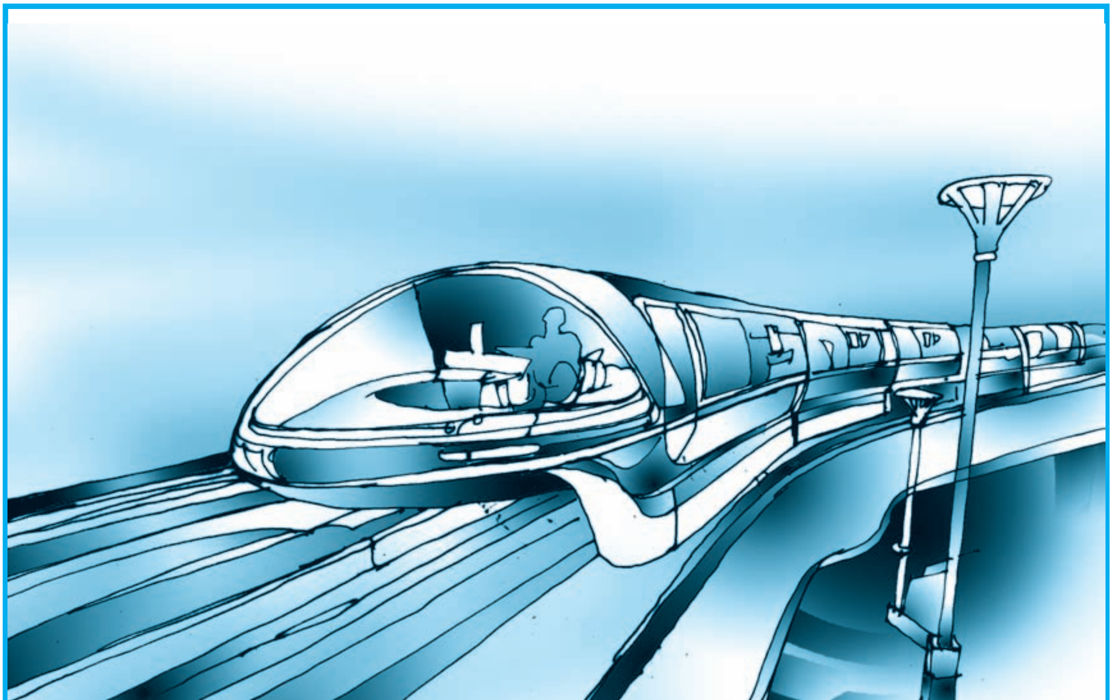

जाती है। जहाँ तक आँखें देखती हैं कार, तरह-तरह की कार, रंग-रंग की कार। इन कारों के सागर में आपको अपना कार छोड़कर आना ही एक साहस-यात्रा है। बाहर मोनो रेलगाड़ी आपके लिए इंतज़ार करती रहती हैं। सुंदर ललनाओं से चालित इन सुंदर गाडियों में बैठना ही आनंददायक है। डिस्नी लोक के महाद्वार के आगे खड़े होते ही मूक हो जायेंगे। सर्वत्र लोग, सर्वत्र बच्चे, वह तो एक संक्षिप्त ब्रह्माण्ड है।

अंदर जो है उसके विवरण के लिए दस पुस्तकें भी काफी नहीं हैं। 'वहाँ क्या है ?' प्रश्न के लिए 'वहाँ क्या नहीं है ?' प्रतिप्रश्न ही उत्तर है। सैकड़ों टन इस्पात का उपयोग कर एक बड़ा पेड़ बनाया गया है। उसमें घरों को बनाया है। उन घरों में सभी प्रकार की सुविधाएँ हैं। वहाँ रहना चाहते हैं क्या ? रह जाइए। वहाँ रहकर तारों पर टंगकर चलनेवाले पालने जैसे वाहनों में बैठकर डिस्नी लोक के विस्मय को देखिए। तरह तरह के खाद्य, जलपान, मनोरंजन के रेस्टोराओं में अपनी रुचि का खाकर आनंद लीजिए।

मिकी मौस थियेटर जाकर वहाँ कई प्रकार की गुडियों के खेल, व्यंग्य चित्र, विविध विनोद कार्यक्रम देखिए। मिकी मौस के वैभवपूर्ण उत्सव में भाग लीजिए। देश विदेशों के वास्तु शिल्पों के नमूनों को देखकर संतुष्ट हो जाइए। कृत्रिम जलप्रपातों को देखकर नाचिए। विश्व के सभी प्रकार के बच्चों के खेलों में भाग लेकर आनंद लीजिए। फूल जैसे बच्चों को देख खुश हो जाइए। एक को देखना न भूलिए। वह है 'हाल-आफ-प्रेसिडेंट (अध्यक्षों का सभागार)। वहाँ अमेरिका के अब तक के अध्यक्षों की आदम-कद मूर्तियों को देखिए। वे जीवंत गुडियाँ हैं। उन्हें देखते ही अमेरिका का इतिहास, परंपरा और साधनाओं का चित्र आपकी आँखों के सामने घूम जाता है। वहाँ आनेवाले बच्चे इन्हें देखकर अमेरिका के प्रति गर्व का अनुभव करके लौटते हैं। हमारे देश में भी ऐसा एक स्थल निर्मित नहीं हो सकता है क्या?

यहाँ सात साहस यात्राएँ आपको करनी ही चाहिए। भूमि में निर्मित जलमार्ग में एक एक यात्रा एक एक अचम्भे को खोलकर दिखाती है। पहले जलमार्ग में उतरते ही उसके दोनों ओर प्राचीन किले को देखते हैं। आपको देखते ही दोनों किले के कृतक

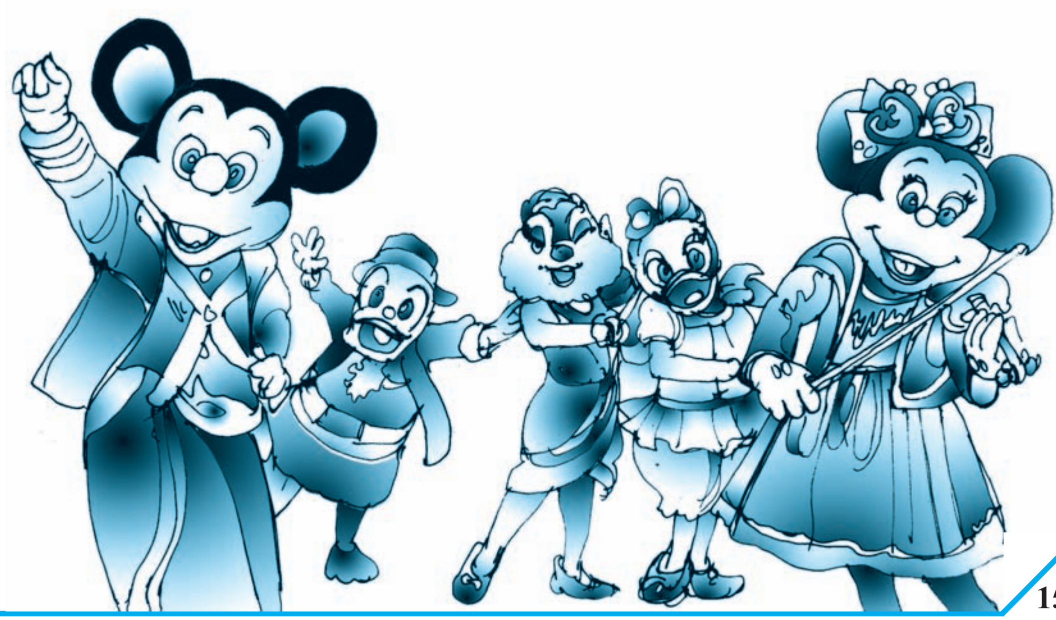

सैनिक युद्ध छेड़ते हैं। बंदूकों के साथ, गोलियाँ आपके दाहिने बाई ओर से आपके सिर पर से निकल जाती हैं। डरिए मत। आपको कोई खतरा नहीं।

इस जलमार्ग में मार्ग भर आप देखेंगे अनेक प्रकार के युद्धों को ही! आदिमानव से आधुनिक मानव तक चली आयी लड़ाईयों के सभी नमूने यहाँ देखेंगे। धनुष बाण-युद्ध, जलयुद्ध, आकाश युद्ध, कितने ही प्रकार के युद्ध! उस यात्रा को समाप्त करते करते आपलोग युद्ध-पंड़ित बनकर बाहर आयेंगे।

और एक जलमार्ग में सभी राष्ट्र के बच्चे अपनी राष्ट्रीय पोषाकों में, अपने राष्ट्रगीत को गाते आपका स्वागत करते हैं। भारतभूमि में ताजमहल, उसके सामने भारत के बच्चे राष्ट्रीय पोषाक पहनकर देशी वाद्य बजाते हमारा राष्ट्रगीत गाते आपका स्वागत करते हैं। आपको हमारा राष्ट्रगीत मालूम है? गाइए, देखेंगे। 'अदिनायक'

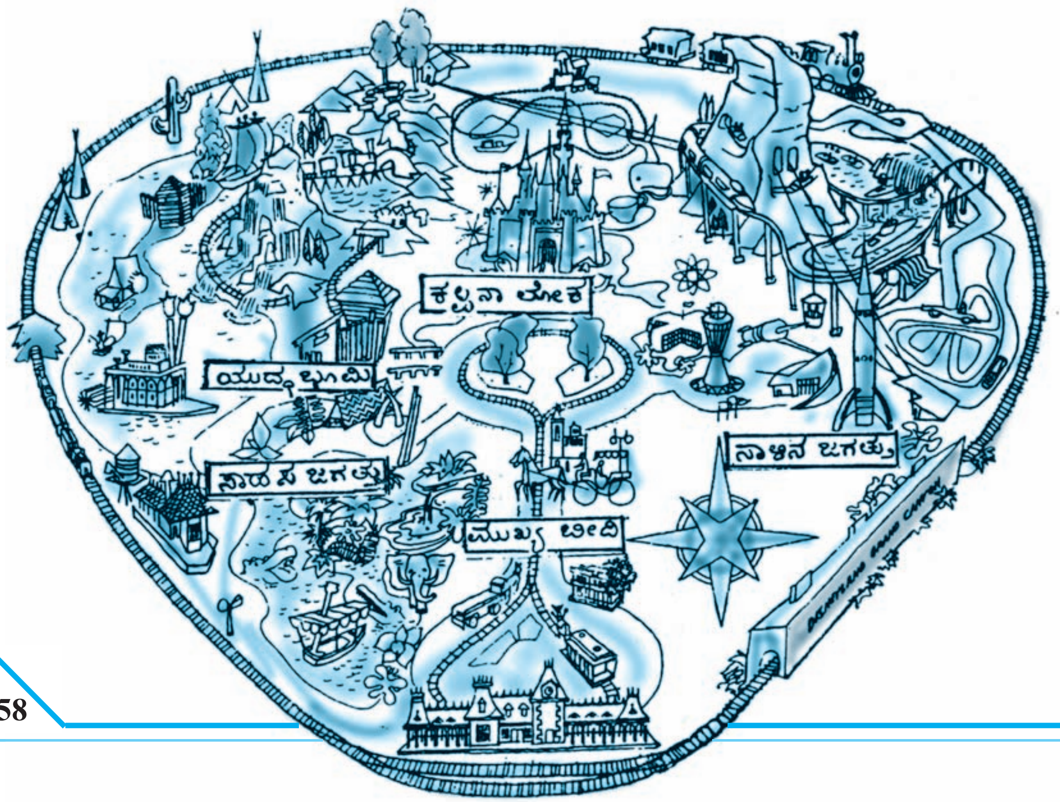

नहीं ‘अधिनायक’ कहिए। ‘भारत बाग्य विदाता’ नहीं ‘भारत भाग्य विधाता’ क्यों कहते हैं। आपको राष्ट्रगीत मालूम हैं? कहिए। हाँ, अब ठीक गाया। ‘शाबाश’।

और एक जलमार्ग में भूत संसार देखेंगे! देखते समय मानो सारा लहू जम जाता हो, ऐसा अनुभव! दुर्बल हृदयवाले हो तो डर से छाती पीटना चाहिए, ऐसे भयंकर दृश्य आप देखेंगे। वन-संसार, पहाड़-संसार आदि सागर संसार के अंतर्गत, जलांतर्गत नौका (सबमेरिन) में बैठकर निकलेंगे। ऊपर पानी, नीचे पानी, दाई ओर पानी बाई ओर पानी! उस पानी में दिखेंगे जलचर - छोटी बड़ी मछलियाँ, आक्टोपस! और भी न जाने क्या क्या? फट कर डूबे नाँव! खण्डहर बने नगर, मूँगों के द्वीप। उनमें समुद्र-सर्प, सीपियाँ, शार्क आदि जाने क्या क्या होंगे! यात्रा समाप्त होने पर सागर गर्भ के आश्चर्यों को देख संतृप्ति! सागर गर्भ में से निकल आने पर गर्व!

ये सभी यंत्र, वहाँ दीखते सभी दृश्य, जीवी कम्प्यूटर नियंत्रित कहेंगे तो आपको विश्वास करना कठिन होगा न? आश्चर्य होने पर भी सच बात है! अमेरिका का चकित करनेवाला वैज्ञानिक, तांत्रिक विकास का प्रतीक है यह डिस्नी लोक! यहाँ मनोरंजन के माध्यम से नया ज्ञान मिलता है। नया विज्ञान मिलता है। नया तांत्रिक परिज्ञान मिलता है। जितना भी लिखो खतम नहीं होता इस लोक का बयान!

‘कल का लोक’ ही एक विभाग है। यहाँ शिक्षा-विज्ञान के क्षेत्र में मानव ने अब तक जो साधना की है उसका अरुंधती दर्शन हो जाता है। यहाँ हमेशा कोई न कोई कार्यक्रम चलता ही रहता है। वाल्ट डिस्नी की घोषणा ही यह है : ‘यह विभाग मानव में कल्पनाशक्ति रहने तक नया अंकुरित करता रहता है। कभी न खतम होनेवाला विभाग। मानव में जब तक सृजनशीलता है तब तक नया सृजित होता ही रहता है।

ग्रांड केनियन

बच्चो, हिमालय तुम लोगों ने देखा है क्या? कम से कम दूरदर्शन में उसके अद्‌भुत दृश्यों को देखा है क्या? आखिर भारत का नक्शा तो देखा ही होगा। वह संसार का परम आश्चर्य है।

उसे छोड़ दे तो ग्रांड केनियन प्रकृति का और एक आश्चर्य है। इसके निर्माण का कारण एक नदी कहेंगे तो आपको आश्चर्य होगा न? आश्चर्य होने पर भी यह सत्य बात है। उस नदी का नाम है कोलेरेडो। इसका विस्तार हमारे देश से तिगुना है। यह सौ में से 12 भाग छूती है। कुल 14,000 मील से भी अधिक दूर तक बहती है। यह छः दश लक्ष वर्षों से यहाँ भूमि के छेदने का कार्य करती आयी है। यह 277 मील लंबी रुद्रखाई 'ग्रांड केनियन' निर्मित करने में सफल हुई है। इसका कार्य अब भी रुका नहीं, यह वैज्ञानिकों का कथन है। आगे जाने और क्या क्या करेगी! अब जो हुआ है वही रुद्र रमणीय है।

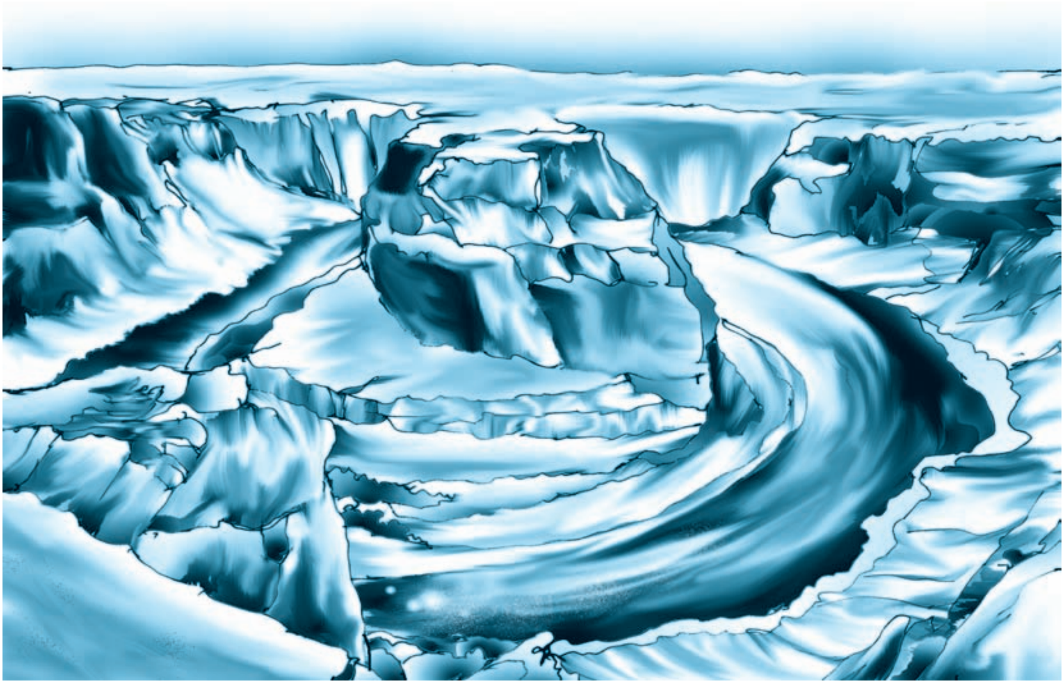

अमेरिका के चार राज्यों का 1,30,000 वर्ग मील क्षेत्र कोलेरेडो पर्वत की पार्श्व भूमि व भ्रम भूमि (Fantasy land) के नाम से ही प्रसिद्ध है। इसमें पर्वत पार्श्व भूमि को काटकर कोलेरेडो नदी ने इस अद्‌भुत खाई का निर्माण किया है। इसकी गहराई औसतन एक मील है और चौड़ाई 18 मील तक है; लंबाई जैसाकि बताया गया है 277 मील है। क्षेत्र विस्तीर्ण 1900 मील है। ग्लेन कान्यन जलाशय बाँधने से पहले क्यालिफोर्निया खाड़ी को ले जाते रेत की मिट्टी प्रति दिन 5 लाख टन थी।

ग्रांड केनियन सभी ऋतुओं में देखने, दिन में ही अलग अलग समय में अलग अलग स्थलों में रुककर देखने के लिए पूरा वर्ष चाहिए। वह तो प्रकृति का रसलीला रंग है। उसकी रमणीयता का सौंदर्य है हरक्षण नया दीखना। ऐसी रमणीयता यहाँ कदम कदम पर आकर्षित करती है। देखते देखते उसका रूप बदलता है। सुबह और शाम का इंद्रजाल तो ठीक है, शेष समय में भी उसकी क्या खूबी! क्या जादु! कैसी भव्यता!

किनारे के इस पार और उस पार के पत्थर के रंग तरह तरह के हैं। सहज ही बने आकार भी तरह तरह के हैं। नदी के टेड़े-मेड़े के रूप अनुसार खाई का टेड़े-मेड़ापन भी तरह तरह का है। सूर्य प्रकाश के उतार-चढ़ाव के अनुसार खाई का दृश्य वैविध्य; तट के पेड़-लताएँ, उनके फूल फल भी वैविध्यपूर्ण हैं। क्या क्या आकार निर्मित हुए हैं वहाँ! हमारे त्रिमूर्ति वहाँ हैं। अप्सराएँ वहाँ हैं। राक्षसाकृतियाँ भी हैं। सर्पाकृति भी है। प्राणी-पक्षी सस्य वृक्ष के नमूने भी वहाँ हैं। वहाँ क्या है क्या नहीं?

लोक में स्वीकृत सात मौसम क्षेत्रों में छः वहाँ लगे हैं। सत्तर प्रकार के सस्तनी और भी पचास प्रकार के पक्षी, पच्चीस विविध सरीरूप, पाँच जाति के उभय जीवी; पाँच समुदायों के लाल इंदियन उसके दोनों ओर बसे हैं। खाई के शिलापरत ही इक्कीस प्रकार के हैं। हरेक का अपना ही सौंदर्य है। वे एक के अंदर एक मिलकर विविध रंग के पत्थर की कशीदा से जितने सुंदर दिखते हैं वह अवर्णनीय है।

1908 में अमेरिका का राष्ट्रीय स्मारक बना ग्रांड केनियन 1919 में राष्ट्रीय उद्यान के रूप में बदलने से सोने में सुहागा मिलने के समान हो गया है। पहाड़-खाई-वन-उद्यान के इस अपूर्व सम्मिलन ने इसे राष्ट्रीय यात्रा केन्द्र बना दिया है। उसका विकास तीव्र गति से हो रहा है। विकसित होता ही रहा है! अब तो साल में एक करोड़ लोग उसे देखने आते हैं। देखकर रोमांचित होकर निकलते हैं। इतने लोगों के लिए आवश्यक खाना, रहना, वाहन, विहार आदि की सुविधाओं की व्यवस्था है। निःशुल्क वाहन, मार्गदर्शक, नक्शा-पुस्तक, नाटक, नृत्य, संगीत आदि मनोरंजन कार्यक्रम, तैराकी ताल, दूरदर्शन केन्द्र आदि आज के विज्ञान-तंत्रज्ञान जो भी सुविधा दे सकते हैं वे सब वहाँ हैं। इन सब के लिए कलश के रूप में निर्दोष व्यवस्था। हँसमुख सेवाएँ, आदरातिथ्य, समय निष्ठा से कार्य-कलाप, स्वच्छता, शांति, सौजन्य आदि विहारियों को नंदन का आनंद देते हैं। वहाँ एक बार जो जाते हैं बार बार वहाँ जाने को लालायित होते हैं।

लूरे गुफाएँ

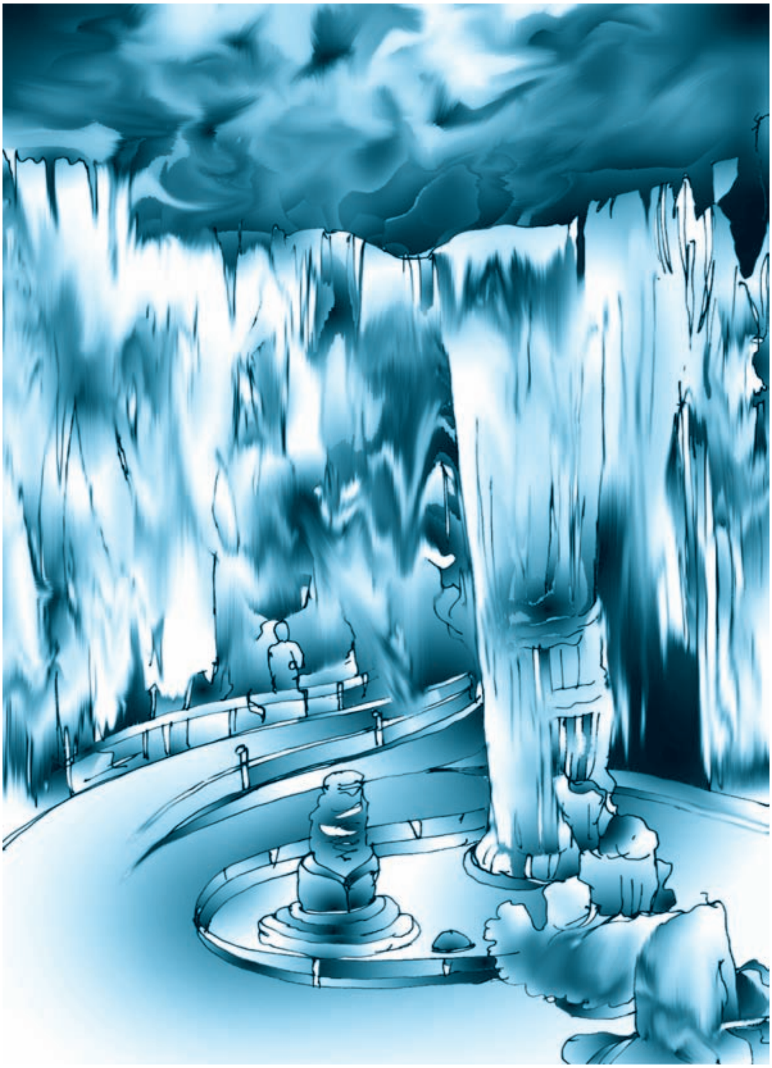

पश्चिम अमेरिका में जैसे खाईयाँ समृद्ध हैं वैसे ही पूर्व अमेरिका में प्राकृतिक गुफाएँ बड़ी संख्या में हैं। ये तीन रूपों में रूपित हैं। समुद्र की बड़ी लहरें सागर तटों पर पटकती हैं उससे ये गुफाएँ रूपित होती हैं और ये बड़ी संख्या में हैं। ये तीन रीति से

रूपित हुई हैं। एक सागर की बड़ी लहरों के तट पर पटकने से बनी गुफाएँ, दूसरी ज्वालामुखियों के फूटे लावारस से रूपित गुफाएँ और तीसरी हैं जो अत्यंत आश्चर्यकर है, वे हैं चूने के पत्थर से बने पहाड़।

इनका निर्माण ही आश्चर्यकर है। भूमि पर पड़ा पानी भूमि की दरारों के द्वारा बूँद बूँद टपकता है। इस प्रकार टपकते समय अंगाराम्ल द्रव चूने के पत्थर के अंश को जीर्ण कर नीचे बह जाता है। इसप्रकार चूने के पहाड़ों में भीतरी मार्ग का निर्माण होता है। वहाँ आकार रूपित होते हैं, खंबे सा, लहरों सा, झालर-सा, पेड़-लता-सा और मानव जैसा आकार कई वर्णों में जैसे सफेद, गुलाबी, नील, हरा आदि रंगों में मायालोक की सृष्टि करते हैं।

ऐसा मायालोक वर्जिनिया राज्य के ब्लूरिच (Blue Ridge) पर्वतीय घाटी की लूरे गुफाओं में साकार खड़ा है। चारों ओर मोहक सृष्टि सौंदर्य बीच में ऊपर से साधारण लगने पर भी, अंदर प्रवेशकर घूमने पर अद्‌भुत रम्य दीखती ये गुफाएँ विस्तार में, चित्र वैचित्र्य में, रूप वैविध्य में अनुपम हैं। अंदर प्रवेश करते ही आंगन का फैलाव शिल्पाश्री और सुकुमार आकृतियाँ हमें चकित कर देती हैं। आगे बढ़ते बढ़ते वाशिंगटन का स्तंभ, फुलवारी, रंगमंच, कीचड़ के तालाब के ऊपर की प्राकृतिक सेतु, मछली बाज़ार, स्फटिक फव्वारे, प्रेत, ओबेगान की कृतक गुफा, टैटानिया की जननिका, सारेनव का डेरा, आर्गन बाघ, सिंहासन गोपुर, चक्रवर्तिनी का स्तंभ, एब्लिन्सि का सभांगण, खंबे द्वय, जलप्रतात फव्वारे, ड्रेगन रानी का तौलिया, भीगा कंबल, चापमन का तालाब, शाही फव्वारे, तालाब द्वय, टपकते पानी वाले चूने के पहाड़ में हजारों साल की दीर्घ अवधि में बनी कलाकृतियाँ हमें आश्चर्य से अति आश्चर्य की ओर ले जाती हैं।

ऊपर से टंगे हुए पत्थर की जटाएँ, लताएँ, झालर, नीचे के वास्तविक पानी के तालाब के प्रतिबिंब में दिखाता दृश्य रसभोग है। विश्व में ही अनन्य प्रकृति निर्मित वाद्य

शाला में विद्युत् बटन दबाने पर रोमांचक स्वर मेल को सुन आनंदित होना चाहिए। भूमि के गर्भ में ही नृत्यभवन के देखने पर जो नाचते नहीं उन्हें भी नाचने की इच्छा हो जाय तो कोई आश्चर्य की बात नहीं। वहाँ भी एक इच्छा पूर्ण करनेवाला कुआ! आगंतुकों में कोई भावुक हो तो उस कुए में पेन डालकर मन की इच्छा पूर्ण करने के लिए मनौती करते हैं। विश्वास अंधा होने पर भी, उन गुफाओं में क्यों, पाताल में भी जा सकते हैं न? वह देखिए मछली-बाज़ार! मछली खानेवाले उसके सामने खड़े हो जाते तो उन्हें असली मछली समझकर उनके मुँह में पानी आ जाता है। एक ओर भुने अंडे प्रकृतिमाता ने रखे हैं। घर में भुने अंडों और वहाँ के पत्थर के अंड़ों में भेद न देखकर हाथ लगाकर निश्चित कर लेते हैं कि पत्थर के हैं। बालक-बालिकाएँ तो भ्रम-निरसन कर ही लेते हैं। वहाँ एक चित्रों से रूपायित खंब-द्वय है। उसे देखते पुराणेतिहास में प्रसिद्ध प्रणयियों को यादकर स्थिर पैरों चकित हो खड़े होने वाले भी हैं।

इस प्रकार हज़ारों एकड़ विस्तीर्ण व्याप्त होकर बाहर से आये हुओं को छेड़ती खड़ी ये गुफाएँ और भी नये आकारों की सृष्टि करतीं, नये चित्र-विचित्रों को खींचतीं, नये आकर्षणों का सृजन करती शोभित होती हैं। इन्हें देखने पर यक्षिणी लोक से बाहर आने का आभास होता है। नयनभर वे चित्र-विचित्र आकृतियाँ ही! मनमंदिर में मधुर स्मृतियाँ ही!

बहुत बड़ा विज्ञान व्यूह

विश्व में प्रकृति के निर्माण अद्‌भुत हैं। मानव-निर्मित भी अद्‌भुत हैं। ऐसे मानव निर्मित अद्‌भुतों में मेक्सिको राज्य सोकोरो के पास स्थित वेरी लार्ज अरे (बहुत बड़ा विज्ञान व्यूह) एक है। यह आज भी खगोल विज्ञान के त्रिविक्रम कदम के रूप में मानव-विजय की चाह के पताका के रूप में है। यहाँ प्रयुक्त शब्द कठिन होने पर भी बच्चों का सीख लेना अच्छा है।

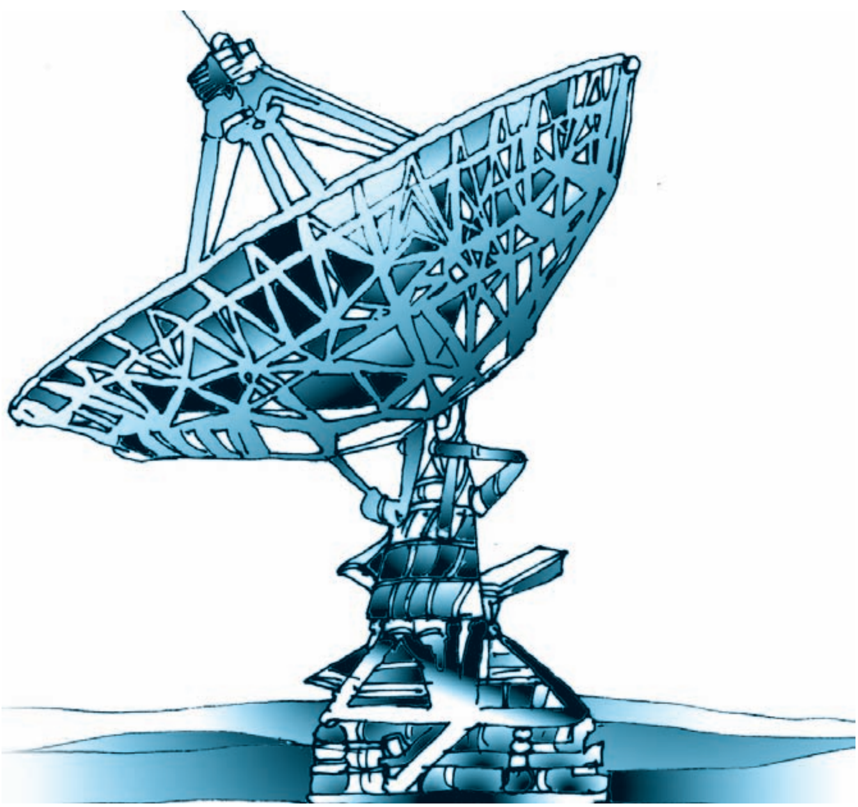

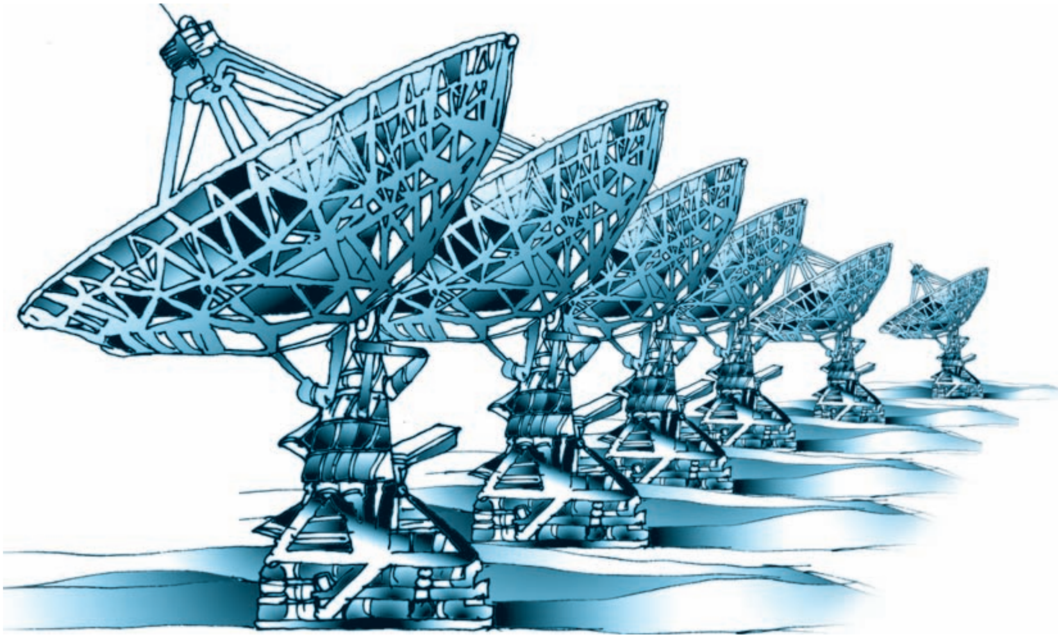

1972 में मंजूर हुई यह योजना 1981 को पूर्ण हुई। उसके लिए 787 करोड़ डालर खर्च हुए। पिछले पाँच-छः वर्षों में ही उस केन्द्र ने खगोल विज्ञान-संसार को जो योगदान दिया है वह विशिष्ट है। इस केन्द्र में कई अंटेना, अतिसूक्ष्म इलेक्ट्रनिक उपकरण, और गणक यंत्र भी हैं। इस केन्द्र का कार्य है मिल्की वे में, जो रेडियो नक्षत्रों, नये नक्षत्रों के जन्म के लिए पेट कहलाता है, अनिल (gas) मेघों के सूपर नोवा से चुक जाने वाले नक्षत्र से सृजित रेडियो शोध। यह जो संपर्क करता है वह अति दूर का गोल उससे 6000000000000000000000 मील दूर पर है। उसे छः के सामने इक्कीस शून्य कह सकते हैं। इसके लिए कोई नाम संख्याशास्त्र में ढूँढना कठिन काम है। ज्योति वर्षों में कहना हो तो सौ से अधिक ज्योति वर्ष हो सकते हैं? वहाँ तक फैला है इस केन्द्र का शोधकार्य।

उपरोक्त संख्या ही ठीक नहीं या 'संपर्क' शब्द का अर्थ संदिग्ध है पता नहीं। क्योंकि हमारे तेजोमंडल की छोर से M31 नामक गोल 15000 ज्योतिवर्षों से परे है ऐसा

कहा जाता है। सौ ज्योतिवर्ष से परे का भी संपर्क कर सके तो वह कोई छोटी साधना नहीं है। परंतु विश्व का अनंत अगणित विस्तार को ध्यान में रखकर देखे तो यह कोई बच्चों का खेल नहीं। ग्यारह बिलियन ज्योतिवर्षों से परे जाने पर भी वहाँ असंख्य ग्यालक्सि (आकाश गंगा) गोचर होते हैं। उन सबका शोधकार्य कर ही लेंगे, ऐसा वैज्ञानिक नहीं कह सकते।

तब अब तक चला रहे महंगे शोधकार्य किस पुरुषार्थ के लिए हैं ऐसा कोई भी पूछ सकते हैं। परंतु इस कारण से शोधकार्य रोक सकते हैं क्या? इस दिशा में पिछले अर्ध-शताब्दी में जो शोधकार्य हुआ है वह आगे के शोधकार्य के लिए आधार है। शोधकार्य पूर्ण न होने पर भी उसे आगे ले जाने का कार्य कितना उल्लासकर है!

दो दशलक्ष्य ज्योतिवर्ष के परे स्थित किसी ग्यालाक्षि को छोड़कर निकला हाइड्रोजन अणु का ताप प्रसारणांश आकर कहने पर कि मेरा जन्मदाता अणु आपके प्रयोगालय में जो अणु है उसी के समान है, तो किस वैज्ञनिक को खगोल शोधकार्य आगे बढ़ाकर विश्व रहस्य का विनूतन अंशों को जानने की चाह पैदा नहीं होती?

वैसे तो इस केन्द्र में देश-विदेश के खगोलतज्ञ आते हैं। वे अपनी समीक्षा का परिणाम प्रकाशित करते हैं। इन परिणामों का तुलनात्मक अध्ययन चलता है। सर्व मान्य अंश निकलते हैं। विश्व रहस्यों पर नयी रोशनी पड़ती है। शोधकार्य फिर आगे बढ़ता है। उसके साथ हमारी जानकारी की सीमा भी विस्तृत होती है। इतना समर्थन क्या काफी नहीं शोधकार्य के लिए?

नयागर-पात

दो नगरों को मिलानेवाले 'सेतु ' (उदाहरण के लिए हैदाराबाद-सिकंदराबाद को मिलानेवाला सेतु) होते हैं, दो राज्यों को मिलानेवाली राजधानी है (उदाहरण चंडीगढ़)। परंतु दो बड़े देशों को जोड़नेवाला जलपात तो नयागर-जलपात है! अत्यधिक संख्या में दर्शकों को अपनी ओर खींचनेवाला जलपात है यह। अपने चारों ओर अद्भुत रम्य नगर निर्माण कर लिया है इस जलपात ने।

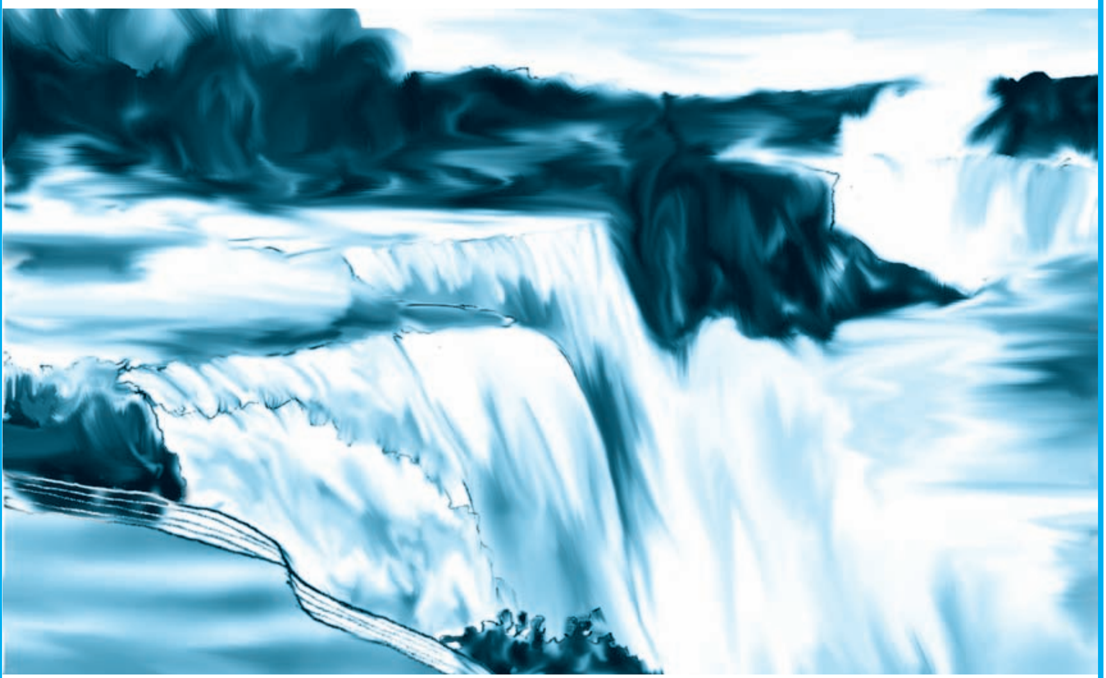

घोड़े के खुर के आकारवाला यह नितांत मनोहर जलपात अमेरिका और केनड़ा देशों की सीमा में है। अमेरिका की ओर के प्रदेशों में एक छोटा जलपात है। केनड़ा के प्रदेश में बृहत् जलपात गर्जन करता है। इसे देखने जानेवालों की संख्या ही अधिक

है। दोनों ओर जो होटल, मोटल, विश्रांतिगृह, रेस्टोरा, विविध तरह की दूकानें हैं उनकी संख्या, जो लेखा-जोखा रखते हैं, वे ही बता सकते हैं। पहली बार वहाँ जानेवाले उनकी असंख्यता, ऊँचाई, विस्तार, चित्र आदि देखकर दंग रह जाते हैं। कुछ होटेलों में पाँच-छः हज़ार कमरे होते हैं तो उनके बारे में और क्या बताये! अमेरिका के अध्यक्ष पद की स्पर्धा में वहाँ की डेमोक्रेटिक रिपब्लिकन पार्टी जो मदद देती है वह अद्भुत है। ऐसी मदद के लिए नयागर की बार बार अपेक्षा करते हैं तो इसके बृहत और महत् के लिए अलग गवाह की ज़रूरत नहीं।

इस जलपात की और एक विशेषता यह है कि सर्दियों में उत्तर अमेरिका के नदी-सरोवर जम जाते हैं। परंतु सिर्फ नयागर जलपात नहीं जमता। फूर्ति से घुसनेवाला उसका पानी अपने गर्जन से ही काफ़ी ताप पैदा करते घनीभूत होने से रोकता है। फिर भी सर्दियों में घनीभूत न होने पर भी घनीभूत पानी नयागर जलपात में गिरते देखने के लिए लोग जाते हैं। नाना आकृतियों में घनीभूत पानी गर्जन करता नीचे गिरते समय देखने में रोमांचक अनुभव होता है। रात में रंग रंग के लक्ष विद्युत् दीपों का भाँति भाँति का प्रकाश उन घूमता पानी चट्टानों पर गिरने पर वह एक यक्ष किन्नर लोक के रूप में दिखने लगता है।

अबतक जाने कितने लोगों ने देखा होगा इस विश्व विख्यात जलपात को! हर साल दसलाख से भी अधिक लोग इस प्राकृतिक स्वर्ग को देखते हैं। इसके लिए योग्य सुविधाएँ वहाँ सृजित होती हैं। उस रोमांचक चौड़े और पींडाकार जलपात के पीछे जाकर उसे अत्यंत नज़दीकी से देखने की व्यवस्था है। जलपात जाकर विशेष पोषाक में, भीगनेवाली उस हिम बाला' नामक स्थान के अप्रतिम सौंदर्य देख सकते हैं। नदी के आड़े बाँधी रस्सी सड़कों के लटकते पालने में बैठकर समस्त परिवेश के सौंदर्य का आस्वादन कर सकते हैं।

सब से बढ़कर स्कैलान गोपुर पर चढ़कर समग्र दृश्य का सिंहावलोकन कर सकते हैं। यह स्कैलान नये जगत् के विस्मयों में एक है। आठ सौ फीट ऊँचे इस नव्य भव्य गोपुर पर चालीस से भी अधिक दुकानें हैं। गोपुर के तलभाग में विविध विलास वस्तुओं की कई दुकानें हैं। गोपुर के अंतिम छोर में चक्र जैसे घूमनेवाला होटल है। यहाँ रात में नाच-गान होता है। पियक्कड़, कला रसिक, विलासी, विहारी इसे भूलोक का स्वर्ग समझते हैं; रात में नृत्य देखते हुए जगमग प्रकाश में नयागर जलपात की मोहकता का आस्वादन कर सकते हैं। नयी जोड़ी के लिए तो यह नंदनवन है। ''आप कोई भी हो, आपकी कामना जो भी हो वह यहाँ पूर्ण होती है'' वाला फलक इधर उधर

लगा रहता है। सभी ऋतुओं में यहाँ सभी कमरे भरे रहते हैं। पैसे देकर पहले ही आरक्षित रखना चाहिए। यहाँ जो नहीं मिलता वह कोई चीज़ ही नहीं। यहाँ जो मिलता है वह कहीं नहीं मिलता। विश्व के पुरुषों ने यहाँ ठहरकर भावपरवशता से दिन-रात बिताये हैं। एलिवेटर के द्वारा चढ़ते ही मुग्ध करनेवाली गोपुर की मोहकता चढ़नेवालों पर हावी होती है। चढ़ने पर आँखें चौंधियानेवाले रंगों के प्रकाश में नयागर नगर जलपातों की सुंदर दृश्यावली देखनेवालों को मूक विस्मित कर देता है।

यहाँ के अन्य आकर्षण भी उल्लेखनीय हैं। मोम का वस्तु संग्रहालय है। इनमें मोम से बने व्यक्तियों की कई नमूने की मूर्तियाँ हैं। वे अपनी वास्तविक आवाज़ में जब बोलने लगते हैं तो देखनेवाले विस्मित हो जाते हैं। विश्व के श्रेष्ठ पुरुषों की कई मूर्तियाँ हैं।

वह सारा प्रदेश एक विशाल वैविध्यमय उद्यानवन है। वहाँ जो वृक्ष नहीं वे कहीं भी नहीं। भारत के भी वृक्ष हैं। वह गुलाब वन अनुपम है। सभी रंगों के, सभी जातियों के गुलाब हैं। देशी गुलाबों के 49 पुष्पों से निर्मित घड़ीयाल, नगर से आवृत्त नयागर नदी, भूमाकृति के साथ गिरता जलपात, देश-विदेश के दर्शक, पोषाकों में हावभाव, नखरे, नृत्य, गान, क्रीडाएँ किसका वर्णन करे, किसका छोड़ दे। बयान प्रत्यक्ष देखने की बराबरी कर सकता है क्या ?

सर्वजन कवि सर्वज्ञ

एक भाषा के सभी लोगों द्वारा पसंद किए जानेवाले कवि विरले ही हैं। हरेक भाषा में एक दो कवि ऐसे मिलेंगे। ऐसे कवियों में तमिल के तिरुवळ्ळुवर, तेलुगु में वेमन, मराठी में स्वामी रामदास, हिन्दी में कबीर, कन्नड़ में सर्वज्ञ उन भाषाओं के श्रेष्ठ कवि रहे हैं। सभी के मन में इनके घर निर्मित हैं। इनकी कविताओं में कलात्मकता ज्यादा न होगी। परंतु लोकानुभव सार ही यहाँ घनीभूत होने से उनके काव्य सबको प्रिय हैं।

मुंडाया सिर, ओढ़ा कंबल का टुकड़ा, हाथ में लाठी, वदन में तेजस – देखनेवाले अचंभे में पड़े ऐसा मूर्तिस्वरूप। झुंड से बिछुड़े हाथी को किसी की परवाह नहीं। किसी की कृपा पर जीवन उससे कोसों दूर। 'कृपा के अमृत से बासी अन्न बेहतर है, 'राजमहल के पराधीन जीवन से अलग रहा मंदिर बेहतर है', 'अपमान के भोजन से उपवास करना बेहतर है' कहकर सर्वज्ञ ने घोषणा की थी। किसी के अधीन न रहकर 'जगत में स्वातंत्र्य ही बेहतर है' वाले अपने विचार के अनुसार सर्वज्ञ जीवित रहे। 'बड़ा देश है, भिक्षुकों से बढ़कर धनी कौन' ऐसा विश्वास है। विचारवान मस्तिष्क है। अनुभव से भरी छाती है। और क्या चाहिए स्वतंत्र होनेवाले जीवन के लिए। 'जीवन में बंधन में नहीं पड़ना चाहिए।' सर्वज्ञ ने कहा और वे कभी भी बंधन में न पड़े।

na.jpg

त्रिपदि का त्रिविक्रम :

कन्नड़ भूमि में भटकते रहे इस त्रिविक्रम ने अनुभवी का वेद ही हमें प्रदान किया। इनकी रचनाएँ 'वचन' के नाम से प्रकाशित होने पर भी वे त्रिपदि छंद में हैं। त्रिपदि कन्नड़ छंद की गायित्री है। महाकाव्यों में उसके लिए स्थान न मिलने पर भी इसी छंद में पतिव्रताओं के गीत रूपायित हुए। हरिहर के हाथ में रगळे, रत्नाकरवर्णी के हाथ में सांगत्य पड़कर परम गति पाने के समान सर्वज्ञ के हाथ में त्रिपदि पड़कर उसने अपनी त्रिविक्रमता साध ली। त्रिपदि के तीन चरण वामन के तीन पाद के समान ही है। एक एक चरण में एक एक अर्थ-संसार है।

ऐसी कोई विषयवस्तु नहीं जो इन त्रिपदियों में नहीं है। अध्यात्म, योग, धर्म, नीति, व्यवहार, वैद्य, कृषि, ज्योतिष, कुल, जाति, पंथ, कालज्ञान, गुण, दोष, सज्जन, दुर्जन, भाषा, देश, भगवान, राजनीति – आदि आदि विषय यहाँ चर्चित हैं, मथित हैं और अपना खोखलापन मिटाकर ठोस मात्र रह गया है। कहीं भी पूर्वाग्रह नहीं, कहीं भी ऊँच-नीच का झगड़ा नहीं। भला क्या है, बुरा क्या है – उसकी परीक्षा की गयी है वरना कोई भी उपेक्षित नहीं है। सर्वज्ञ की दृष्टि विश्व विशाल दृष्टि है :

बस्ती के सभी रिश्तेदार है, गली के सभी बंधु

जब धरती ही मेरा कुलदैव है तो किसको छोडूँ?'' कहकर प्रश्न करते हैं।

सर्वज्ञ ने जीवन को परखकर उसके अंतर्गत जो अच्छे अंश हैं, उनका आकलन किया। निषिद्ध अंशों को निकालकर फेंक दिया। इसप्रकार फेंके थोपे विषयों में अंधश्रद्धा,

कुलजाति, ऊँचनीच की कल्पना आदि हैं, 'छूत, सूतक' आदि बुरी प्रथाएँ हैं। दुर्गुण हैं, दुष्टवृत्तियाँ हैं। और जीवन को कांतिहीन, दोषयुक्त बनानेवाले हैं और बाँध रखनेवाले सभी हैं। सभी जगह वैचारिकता के लिए अग्रस्थान है, मानवीयता के लिए आद्यता है। व्यवहारिकता के लिए स्थान है, भावातिरेक के लिए स्थान नहीं। अतिमानुषता, असहजता, उत्प्रेक्षा आदि के लिए स्वागत नहीं। सहजता, स्वाभाविकता और यथार्थता ही प्रमुख लक्षण हैं।

फिर इन त्रिपदियों की शक्ति के लिए साक्षी के रूप में कुछ त्रिपदियों का यहाँ उल्लेख किया जा सकता है।

मानव को क्या बनना चाहिए ?

''कुछ भी बने तो क्या हुआ, जब तक वह खुद नहीं बनता
खुद बनकर अपने को जाननेवाले
लोक में कुछ भी बने तो क्या हुआ, सर्वज्ञ''

अज्ञान कैसे मिटेगा ?

''ध्यान रूपी नयी बाती मौन रूपी घी
स्वानुभव रूपी प्रकाश
ज्योति बन अज्ञान को भस्म करेगा सर्वज्ञ''

यह दीप जीवन ज्योति न बनेगा क्या ?

एक अपूर्व बिंब :

''तन रूपी बाँबी के लिए बोलता जिह्वा सर्प है
अति रोष रूपी विष चढ़ने पर
समता गारुडी के समान है सर्वज्ञ।''

यह कैलास के लिए प्रवेशपत्र है :

''अन्न परोसना, सत्य बोलना
अपने जैसे दूसरों को देखना
इससे कैलास का वैभव ही आयेगा सर्वज्ञ''

हानि करने की बुद्धि :

'' हानि करने की बुद्धि के साथ दुर्बुद्धि मिल जाती है
तो जंगल में आग लगने पर उसके साथ
मारुत के मिल जाने की भाँति है सर्वज्ञ''

बोल नहीं, ज्योति

सर्वज्ञ के मुँह में कन्नड़ बोल केवल बोल नहीं रहा, वह ज्योति बना। वह बात चाहे आँख को दिखे, कान में पड़े, हृदय में दीप जलने के समान है। ज्योति छलकती है। सर्वज्ञ की भाषा पर कविवर बेन्द्रे का कथन

द्रष्टव्य है : ''आज का युग वाक्चातुर्य का युग है। भाषा सीखना हो तो सर्वज्ञ के वचनों के अखाड़े में साधना करनी चाहिए। चुस्त-धारदार, काटनेवाला-चुभानेवाला, हँसी-मज़ाक, नय-विनय इन पकड़ को सीखना हो तो इन वचनों के साथ जान-पहचान बढ़ाना चाहिए।

सर्वज्ञ के हाथ लगने से कन्नड़ भाषा के लिए ताकत आयी है, नज़ाकत आयी है, ख्याति मिली है। हर त्रिपदि में कहावत, अकल की बात या लोकोक्ति, अंगूठी में रत्न बिठाने के समान है।

बात का महत्व समझने से ही सर्वज्ञ की बातों को ज्योति बनना संभव हुआ। ''बोल से ही हँसी, बोल से ही द्वेष हत्या; बोल से सारी संपत्ति, लोक में बोल ही माणिक है'' कहकर घोषित करनेवाले सर्वज्ञ की सारी बातें माणिक है। हम सब को वाक्-चतुर होना चाहिए।

बात करना न जानने से उत्पन्न बुरी हालत से बचने के लिए सर्वज्ञ की सारयुक्त वाणी दिमाग में भर लेनी चाहिए। 'जो बात करना जानता है उसे बात ही माणिक है, जो बात करना न जानता है माणिक छेदयुक्त होने के समान है' यह सर्वज्ञ का विचार है। परंतु एक चेतावनी है कि 'धीरे बहनेवाला पानी पत्थर को भी भेद सकता है।' इसलिए 'पत्थर पर पानी बहने के समान बात को सोचकर जो बोलता है उसकी समझदारी सब से बढ़कर है।' साथ ही यदि बोलनेवाला रसिक हो तो उसका रंग ही अलग है।' 'रसिक की बात शशि के उदय के समान है।'

बात समय पर निकले तो उसकी शक्ति अधिक है। समय पर निकली बात मरे के जी उठने के समान है। 'समय बीतने पर निकली बात हाथ से छूटी मोती के समान है।' सर्वज्ञ की बात समय पर निकली बात है।

सर्वज्ञ का संदेश

सर्वज्ञ को इस जगत के जीवन पर जिगुप्सा नहीं। खुद विरागी या योगी होने पर भी साधारण मनुष्य गृहस्थ होकर ही सद्गति पाये - यही उनका विचार है।

सर्वज्ञ गुरु को श्रेष्ठ स्थान देते हैं : गुरु नर नहीं है। 'सुरतरु पेड़ नहीं, सुरभि गाय नहीं, परुष पत्थर नहीं, गुरु नरों में नहीं।' सर्वज्ञ के ये गुरु कोई भी हो। सर्वज्ञ की सम दृष्टि की प्रशंसा करनी ही चाहिए। एक ही शर्त है कि गुरु को अपने आप को जाननेवाला होना चाहिए। और शिष्य को भी 'अपने आप को जानने' का मार्ग दिखाने वाला होना चाहिए।

भगवान की कल्पना प्रारंभ से मनुष्य को सता रही है। आदि मानव से वेदमानव तक आदमी ने कितने ही देवी-देवताओं की कल्पना की। सर्वज्ञ का अभिमत स्पष्ट है।

''एक नहीं तो क्या जग में दो कर्ता हैं? फिर
एक ही सर्वज्ञ कर्ता है जग में, एक ही देव-सर्वज्ञ।''

यह दैव अनुग्रह करता है अपने बच्चों के द्वारा ही। इसलिए

''देव वह है देव है यह देव कोई और है, मत कहो

उस देव का देव, भूमि के प्राणियों की भलाई करनेवाली ही देव है, सर्वज्ञ।''

वह देव वहाँ है, यहाँ है कहते लड़ो मत।

वहाँ है, यहाँ है, कहाँ है मत कहो
पत्थर-सा है, परंतु मानव का अंतःकरण
द्रवित हो तो देव वहाँ है देखो, सर्वज्ञ।''

उस देव को देखने का सरल उपाय है पत्थर जैसे दिल को द्रवित कराना। सदय हृदय ही उसका सदन है। इसलिए हृदय गलकर भक्ति के रूप में उसकी ओर, गुरु जनों की ओर बहना चाहिए। मनुज प्रेम बन उसके बच्चों की ओर बहना चाहिए; उस कारण अनुकंपा बनकर सभी जीवराशि की ओर बहना चाहिए। तभी तो हिंसा के लिए जगह नहीं। राग द्वेष के लिए आश्रय नहीं। यह प्रेम का, प्रेम पाने का धर्म है, हत्या का, हत्या कराने का धर्म नहीं। 'हत्या के धर्म को चूल्हें में डालो'। मगर मारे बिना जीना भी संभव नहीं। ''जीव जीव को खाकर जीता है जग सारा। जीव से बाहर खानेवालों को मैंने न देखा – जीव ही जग है – सर्वज्ञ।'' आधा जगत् चर जीव को खाता है, और आधा जग अचर जीव खाता है देखो – सर्वज्ञ।'' सारा जग जीव ही। जीव जीव को ही खाकर जिंदा है। परंतु वह सिर्फ जीने के लिए। उसे शिकार, युद्ध या जिह्वा-चापल्य के लिए नहीं बढ़ाना चाहिए।

''जो भी पढ़ा गया वह खाये ईख का छिलका है। पढ़ाई का आंतर्य समझनेवाले को छिलका ईख बनने के समान – सर्वज्ञ।'' सर्वज्ञ ने पढ़ाई के आंतर्य की ओर हमारा ध्यान खींचा है। पढ़ाई का आंतर्य क्या है ? अक्षर, अंक, संख्या के लिए सीमित न होकर, पढ़ाई हमें विवेक प्रदान करने वाला होनी चाहिए। इसे सद्विवेक कहते हैं। इससे सत्य-असत्य, अच्छाई-बुराई, हित-अहित जानना आसान होता है। आज के शिक्षाविदों को इसके बारे में सोचना है।

सर्वज्ञ ने बताया है राष्ट्र का विकास किससे ? यह आज भी प्रासंगिक है। भारत जैसे कृषि प्रधान देश में और भी अधिक प्रासंगिक है।

''करोड़ों विद्याओं से कृषिक विद्या बेहतर है।
कृषि कर्म बिना देश का खेल ही नहीं चलता - सर्वज्ञ।''

कुल-गोत्रों का खण्डन :

चलते एक ही भू पर, पीते एक ही पानी
जलनेवाली अग्नि एक ही, तो बीच
कुल गोत्र कैसे ? – सर्वज्ञ।

सर्वज्ञ वचन-सार

सर्वज्ञ सभी नहीं, जानकार बहुत नहीं
पंडितों के होने से भी प्रयोजन नहीं
साहित्य सब के लिए नहीं है – सर्वज्ञ।

बेमन से मंदिर-परिक्रमण करने से
क्या फायदा ? वह बैल के ढोकर
कोल्हू चलाने जैसे – सर्वज्ञ।

अपने आपको जो जानता, उसमें भेदभाव न होता
उसके न अपने हैं न पराये, क्योंकि

त्रिभुवन उसी में है – सर्वज्ञ।

अपना चेहरा, अपनी पीठ दीखती नहीं
अपनी आँखों को, न मालूम होता
अपने गुण दोष, इसे समझानेवाला चाहिए – सर्वज्ञ।

क्रोध तो पाप का मूल है
कूप में फाँसी का फँदा फटने जैसा
क्रोधी सीधा नरक में उतरेगा – सर्वज्ञ।

तब आओ, अब आओ, फिर आओ
न कहकर तुरंत बुलाकर देनेवाले
का धर्म सुवर्ण बने बिना न रहेगा – सर्वज्ञ।

अन्नदान से बड़ा कोई दान नहीं,
अन्न से श्रेष्ठ कुछ भी नहीं, जगमें
अन्न ही प्राण है – सर्वज्ञ।

राज सभा में जब हो, उठकर बात न करो
बारबार मत खड़े हो जाओ, सभासदों की
निंदा न करो – सर्वज्ञ।

सज्जनों का संग मधुमक्खी के छत्ते के समान है
दुर्जनों का संग-स्नेह गुस्लखाने के मैले
पानी के समान है – सर्वज्ञ।

दंतपंक्ति बीज स्थित जिह्वा के समान
दुर्जनों के बीच सज्जन खड़ा है
देखो – सर्वज्ञ।
जातिहीन के घर की ज्योति क्या तुच्छ है?
जाति विजाति की बात न करो, भगवान जिसे
पसंद करते हैं वही श्रेष्ठ जाति का है – सर्वज्ञ।

सर्वज्ञ के मौलिक वचन असंख्य हैं। बच्चे इसमें आये वचनों को याद रखे तो काफी है और वे जीवन भर पथ-प्रदीप बनेंगे।

परिशिष्ट

घी रोटी ले लो

प्रथम छपाई की पहली बात

बाल मित्रों,

तुम लोगों के लिए कभी-कभार लिखी कविताओं को आज इकट्ठा कर, हाथ में धर रहा हूँ। मेरे विद्यागुरु की फ़रमाइश पर लिखी पहली कविता है 'मेरा घोड़ा'। उसके लिए बालमित्रों से प्राप्त प्रशंसा से प्रेरित होकर इन कविताओं को रचा। तुम लोगों को इनमें कुछ कविताएँ भी पसंद आये तो मुझे प्रसन्नता होगी। तुम्हीं भगवान हो, तुम लोगों को खुशी देना ही पूजा समझता हूँ।

इन्हें लिखते समय कसौटी में कसकर 'यह अच्छा है, यह अच्छा नहीं' कहकर निर्णय देनेवाले तुम लोगों जैसे ही हैं मेरी बच्ची - विजयलक्ष्मी, शिवगीता, भारती। उनकी पसंद की कविताएँ ही यहाँ सम्मिलित हैं, अतः मुझे विश्वास है कि तुम भी पसंद करोगे। भारती ने तो 'शृंखला' के बिना यह संग्रह पूर्ण न होगा कह हठ करके इसमें सम्मिलित 'शृंखला' को उसने ही लिखकर दिया है। यहाँ उसका स्मरण करेंगे तो, मुझे विश्वास है कि तुम लोगों को भी खुशी होगी।

बेंगलूर
अगस्त 1964 **सिद्धय्या पुराणिक**

दूसरे संस्करण पर 'दो बातें'

मुझे पता नहीं था कि यह बाल कविता संकलन इतना लोकप्रिय होगा और भारत सरकार से पुरस्कार प्राप्त करेगा। इसके दूसरे संस्करण का प्रकाशित होना हर्ष का विषय ही है। इसको संभव बनानेवाले कर्नाटक के बालक तथा कर्नाटक सहकारी प्रकाशन मंदिर के कर्णाधार को मेरे स्मरण।

28 दिसंबर 1973 **सिद्धय्या पुराणिक**

छम छमाता झुनझुना

मेरी चार बातें

1950 होगा। एक बार मेरे कन्नड़ गुरु प्रो. डी. के. भीमसेनराव के घर जब मैं गया था, तो वे 'सत्याश्रय पाठ्य पुस्तक माला' को रूपित करने के कार्य में लगे हुए थे। मुझको देखते ही तीसरी, चौथी कक्षा की पाठ्य पुस्तकों के लिए दो बाल कविताएँ चाहिए, अभी लिखकर दो कहकर उन्होंने कागज और पेन मेरे आगे बढ़ाये। जाने वह कौन-सा अमृत क्षण था 'दादा की लाठी मेरा घोड़ा' कविता और 'भालू को नचाते आया सिद्दिद्दि बाबा' कविता कुछ ही क्षणों में लिखकर सौंप दिया। उन्हें अतीव आनंद हुआ। उन्होंने प्रोत्साहित करते कहा, ''तुम बच्चों की कविता सुंदर लिखते हो, लिखते रहो''।

इन दो कविताओं का बच्चों के लिए बहुत पसंद आना मालूम होने पर भी मैंने बालगीत रचना आगे न बढ़ाया। कभी कभार लिखते रहने से मेरे बालगीतों का पहला संग्रह प्रकाशित होने 1954 तक मुझे इंतजार करना पड़ा। उस साल बेंगलूर के 'कर्नाटक सहकारी प्रकाशन मंदिर नियमित' ने मेरा 'घी रोटी ले लो' बालगीत संग्रह प्रकाशित किया। उसे भारत सरकार का पुरस्कार भी मिला और 1973 में दूसरा संस्करण भी निकला।

इसके बाद मेरा बालगीत-रचना कार्य ऊँघने लगा। इस बीच मित्र शं. गु. बिरादर ने गुलबर्गा के 'जीवन विकास' में लिख दिया कि मेरे जैसे लोगों का बाल साहित्य रचना कार्य, न आगे बढ़ाना कन्नड़ में बाल साहित्य की प्रगति कुंठित होने के लिए कारण बना है। कन्नड़ में बाल साहित्य के विकास के लिए प्रयास करने और पर्याप्त अच्छा बाल साहित्य रचने से संबंधित उनकी बात मन में रह गयी। पुनः बालगीत रचना प्रारंभ हो गया।

इसी समय बाल साहित्य रचना और प्रकाशित करना ही अपने जीवन का लक्ष्य बनाकर जीनेवाले 'सिसु' संगमेश जी ने अपनी बाल साहित्य माला में प्रकाशित करने मुझसे एक बाल-गीत संग्रह की माँग की। इससे बालगीत रचना करने और भी प्रोत्साहन पाकर एक संग्रह के लिए पद्य रचने का प्रण किया।

फलस्वरूप, मेरे बालगीतों का दूसरा संकलन 'भारती साहित्य भण्डार' की ओर से प्रकाश में आया। इसका श्रेय मित्र शं.गु. बिरादर और 'सिसु' संगमेश को जाता है। सम्मिलित गीतों का विचार। बुजुर्ग जो भी लिखें, जिनके लिए वे रचे गये हैं उन कन्नड़ बालकों को पसंद आये तो काफी है।

'श्रीगिरि'
4/5, 'ए', आली आस्कर रोड
बेंगलूरु-560052

सिद्धय्या पुराणिक

रंग रंग की होली

मेरी चार बातें

कोई मेरे पीछे पड़े तभी लिखने की आदत है मेरी। इन पद्यों को मेरे पीछे पड़कर लिखवानेवाले हैं कन्नड़ बाल साहित्याकाश के नये तारे श्री टी. एस. नागराज शेट्टी। बाल साहित्य रचना ही अपने जीवन का लक्ष्य माननेवाले अब बाल साहित्य प्रकाशन योजना में लगे हुए हैं। मैं प्रार्थना करता हूँ कि उनकी यह योजना यशःप्राप्त करें। मेरा यह संग्रह प्रस्तुत योजना में लिया गया है। तदर्थ मैं उनके प्रति आभारी हूँ। साथ ही कविताओं को रचने शांत वातावरण की व्यवस्था करनेवाले दामाद श्री के. नंदीश्वर, पुत्री विजया नंदीश्वर को मेरी यादें। पोते पल्लवी, गगन, रश्मी, विद्या, अनमोल, कवन मुझमें अब भी बाल साहित्य के स्त्रोत के शेष रहने के लिए कारण बने। उन्हें शुभाशीर्वाद।

इस बालगीत संग्रह के प्रकाशन के साथ, मेरा संकल्प कि प्रारंभिक कविताओं को कन्नड़ के बच्चों को देने के संबंध में, वह धारवाड़ में संपन्न द्वितीय बाल साहित्य सम्मेलन के संदर्भ में मन में आया। वह संकल्प लगभग पूर्ण हो रहा है। मेरे लिए यह हर्ष का विचार है। कन्नड़ के बच्चों को भी हर्ष का विचार है क्या ? उन्हें ही पढ़कर बताना है।

‘श्रीगिरि’
4/5, ‘ए’, आली आस्कर रोड
बेंगलूरु-560052

सिद्धय्या पुराणिक

झंडा एक ही भारत का

मेरी बात

यह मेरा पाँचवाँ बाल-गीत संग्रह है और हमारे ही प्रकाश का यह पहला संग्रह है। प्रकाशकों के प्रति ऊबना ही 'श्रीगिरि प्रकाशान' में प्रकाशित होने का कारण है।

इसमें भी विभिन्न उम्र के बच्चों के गीत हैं। कन्नड़ प्रदेश के बच्चों ने मेरी बाल कविताओं को पसंद किया है। मुझे विश्वास है कि इन कविताओं को भी पसंद करेंगे।

मेरी अब तक की रचनाओं का और आगामी रचनाओं का समग्र भाग प्रकाशित करने की इच्छा है। वह कार्य संपन्न होगा या नहीं देखना है।

पूर्ववत् लोटस प्रिंटर्स ने इस कृति की भी सुंदर छपाई की है। उसके मालिक के प्रति आभारी हूँ।

इस ग्रंथ को सुंदर चित्रों से सजानेवाले कलाकार श्री चन्द्रशेखर गुब्बि को मेरे स्मरण।

'श्रीगिरि'
4/5, 'ए', आली आस्कर रोड
बेंगलूरु-560052

सिद्धय्या पुराणिक

न्याय निर्णय

लेखक की विनती

‘कन्नड़ में बाल नाटकों की कमी है। आप बाल नाटक लिखकर दीजिए।’ कह मेरे पीछे पड़कर मुझसे लिखवाया और उसे ‘बाल भारती’ में धारावाहिक प्रकाशित किया मेरे पुराने तथा कन्नड़ बाल साहित्य के विकास के लिए सदा प्रयत्नरत रहे मित्र श्री ‘सिसु’ संगमेश ने।

उन्होंने अब इसे पुस्तक रूप में प्रकाशित करने मान लिया है यह प्रसन्नता की बात है। कथा पुरानी होने पर भी नये ढंग से बाल नाटक के रूप में उभर आया है, इसलिए यह कन्नड़ के बच्चों को आकृष्ट करेगा। इसे खेलने मेरी अनुमति की आवश्यकता नहीं। कोई भी खेल सकते हैं, सिर्फ मुझे सूचित कर दें, बस।

श्री ‘सिसु’ संगमेश और उनके साथियों के प्रयत्न सफल हो और कन्नड़ में स्तरीय बाल नाटक साहित्य समृद्ध हो!

07-01-1986 **सिद्धय्या पुराणिक**

बच्चों का लोक विहार

मेरी दो बातें

भाई 'सिसु' संगमेश की बाल मासपत्रिका 'बाल भारती' के लिए इसमें से पाँच लेख लिखा था। उन्हें पुस्तक रूप में प्रकाशित करने का निश्चय करने पर पुनः तीन लेखों की माँग की। लिख दिया। यह बच्चों के लिए बोधप्रद भी है और आमोद देनेवाला भी है।

श्री 'सिसु' संगमेश धारवाड़ में संपन्न द्वितीय अखिल कर्नाटक बाल साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में मुझे ले गये तब बाल साहित्य में मेरी आसक्ति फिर फूट निकली। फलस्वरूप मेरा चौथा बाल कविता संग्रह और यह पुस्तक भी अब प्रकाशित हो रही है। इनके पीछे पड़कर श्री 'सिसु' संगमेश ने मुझसे जो लिखवाया उसका श्रेय उन्हीं को जाता है।

कन्नड़ प्रदेश के बच्चों को यह मेरा तोफा है। वे इसे पसंद करेंगे तो मुझे बहुत खुशी होगी।

'श्रीगिरि'
4/5, 'ए', आली आस्कर रोड
बेंगलूरु-560052

सिद्धय्या पुराणिक

डॉ. सिद्धय्या पुराणिक की कृतियाँ

कविता-संकलन

1. जलपात (1953)
2. करुणा श्रावण (1955)
3. मानस सरोवर (1959)
4. कल्लोल माले (1968)
5. मोदलु मानवनागु (1968) (पहले मानव बनो)
6. चरग (1987)
7. हाल्देने (1990)
8. मरुळसिद्धन कंते (1991)
9. समग्र काव्य (2008)

वचन संग्रह

1. वचनोद्यान (1977)
2. वचन नंदन (1983)
3. वचनाराम (1992)
4. समग्र वचन (2009)

नाटक

1. आत्मार्पण (1942)
2. रजत रेखा (1962)
3. भारतवीर (1963)
4. भग्न नूपुर ((1984)
5. समग्र नाटक (2010)

कथा-संकलन

1. कथा मंजरी (1951)
2. तुषार हार (1982)

उपन्यास

1. त्रिभुवनमल्ल (1974)

बाल कविता-संकलन

1. तुप्पा रोट्टी गे गे गे (1964) (घी रोटी ले लो.....)
2. गिल गिल गिलगच्चि (1978) (छम छमाता झुनझुना)
3. तिरुगेले तिरुगेले तिरुगुय्याले (1981) (घूमो घूमो झूला)
4. बण्ण बण्णद ओकुळि (1987) (रंग रंग की होली)
5. भारतवेल्लके बावुटवोंदे (1991) (झंड़ा एक ही भारत का)

बाल नाटक

1. न्याय निर्णय (1986)

बाल यात्रा साहित्य

1. मक्कळ लोक संचार (1989) (बच्चों का लोक विहार)

जीवनियाँ

1. शरण चरितामृत (1964)
2. सिद्धराम (1974)
3. बसवण्णनवर जीवन हागू संदेश (1977)
4. नज़ीर अकबराबादी (1978)
5. हर्डेकर मंजप्पा (1978)
6. मिर्जा गालिब (1979)
7. महादेवी (1981)
8. अल्लमप्रभु (1989)

अन्य कृतियाँ

1. विकासवाणी (1955)
2. ग्राम स्वराज्य (1982)
3. चिंतन लहरी (1989)
4. शरण सरणि (1992)

अनुवाद

1. नज़ीर अकबराबादी (1978)
2. ओंदु ऊरिन कथे (एक गाँव की कथा)

डॉ. सिद्धय्या पुराणिक-जीवन परिचय

18-6-1918	– जन्म : द्यांपुर में, यलबुरगी तालूक, कोप्पळ जिला (कर्नाटक) पिता : कल्लिनाथ शास्त्री, माता : दानम्मा
1932	– 14वें वर्ष में 'बेळगु' (प्रकाश) कविता-रचना
1932	– हर्डेकर मंजप्पा जी के साथ आलमट्टी में रहे
1943	– तहसीलदार प्रशिक्षण, नांदेड़, हैदराबाद
11-05-1944	– विवाह, श्रीमती गिरिजा देवी के साथ
1944-57	– असिस्टेंट कलेक्टर (नांदेड, गुलबर्गा), डेप्यूटी कलेक्टर (तांडूर, यादगिरि)
19-3-1958	– भारतीय प्रशासन सेवा (आय.ए.एस.)
1960-1976	– डेप्यूटी सेक्रेटरी, निर्देशक, डेप्यूटी कमीशनर, मडकेरी, बेलगाँव, कमीशनर (यातायात, श्रम)
1976	– मानद डाक्टरेट, कर्नाटक विश्वविद्यालय, धारवाड़
30-6-1976	– सेवा निवृत्त और विश्रांत जीवन
1978	– 'वचनोद्यान' के लिए कर्नाटक राज्य साहित्य अकादमी पुरस्कार
1980	– 'बिल्वार पुरस्कार' (भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता) 'वचनोद्यान' कृति के लिए
1981	– माळवाड़ पुरस्कार
1981	– राज्य स्तर पर अभिनंदन समिति से सत्कार
1982	– कन्नड़ राज्योत्सव पुरस्कार
1985	– धारवाड़ बाल साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष
1987	– गुलबर्गा में संपन्न कन्नड़ साहित्य परिषद् की ओर से 58वें अखिल भारत कन्नड़ साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष
05-9-1994	– मृत्यु

घी रोटी ले लो

अनुक्रमणिका

1)	मेरा घोड़ा	1
2)	शृंखला (सींकचा)	2
3)	एक बालक की चाह	3
4)	अ आ इ ई गीत	4
5)	सिद्धिद्दि बाबा	5
6)	बंदरपन	6
7)	बालक की विनती	7
8)	हाथ में तलवार दो	8
9)	आओ खेले	9
10)	चंदामामा चंदामामा	10
11)	घी रोटी ले लो	12
12)	दोसा	13
13)	रेल गीत	14
14)	इनको छोड़कर ये कौन ?	15
15)	प्रश्न	16
16)	सब्जीवाले का गीत	17
17)	डुगडुगी	18
18)	क्षणिकाएँ	19
19)	गधे का दंभ.....	20
20)	शाला का बगीचा	22

छम छमाता झुनझुना

अनुक्रमणिका

1)	छम छमाता झुनझुना	25
2)	तुम भी हँसो हँसाओं जग को	26
3)	रंग-बिरंगा पंख	27
4)	दोस्तों को खाने बुलाऊँगा माँ	28
5)	मज़ा करो मज़ा	29
6)	आओ बादल दौड़े आओ	30
7)	बरसो पानी बरसो	31
8)	मेमना चाहिए मेमना	32
9)	मिठाई ले लो बच्चो	33
10)	कपास के खेत में	34
11)	मालिक के क्रोध पर, मार पड़ी बिल्ली पर	35
12)	उठो मुन्ना उठो	36
13)	जो जाहे चुन लो	37
14)	कन्नड़ भाषी बन बढ़ेंगे आगे	38
15)	हम बालक हैं	40

घूमो घूमो झूला

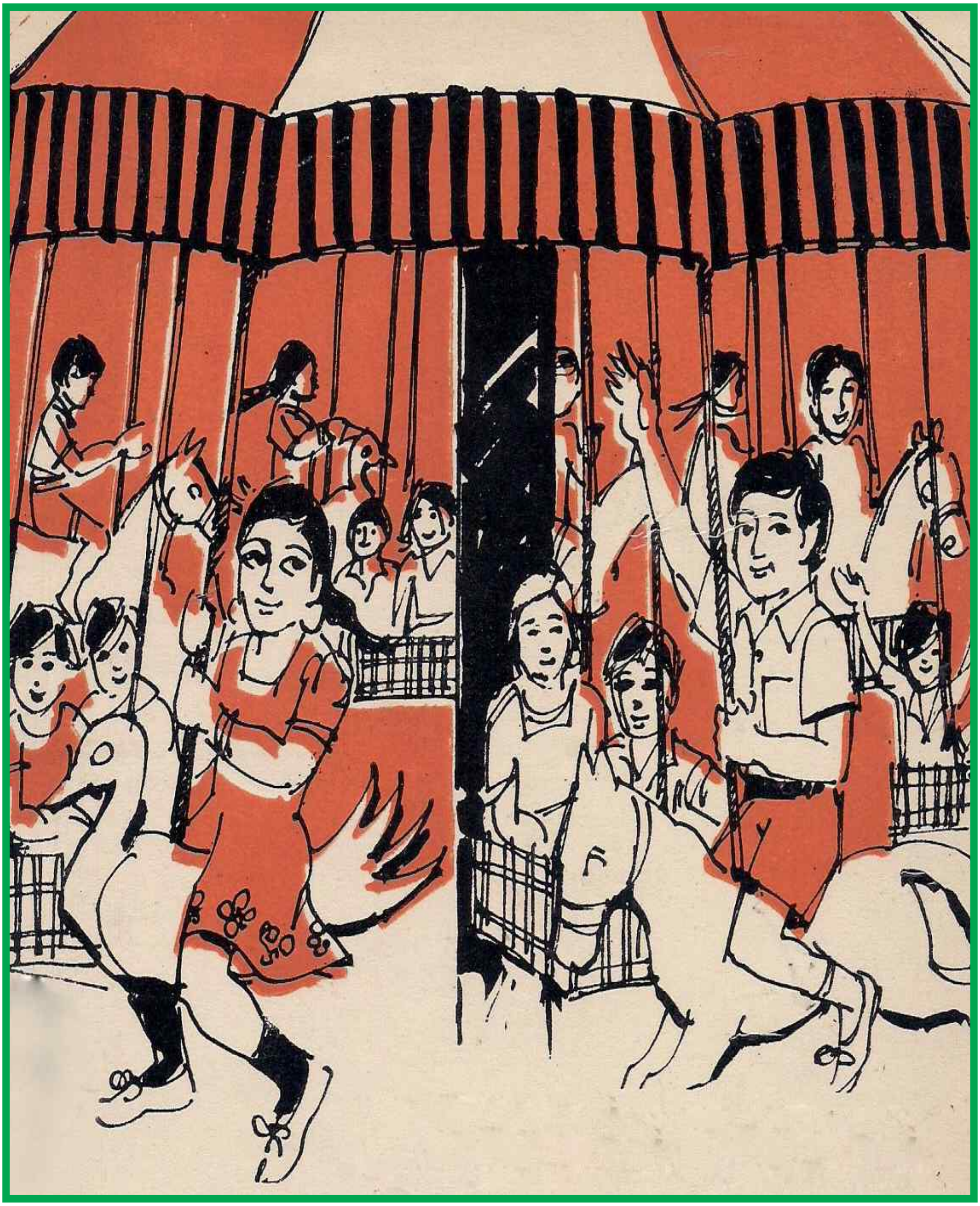

अनुक्रमणिका

1)	कुछ न कुछ दिला तो बापू	43
2)	घूमो घूमो झूला	44
3)	सिखाये कन्नड़	46
4)	?	47
5)	जंगल का दीप	48
6)	माँ	49
7)	जब हो तुम आगे हार नहीं	50
8)	समय नहीं	52
9)	भारत भूमि करुनाडु	53
10)	हमारे भगवान	54
11)	कुत्ता पाला मैंने	55
12)	मेरा भण्डार	56
13)	साथी बनो	57
14)	मुन्ना	58

रंग रंग की होली

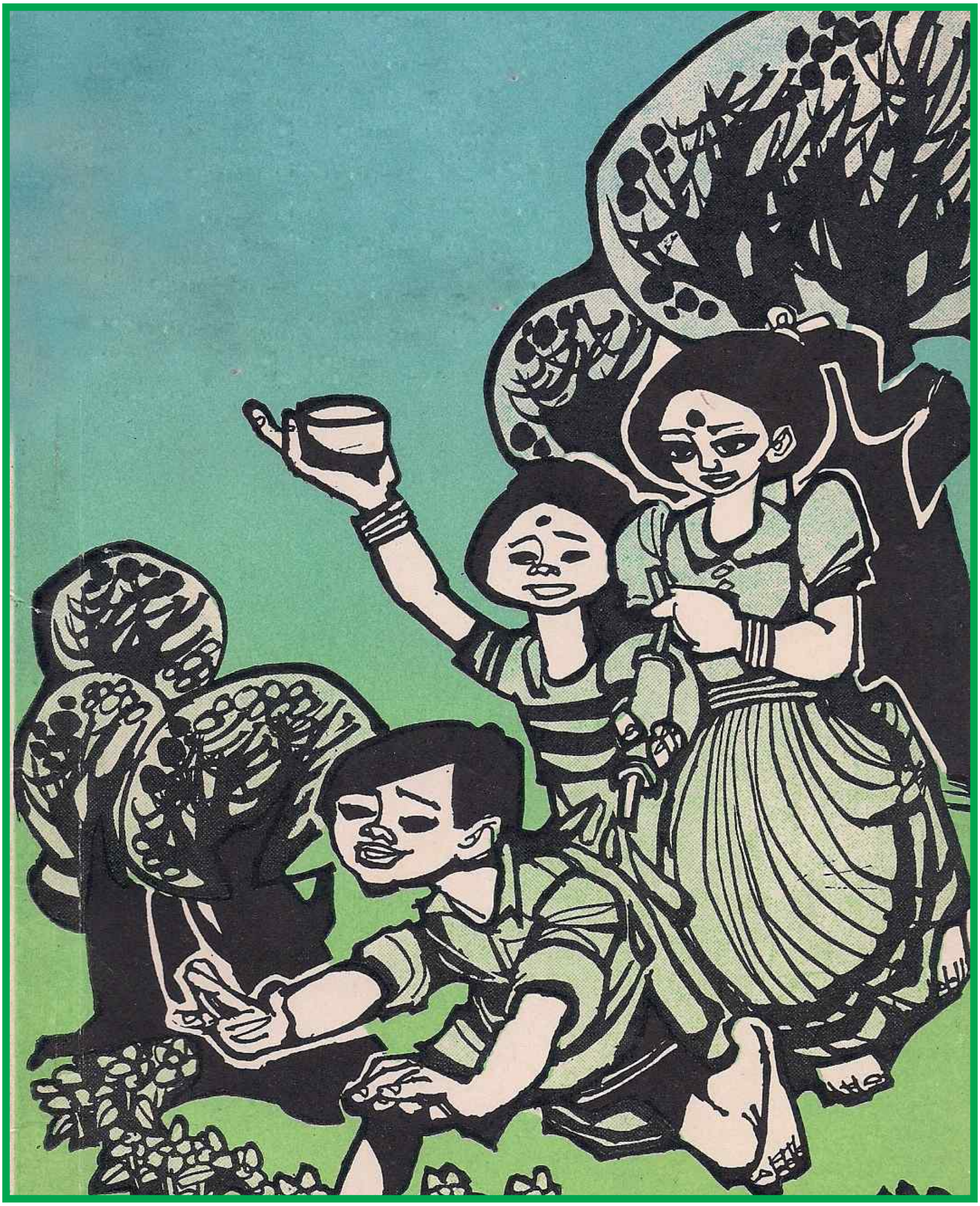

अनुक्रमणिका

1)	बच्चों का अधिकार	61
2)	ऋतु गान	62
3)	सीखिए !	64
4)	बच्चों की चाह	65
5)	विकसित होने का हठ	66
6)	इच्छा यान की	67
7)	ऊँट	68
8)	बंदर और बकरे की कथा	70
9)	मुक्तक	72
10)	सवाल-जवाब	74
11)	नेहरु चाचा	75
12)	शृंखला	76
13)	हमारा गाँव हमारे लिए स्वादिष्ट गुड़	77
14)	पूरनपूरी घी	78
15)	रथ	79
16)	नागर	80
17)	आज ही तुम पौधा लगाओ	81
18)	मेरी यादें शत शत	82
19)	बाजीगर	83
20)	रंगों की होली	84

झंड़ा एक ही भारत का

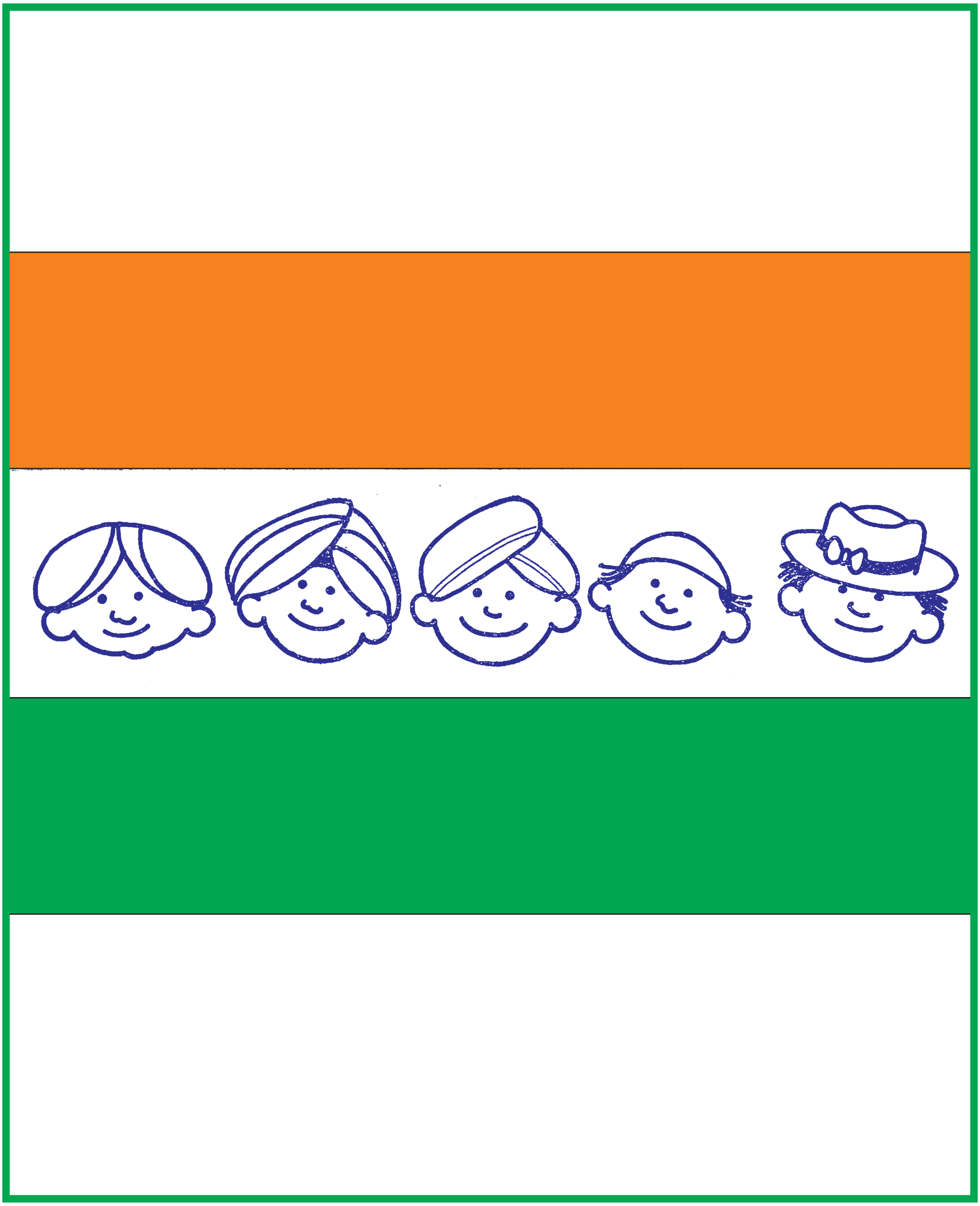

अनुक्रमणिका

1)	कन्नड़ रक्षा कवच	87
2)	ऐसी बोली भारतमाता	88
3)	हमारे नेता	90
4)	सोने की फसल	91
5)	चाह	92
6)	पार करूँगा	93
7)	कन्हैया, कन्हैया	94
8)	तुम भी जब थी मेरी उम्र की	95
9)	तुम क्या बनोगे ?	96
10)	क्यों माँ ?	97
11)	मास-माला	98
12)	दिशाओं का गीत	99
13)	जन्मदिन	100
14)	योग्यता बढ़ायेंगे !	101
15)	शृंखला	102
16)	बताश	103
17)	मुक्तक	104
18)	संपेरा	106
19)	बनिये की युक्ति	108
20)	हम मूढ़ बने तो कैसे ?	110
21)	बहुजन हिताय, बहुजन सुखाय !	111
22)	झंड़ा एक ही भारत का	112

न्याय निर्णय (बाल नाटक)

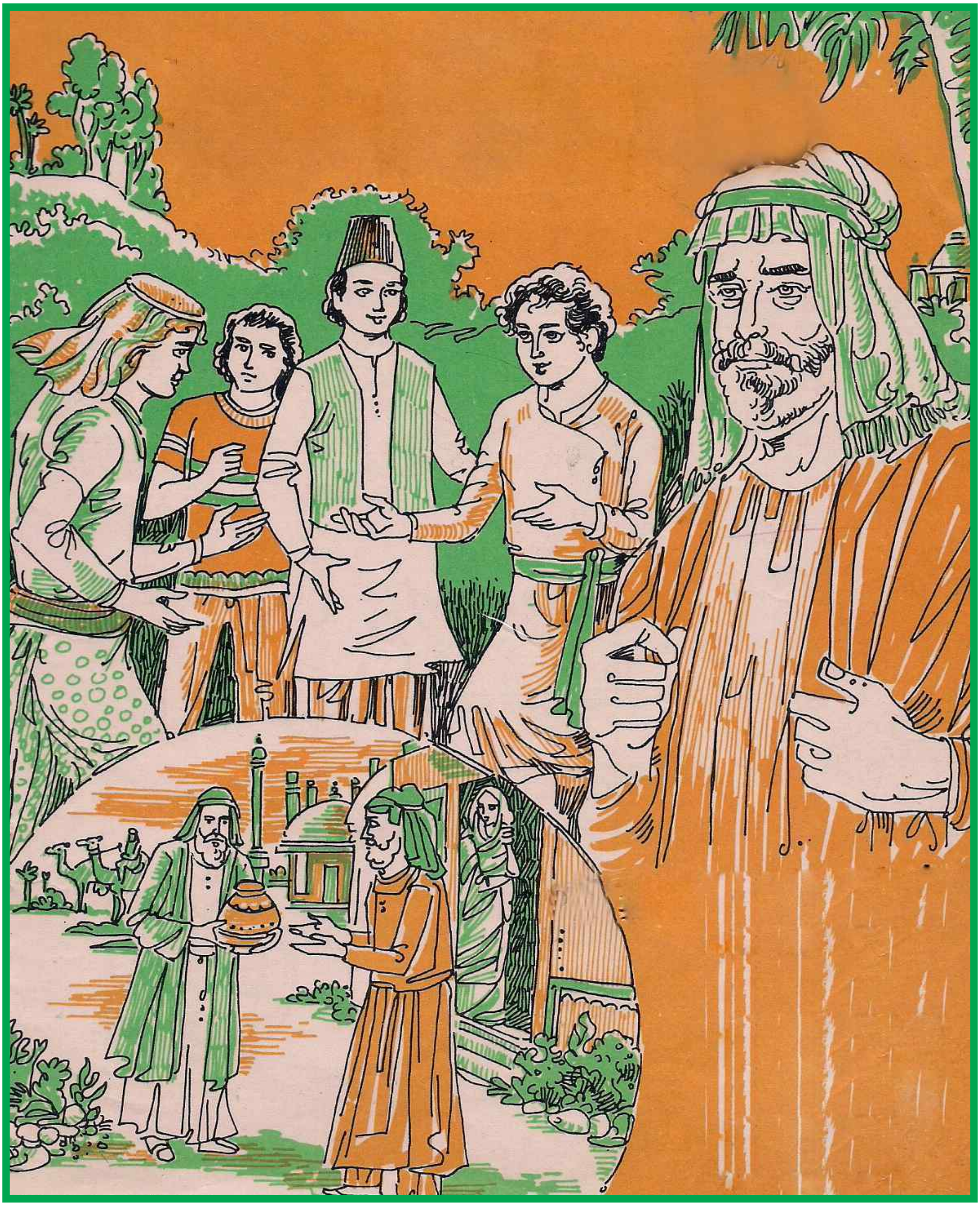

अनुक्रमणिका

1.	न्याय निर्णय	115–144

बच्चों का लोक विहार

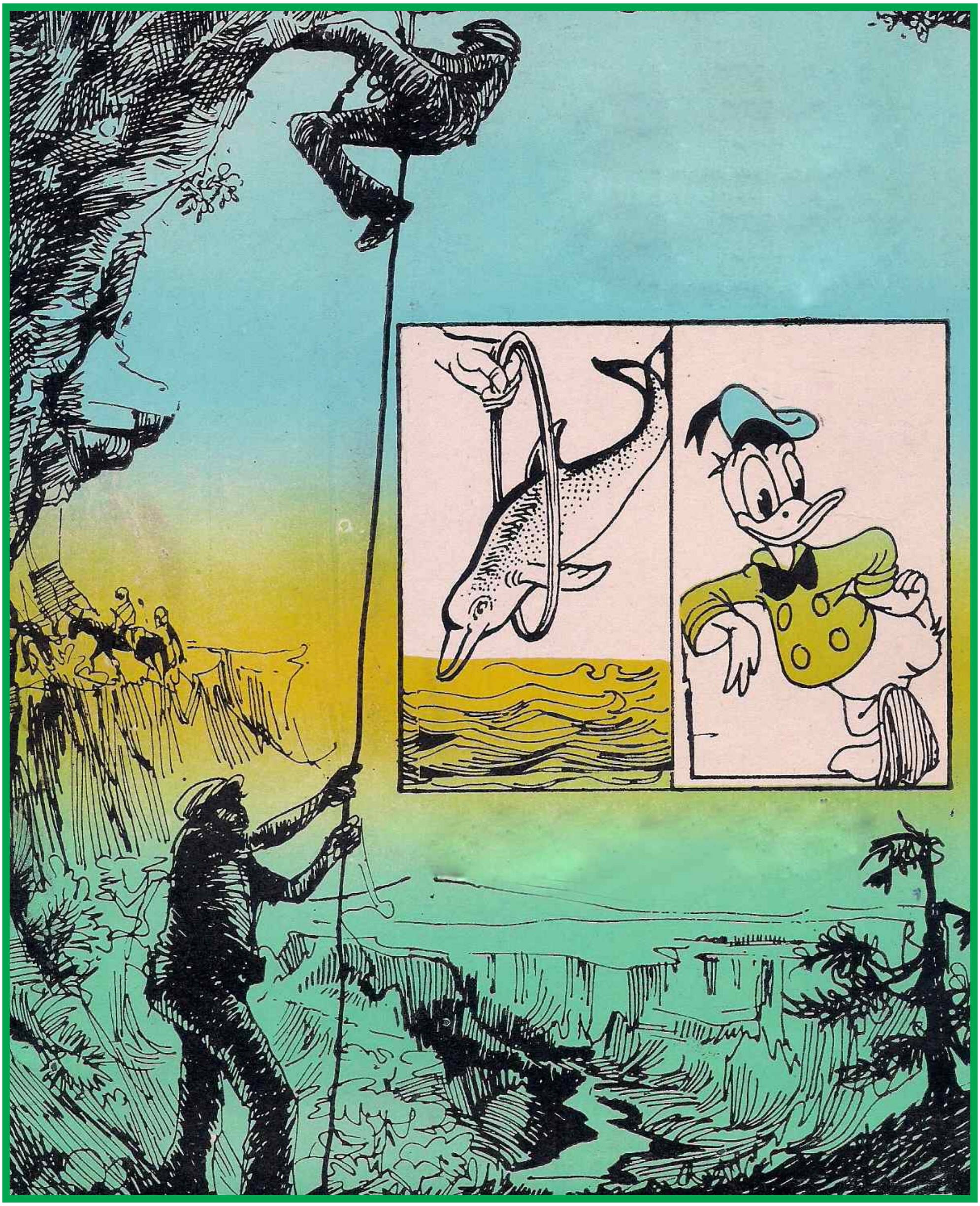

अनुक्रमणिका

1)	शुकवन	147
2)	सागर लोक	150
3)	वाल्ट डिस्नी लोक	155
4)	ग्रांड केनियन	160
5)	लूरे गुफाएँ	163
6)	बहुत बड़ा विज्ञान व्यूह	166
7)	नयागर-पात	169

सर्वजन कवि सर्वज्ञ

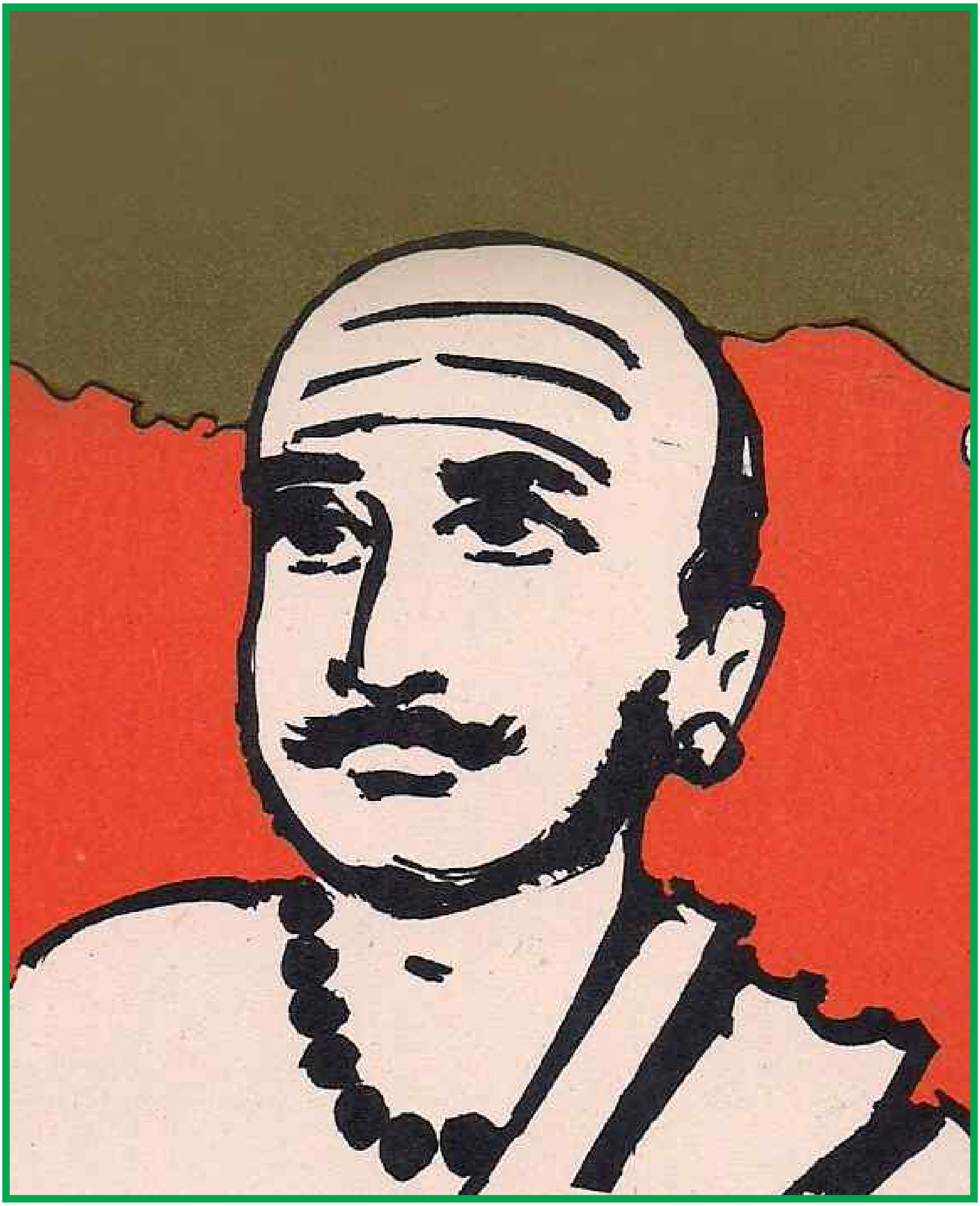

अनुक्रमणिका

1) सर्वजन कवि सर्वज्ञ 175-184

''.........ज्ञान, अधिकार, विनय, सौजन्य और सृजनशीलता का एक जगह समाविष्ट होना बहुत अनूठी बात है, यह हम सब के अनुभव में आया है। परंतु इसके अपवाद के रूप में जो श्री पुराणिक जी हैं वे प्रतिभावान्-सत्पुरुषों की विरल पंक्ति में खड़े हैं। प्रथम भेंट में ही उन्होंने अपने साहित्य-सृजन से ही नहीं अपने सुसंस्कृत व्यक्तित्व से भी मुझे आकर्षित किया। वह आकर्षण दशकों तक कांतिहीन न होकर वैसे ही ताज़ा है।

– कुवेंपु

पुराणिक जी के बचपन का एक चित्र

यह घटना ऐसी शाला में घटी जहाँ स्वयं पुराणिक जी के मामा ही मास्टर थे। मास्टर जी ने एक दिन छात्रों की दिलचस्पी को जानने के लिए कुतूहल से बच्चों को बुलाकर आदेश दिया कि तुमको जो चाहिए उसे सिलेट में लिखकर लाओ और दिखाओ। एक ने लिखा था कि मुझे खाने को चाहिए तो दूसरे ने लिखा था कि मुझे गोलक चाहिए, तीसरे ने लिखा था मुझे खडिया चाहिए और एक ने 'पूरनपूरी' चाहिए। इस प्रकार बच्चों ने अपने अपने आशय लिखकर दिखाया था। देखते ही देखते एक सिलेट ने उनका ध्यान आकर्षित किया। आँखे वहीं पर गढ़ गयीं। भौंवे चढ़ गयीं एक छात्र ने लिखा था 'मुझे विद्या चाहिए'। वही छात्र आगे डॉ. सिद्धय्या पुराणिक आय.ए.एस. बनकर ख्यात नाम हुए। इस विद्या सीखने के संकल्प से ही वे कन्नड़, हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी और उर्दू भाषाओं में माहिर हुए। उनके साहित्य में इन सभी भाषाओं की रसपूर्णता दिखाई पड़ती है।

पिछले पृष्ठों के छायाचित्रों का परिचय

1. 1976 में कर्नाटक विश्वविद्यालय के मानद डाक्टरेट पद स्वीकार करते हुए
2. 1980 में बिल्वार प्रशस्ति (भारतीय भाषा परिषद्, कोलकोता) 'वचनोद्यान' कृति के लिए यह प्रशस्ति पहली बार कर्नाटक राज्य के लिए प्राप्त)
3. पिता श्री कल्लिनाथ शास्त्री
4. धर्मपत्नी श्रीमती गिरिजादेवी के साथ
5. माँ श्रीमती दानम्मा जी
6. 1965-67 कूर्ग के जिलाधिकारी बने
7. 1970-72 बेळगाँव जिलाधिकारी जब बने, मलप्रभा के जल में डूबे प्रदेश में पैदल चलते हुए।
8. 1987 गुलबर्गा में संपन्न कन्नड़ साहित्य परिषद् के 58वाँ अखिल भारत कन्नड़ साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष के रूप में
9. पत्नी, पुत्र-पुत्रियों, बहू दामाद और पोतों-पोतियों के साथ

पुराणिकजी का एक बालगीत

पुराणिकजी की हस्तलिपि बहुत सुन्दर थी। उनके 1990 में हाथ से ही लिखी गयी कविता

''बताश''